राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

मूल्य: ₹15/-

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 8, फरवरी 2024

सच्चाई, ऊर्जा, सकारात्मक विचार

नीतीश कुमार का रिकॉर्ड नौवीं बार

2 डिप्टी और 6 कैबिनेट मंत्रियों के साथ ली बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ

LA CLOVE

la Clove

Cafe & Dining .....

*** We making all Food From Pure Refined Oil & Pure Ghee**

Contact for
Party and Birthday
Seating Capacity
100 Person

follow us on : laclovecafe

laclovecafe@gmail.com www.laclove.com

Hardi Complex, Dakbanglow Crossing, Patna - 800001

Contact For Booking @746203335 / 0612-3507094

Hardi Complex, Dakbanglow Crossing, Patna - 800001

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 08, फरवरी 2024

RNI No. BIHHIN/2007/22741

संपादक
राजीव रंजन

कार्यकारी संपादक
कुमुद रंजन सिंह

विशेष संवाददाता
राकेश कुमार

विज्ञापन प्रबंधक
कल्याणी गुप्ता

छायाकार
के. आर. सिंह

विधि सलाहकार
उपेन्द्र प्रसाद
चंद्र नारायण जायसवाल

साज-सज्जा
मयंक शर्मा

प्रशासनिक कार्यालय
सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर
कंकड़बाग, पटना - 800020
फोन : 7004721818

Email : ubhartabihar@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक रांजीव रंजन द्वारा कृत्या पब्लिकेशन, लंगरटोली, बिहार से मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर, कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।
संपादक: राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटाये जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने है। इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नही है। सामग्री की वापसी की जिम्मेवारी उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वोधिकार सुरक्षित है। कुछ छाया चित्र और लेख इंटरनेट, एजेंसी एवं पत्र-पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त सभी पद अस्थायी एवं अवैतनिक है। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।

संरक्षक

डॉ. संतोष कुमार | अखिलेश कुमार जायसवाल
राजीव रंजन | डॉ. राकेश कुमार

ज्ञानवापी के सच को कब कबूल करेंगे भड़काऊ भाईजान? 09

रवि योग में मनेगी मकर संक्रांति 15

देश का आंतरिक बजट हुआ पेश - गरीबों.. 18

लालकृष्ण आडवाणी और भारत रत्न

राजीव रंजन
संपादक

इस वर्ष कई मायनों में महत्वपूर्ण है जबकि,प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फरबरी को घोषणा की कि भाजपा के कद्दावर नेता लालकृष्ण आडवाणी को भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा। इस वर्ष वह यह सम्मान पाने वाले दूसरे व्यक्ति हैं। भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक और पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न दिया जाएगा। पीएम नरेंद्र मोदी ने इसका ऐलान करते हुए एक्स यानी ट्विटर पर पोस्ट किया। उन्होंने कहा कि वह इस सम्मान का ऐलान करते समय भाग्यशाली महसूस कर रहे हैं। बीजेपी के पितामह कहे जाने वाले इस साल यह सम्मान पाने वाले दूसरे व्यक्ति हैं। उनसे पहले बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर को 26 जनवरी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

भारत रत्न भारत का सबसे बड़ा नागरिक सम्मान

भारत रत्न भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है। यह सम्मान 2 जनवरी 1954 को स्थापित किया गया था। तब से यह सम्मान 'मानव प्रयास के किसी भी क्षेत्र' में योगदान के लिए 26 जनवरी को दिया जाता है। भारत रत्न के लिए सिफारिशें प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति को की जाती हैं। इसमें प्रति वर्ष अधिकतम 3 व्यक्तियों को पुरस्कार देने का प्रावधान है। सम्मानित व्यक्ति को राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक सनद (सर्टिफिकेट) और एक पीपल के पत्ते के आकार का पदक मिलता है। यह सम्मान 13 जुलाई 1977 से 26 जनवरी 1980 तक निलंबित भी किया गया था। मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि लालकृष्ण आडवाणी जी को भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा। मैंने भी उनसे बात की और इस सम्मान से सम्मानित होने पर उन्हें बधाई दी। हमारे समय के सबसे सम्मानित राजनेताओं में से एक, भारत के विकास में उनका योगदान अविस्मरणीय है। उनका जीवन जमीनी स्तर पर काम करने से शुरू होकर हमारे उपप्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा करने तक का है। उन्होंने हमारे गृह मंत्री और सूचना एवं प्रसारण मंत्री के रूप में भी अपनी पहचान बनाई। उनके संसदीय हस्तक्षेप हमेशा अनुकरणीय और समृद्ध अंतर्दृष्टि से भरे रहे हैं।

पीएम नरेंद्र मोदी

किन 3 व्यक्तियों को मिला था पहला भारत रत्न : आजाद भारत के पहले गवर्नर-जनरल और तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री सी राजगोपालाचारी, दूसरे राष्ट्रपति और भारत के पहले उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन और नोबेल पुरस्कार विजेता और भौतिक वैज्ञानिक सीवी रमन को 1954 में सम्मानित किया गया था। उस समय देश के राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद थे। अब तक 50 व्यक्तियों को यह सम्मान मिल चुका है। शुरूआत में यह सिर्फ जीवित व्यक्तियों के लिए था, लेकिन 1955 में नियमों में सुधार किया गया।

भारत रत्न से सम्मानित अब तक के व्यक्तित्वः

लालकृष्ण आडवाणी	2024
कपूर्री ठाकुर	2024
प्रणब मुखर्जी	2019
भूपेन हजारिका	2019
नानाजी देशमुख	2019
मदन मोहन मालवीय	2015
अटल बिहारी वाजपेयी	2015
सचिन तेंदुलकर	2014
सीएनआर राव	2014
पंडित भीमसेन जोशी	2008
लता दीनानाथ मंगेशकर	2001
उस्ताद बिस्मिल्लाह खान	2001
प्रो. अमर्त्य सेन	1999
गोपीनाथ बोरदोलोई	1999
जयप्रकाश नारायण	1999
पंडित रविशंकर	1999
चिदंबरम सुब्रमण्यम	1998
मदुरै शनमुखावदिवु सुब्बुलक्ष्मी	1998
डॉ. अबुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम	1997
अरुणा आसफ अली	1997
गुलजारी लाल नंदा	1997
जहांगीर रतनजी दादाभाई टाटा	1992
मौलाना अबुल कलाम आजाद	1992
सत्यजीत रे	1992
मोरारजी रणछोड़जी देसाई	1991
राजीव गांधी	1991
सरदार वल्लभभाई पटेल	1991
डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर	1990
डॉ. नेल्सन रोलिहलाहला मंडेला	1990
मरुदुर गोपालन रामचंद्रन	1988
खान अब्दुल गफ्फार खान	1987
आचार्य विनोबा भावे	1983
मदर टेरेसा	1980
कुमारस्वामी कामराज	1976
वराहगिरी वेंकट गिरी	1975
इंदिरा गांधी	1971
लाल बहादुर शास्त्री	1966
डॉ. पांडुरंग वामन केन	1963
डॉ. जाकिर हुसैन	1963
डॉ. राजेंद्र प्रसाद	1962
डॉ. बिधान चंद्र रॉय	1961
पुरुषोत्तम दास टंडन	1961
डॉ. धोंडे केशव कर्वे	1958
पं. गोविंद बल्लभ पंत	1957
डॉ. भगवान दास	1955
जवाहरलाल नेहरू	1955
डॉ. मोक्षगुंडम विवेस्वराय	1955
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी	1954
डॉ. चंद्रशेखर वेंकट रमन	1954
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन	1954

नीतीश कुमार का रिकॉर्ड नौवीं बार 2 डिप्टी और 6 कैबिनेट मंत्रियों के साथ ली बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ

राकेश कुमार

जनता दल (यूनाइटेड) के अध्यक्ष नीतीश कुमार ने अपने मुख्यमंत्री कार्यकाल में नौंवी बार और अपने वर्तमान 5 वर्षीय कार्यकाल में तीसरी बार मुख्यमंत्री बन गए हैं। उनके इस कार्यकाल को अभी साढ़े तीन साल पूरे हुए हैं।

नीतीश कुमार ने रविवार को रिकॉर्ड नौवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। 2015 के बाद से राजनीतिक वफादारी में अपने पांचवें बदलाव के तहत वह भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को छोड़ने के सिर्फ 18 महीने बाद वापस लौट आए। उनके साथ भाजपा के दो मंत्रियों और दो उपमुख्यमंत्रियों ने भी शपथ ली। नीतीश कुमार आखिरी बार 2020 के विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा के साथ सत्ता में आए थे, लेकिन फिर उन्होंने अपना नाता तोड़ लिया और अगस्त 2022 में राजद, कांग्रेस और वाम दलों के साथ मिलकर महागठबंधन सरकार बनाई। महागठबंधन सरकार के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देकर नीतीश कुमार आठ मंत्रियों के साथ मुख्यपत्री पद की शपथ ली। बिहार के राज्यपाल राजेंद्र अर्लेकर

ने नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। नीतीश कुमार के साथ सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा ने भी शपथ ग्रहण किया है। सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा को उपमुख्यमंत्री बनाया गया है. वहीं, डॉ. प्रेम कुमार (बीजेपी), विजय कुमार चौधरी (जेडीयू), बिजेंद्र प्रसाद यादव (जेडीयू), श्रवण कुमार (जेडीयू) संतोष कुमार सुमन (हम), सुमित कुमार सिंह (निर्दलीय) मंत्री पद के लिए शपथ ग्रहण किया।

शपथ लेने के बाद नीतीश कुमार ने पत्रकारों से कहा कि वह जल्द ही अपने मंत्रिमंडल का विस्तार करेंगे। मैंने बिहार के हित में भाजपा के साथ फिर से हाथ मिलाने का निर्णय लिया। मैं जहां पहले था वहीं आ गया था और बीच में कहीं चला गया था, लेकिन अब जहां था वहां से मुक्ति मिल गई है। वहां कुछ भी नहीं किया जा रहा था," उन्होंने कहा चूंकि महागठबंधन में चीजें अच्छी तरह से काम नहीं कर रही थीं और राजद की तरफ से कोई काम नहीं किया जा रहा था; सबकी बात सुनने के बाद, मैंने एनडीए सरकार बनाने के लिए इस सरकार को भंग करने का फैसला किया। नीतीश कुमार के मुख्यमंत्री पद की शपथ के साथ बीजेपी के सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा ने बिहार के उपमुख्यमंत्री की शपथ ली। जदयू के बिजेंद्र प्रसाद यादव ने नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली नई सरकार में मंत्री पद की शपथ ली, जदयू के विजय कुमार चौधरी ने नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली नई सरकार में मंत्री पद की शपथ ली, जदयू के श्रवण कुमार ने नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली नई सरकार में मंत्री पद की शपथ ली, हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) के अध्यक्ष डॉ. संतोष कुमार सुमन ने नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली नई सरकार में मंत्री पद की शपथ ली और निर्दलीय विधायक सुमित कुमार सिंह ने नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली नई सरकार में मंत्री पद की शपथ ली। राज्य में नई एनडीए सरकार को अब 128 विधायकों का समर्थन प्राप्त है - भाजपा के 78, जद (यू) के 45, हम (एस) के चार और एक निर्दलीय जबकि विपक्ष में मौजूद महागठबंधन को समर्थन प्राप्त है। 243 सदस्यीय राज्य विधानसभा में राजद के 79, कांग्रेस के 19, वाम दलों के 16 और एआईएमआईएम के एक सहित कुल 115 विधायक हैं। 1974 के छात्र आंदोलन के जरिये राजनीति में कदम रखने वाले नीतीश कुमार 1985 में पहली बार विधायक बने। इसके बाद नीतीश कुमार ने पलटकर नहीं देखा और सियासत में आगे बढ़ते चले गए। लालू प्रसाद यादव 1990 में बिहार के मुख्यमंत्री बने, लेकिन 1994 में नीतीश कुमार ने उनके बढ़ते दबदबे के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। नीतीश और लालू एक साथ जनता दल में थे लेकिन राजनीतिक महत्वकांक्षा में दोनों के रिश्ते एक दूसरे से अलग हो गए। साल 1994 में नीतीश ने जनता दल छोड़कर जार्ज फर्नांडीस के साथ मिलकर समता पार्टी का गठन किया। जद (यू) सुप्रीमो ने 2000 में राज्य के मुख्यमंत्री पद की पहली बार शपथ ली थी, लेकिन उनकी सरकार एक सप्ताह के भीतर ही गिर गयी थी। नीतीश कुमार ने मई 2014 में मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था, लेकिन आठ महीने बाद ही जीतन राम मांझी को हटाकर उन्होंने नवंबर 2015 में मुख्यमंत्री के रूप में वापसी की। उस समय जद(यू), राजद और कांग्रेस गठबंधन ने विधानसभा चुनावों में जीत हासिल की थी। उन्होंने 2017 में भाजपा के साथ नई सरकार बनाने के लिए इस्तीफा दे दिया था। वह 2020 के विधानसभा चुनाव में फिर मुख्यमंत्री बने। इस चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने जीत हासिल की थी, जबकि जदयू ने खराब प्रदर्शन किया था। बिहार विधानसभा में सदस्यों की संख्या 243 है। नीतीश कुमार पहली बार 3 मार्च 2000 को बिहार के सीएम बने थे। हालांकि, बहुमत न जुटा पाने की वजह से उन्हें 10 मार्च 2000 को पद से इस्तीफा देना पड़ा था। बिहार में 2005 में हुए चुनाव में नीतीश बीजेपी के समर्थन से दूसरी बार मुख्यमंत्री पद पर काबिज हुए। 2010 में हुए विधानसभा चुनाव के बाद एक बार फिर नीतीश कुमार बिहार के सीएम बने। लोकसभा चुनाव में भाजपा के खिलाफ पार्टी के खराब प्रदर्शन की वजह से उन्होंने सीएम पद से इस्तीफा दे दिया। इस दौरान उन्होंने जीतनराम मांझी को मुख्यमंत्री पद सौंपा। हालांकि, 2015 में जब पार्टी में अंदरुनी कलह शुरू हुई तो नीतीश ने मांझी को हटाकर एक बार फिर खुद सीएम पद ग्रहण किया। 2015 के विधानसभा चुनाव में महागठबंधन (जदयू, राजद, कांग्रेस और लेफ्ट गठबंधन) की एनडीए के खिलाफ जीत के बाद नीतीश कुमार एक बार फिर बिहार के मुख्यमंत्री बने। डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव के खिलाफ लगे भ्रष्टाचार के आरोपों के बाद नीतीश कुमार ने महागठबंधन से अलग होने का फैसला किया। उन्होंने जुलाई 2017 में ही पद से इस्तीफा दिया और एक बार फिर एनडीए का दामन थाम कर सीएम पद संभाला। 2020 के विधानसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन ने जीत हासिल की। हालांकि, जदयू की सीटें भाजपा के मुकाबले काफी घट गईं। इसके बावजूद नीतीश कुमार ने सीएम पद की शपथ ली। 2022 में एनडीए से अलग होने के एलान के ठीक बाद नीतीश कुमार ने राजद के नेतृत्व वाले महागठबंधन से जुड़ने का एलान कर दिया। इसी के साथ नीतीश कुमार ने आठवीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली और आज यानि 28 जनवरी 2024 को उन्होंने आठवीं बार मुख्यमंत्री पद छोड़ दिया और नीतीश कुमार 9वीं बार बिहार के सीएम पद की शपथ ली।

जलवायु परिवर्तन से गौरैया को खतरा

संजय कुमार

गौरैया की संख्या में कमी या विलुप्ति के पीछे के कारणों में आहार की कमी, बढ़ता आवासीय संकट, कीटनाशक का व्यापक प्रयोग, जीवनशैली में बदलाव, प्रदूषण और मोबाइल फोन टावर से निकलने वाले रेडिएशन को दोषी बताया जाता रहा है, वहीँ एक बड़ा कारण जलवायु परिवर्तन भी है। केवल गौरैया ही नहीं, दूसरे पक्षियों को भी इसने प्रभावित किया है।

जलवायु परिवर्तन की चपेट में आज लगभग पूरी दुनिया है। इसने सिर्फ इंसानों को ही अपना निशाना नहीं बनाया है। बल्कि, इसका असर जीवों, पेड़-पौधों, और इकोसिस्टम पर भी पड़ रहा है। रिसर्च के मुताबिक पिछले 50 वर्षों के दौरान जलवायु परिवर्तन ने दुनिया भर में पक्षियों को प्रभावित किया है। इसकी वजह से पक्षियों के बच्चों की जन्मदर में गिरावट आई है।

गौरैया पर भी जलवायु परिवर्तन का असर देखने को मिलता है। गौरैया का प्रजनन काल अप्रैल से अगस्त तक अमूमन होता है। जलवायु परिवर्तन की वहज से प्रजनन काल में आगे पीछे भी देखा जा रहा है। बल्कि कई सालों से गौरैया के बच्चे बिहार के कई इलाकों में कम दिखें तो कही नहीं। अमूमन बरसात आते ही झुण्ड में नए बच्चे युवा होकर दिखने लगते हैं। हमारी गौरैया और इनवारमेंटल वारियर्स के सदस्यों ने बिहार के कई इलाकों में सर्वे के दौरान नवम्बर माह में गौरैया के बच्चे को देखा। गौरैया मौसम में उतार चढ़ाव यानि जलवायु परिवर्तन का असर साफ दिखा था। भीषण गरमी और सर्दी ने उन पर कहर बरपाया है, कई इलाकों से यह गायब या कम हो गयी। मौसम में प्रतिकूल मौसम होने से ये अचानक अपने अधिवास से गायब हो जाती है। जैसे ही मौसम अनुकूल हो जाता है ये फिर अचानक से अपने पुराने अधिवास पर आ जाती है। इसके पीछे का कारण उन्हें मालूम होता है कि वहां उनके दाना-पानी और आवास की व्यवस्था है। हालाँकि लौटने वाली गौरैयों की संख्या में कमी देखी जाती है। जाहिर है वे पलायन कर गयी या हादसे का शिकार हो गयी। गौरैया ज्यादा गरमी या ठंड बर्दास्त नहीं कर पाती है। गौरैया संरक्षण में लगे लोगों को अक्सर मौसम की मार से घायल गौरैया मिलती रहती है, जिसे उपचार के बाद उड़ा दिया जाता है इअक मामलों में उनकी मौत हो जाती है। हर मौसम में जहाँ का जलवायु गौरैया के लिए अनुकूल होता है देर सबेर रहने जरुर आ जाती है। जर्नल प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (पनास) में प्रकाशित रिपोर्ट में शोधकताओं ने दुनिया भर में पक्षियों की 104 प्रजातियों पर पिछले 50 वर्षों तक अध्ययन किया है। नतीजे में बताया गया कि जलवायु में आता बदलाव पक्षियों की प्रजनन दर में कमी की वजह बन रहा है। आशंका भी जताई गयी कि प्रजनन दर में आती यह कमी बड़े और प्रवासी पक्षियों को कहीं ज्यादा प्रभावित करेंगे। रिसर्च के मुताबिक अध्ययन किए गए 56.7 फीसदी पक्षियों की प्रजनन दर में गिरावट दर्ज की गई थी, वजह बढ़ता तापमान था।बात गौरैया कि तो ऑर्निथोलॉजिकल एप्लिकेशन में एक नए अध्ययन से पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन के कारण कुछ गौरैया प्रजातियाँ सदी के भीतर विलुप्त हो जाएँगी। साइनस न्यूज टुडे की 19 अक्तूबर 2021 की रिपोर्ट को देखें तो दुनिया में जैव विविधता (इङ्क्ष्ि१३३८) बेहद तेजी से खत्म हो रही है। हम अपने आसपास के कई जीवों को याद करें, तो पाएंगे कि जो कभी बहुतायत में थे लेकिन वे अब नहीं के बराबर दिखते हैं। इनमें घरेलू गौरैया चिड़िया भी शामिल हैं।

नन्ही गौरैया हमारे घर आंगन, खेत-खलिहान में चहचहाती थी लेकिन अब नहीं के बारबर दिखती हैं। घर आँगन एवं खेत-खलिहान में बदलाव हुआ और उसे हमने बाहर कर दिया। रहने-खाने और आवास से उसे दूर किया। मौसम की मार से खपरैल का घर और आँगन-बगीचे में लगे पेड़ पौधे उसे बचाते थे लेकिन अब नहीं। दरअसल, ऐसा केवल हमारे यहां नहीं बल्कि पूरी दुनिया में हो रहा है। एक रिपोर्टे के मुताबिक धरती पर जीवों की 90 लाख प्रजातियां और इनमें से 10 लाख प्रजातियों के इसी सदी में विलुप्त हो जाने का खतरा है। अक्तूबर 2021 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के 15वें जैव विविधता सम्मेलन (सीओपी15) में इन बातों पर चिंता जताई गई थी। तो वहीँ इंटरनेशनल यूनियन फॉर कॉनसरवेशन ऑफ नेचर(क्व्रउठ) - ने 2008 में गौरैया सहित कई पक्षियों को रेड लिस्ट में डाला था। इसके पीछे जलवायु परिवर्तन के कई कारकों को उत्प्रेरक के बताया गया, जिसने दुनिया के आठ में से एक पक्षी को विलुप्त होने के खतरे में डाल दिया। आईयूसीएन के अनुसार पक्षी के ऊपर जलवायु परिवर्तन के कारण भारी दबाव में हैं।

अगर बात करें कि जलवायु परिवर्तन आखिर है क्या? तो इससे जानना जरुरी है। जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य तापमान और मौसम के पैटर्न में दीर्घकालिक बदलाव से है। सूर्य की गतिविधि में बदलाव या बड़े ज्वालामुखी विस्फोटों के कारण ऐसे बदलाव प्राकृतिक हो सकते हैं। लेकिन इसमें 1800 के दशक से, मानव गतिविधियाँ भी जलवायु परिवर्तन में शामिल हो गयी हैं । मानवीय विकास ने तस्वीर बदली है । मुख्य रूप से कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन के जलने के कारण। जीवाश्म ईंधन जलाने से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन उत्पन्न होता है जो पृथ्वी के चारों ओर लिपटे कंबल की तरह काम करता है, जो सूर्य की गर्मी को घेरे में लेता है और तापमान बढ़ाता है। जलवायु परिवर्तन का कारण बनने वाली मुख्य ग्रीनहाउस गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन शामिल हैं। उदाहरण के लिए, ये कार चलाने के लिए गैसोलीन या किसी इमारत को गर्म करने के लिए कोयले का उपयोग करने से आते हैं। भूमि साफ करने और जंगलों को काटने से भी कार्बन डाइऑक्साइड निकल सकता है। कृषि, तेल और गैस संचालन मीथेन उत्सर्जन के प्रमुख स्रोत हैं। ऊर्जा, उद्योग, परिवहन, भवन, कृषि और भूमि उपयोग ग्रीनहाउस गैसों का कारण बनने वाले मुख्य क्षेत्रों में से हैं।

जलवायु वैज्ञानिकों की माने तो, पिछले 200 वर्षों में लगभग सभी वैश्विक तापन के लिए मनुष्य जिम्मेदार हैं। मानवीय गतिविधियाँ ग्रीनहाउस गैसों का कारण बन रही हैं जो कम से कम पिछले दो हजार वर्षों में किसी भी समय की तुलना में दुनिया को तेजी से गर्म कर रही हैं। जलवायु परिवर्तन के परिणामों में अब अन्य के अलावा, तीव्र सूखा, पानी की कमी, भीषण आग, समुद्र का बढ़ता स्तर, बाढ़, ध्रुवीय बर्फ का पिघलना, विनाशकारी तूफान और घटती जैव विविधता शामिल हैं। हम विभिन्न तरीकों से जलवायु परिवर्तन का अनुभव कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार मनुष्य को जागरूक होना होगा। वरना गौरैया सहित अन्य पशु पक्षि जिस तरह से विलुप्ति की ओर बढ़ रहे है वैसे ही के दिन इन्सान का भी नंबर आएगा क्योंकि जलवायु परिवर्तन की जद में वह भी है।

हे राम

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

'हे राम' महात्मा गांधी के दिल्ली स्थित समाधि पर लिखा हुआ है। यह समाधि यमुना नदी के पवित्र तट के पश्चिमी किनारे पर स्थित है जिसे राजघाट के नाम से जाना जाता है। यहीं महात्मा गांधी का अंतिम संस्कार किया गया था। ऐसा माना जाता है कि महात्मा गांधी को गोली लगने के बाद 'हे राम' कहते हुए गिरे थे और यह शब्द उनके पास चल रही उनकी पोती आभा ने सुनी थी। तुषार गांधी के अनुसार महात्मा गांधी के हत्या के समय आभा और मनु साथ में थी और आभा की गोद में ही महात्मा गांधी (बापू) ने अंतिम सांस ली थी। आभा के अनुसार बापू ने ह्यहे रामह्ल कहा था और न सिर्फ एक बार, बल्कि बापू ह्यहे रामह्ल कुछ समय तक दोहराते रहे थे।

महात्मा गांधी (बापू) का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गांधी है। इनका जन्म पश्चिमी भारत में वर्तमान गुजरात के तटीय नगर पोरबंदर नामक स्थान पर 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था। उनके पिता का नाम करमचन्द गांधी और माता का नाम पुतलीबाई है। बापू के पिता सनातन धर्म की पंसारी जाति के थे और उनकी माता परनामी वैश्य समुदाय की थी।

जब दिल्ली में दंगा हुआ था तब बापू बंगाल से दिल्ली आ गए और दंगा को शांत करने के लिए उपवास शुरू कर दिया। हिन्दू और मुसलमान ने मिलकर बापू को शांति का विश्वास दिलाते हुए उनका उपवास तुड़वाया, उसके बाद नई दिल्ली की हरिजन बस्ती में रहने लगे। 30 जनवरी, 1948 की शाम बापू जब बिड़ला मंदिर में प्रार्थना के लिए जा रहे थे, तब नाथूराम गोडसे ने उन्हें गोली मारी थी। गोली लगने पर उन्होंने दोनों हाथ जोड़ लिए और ह्यहे रामह्ल कहते हुए इस संसार से विदा हो गए। आज नई दिल्ली के राज घाट में बापू के स्मारक पर देवनागरी में ह्लहे राम" लिखा हुआ है। ऐसा व्यापक तौर पर माना जाता है कि जब गांधी जी को गोली मारी गई तब उनके मुख से निकलने वाले ये अंतिम शब्द थे। हालांकि इस कथन पर विवाद भी उठे हैं। बापू की हत्या के प्रत्यक्षदर्शी होने का दावा करने वाले उनके निजी सचिव वेंकिता कल्याणम की राय इससे अलग है। उनका कहना है कि मरते समय बापू ने 'हे राम' नहीं कहा था। वास्तव में जब नाथूराम गोडसे ने गोली दागी थी तो उन्होंने कोई भी शब्द नहीं कहा था। कल्याणम का यह भी दावा है कि 30 जनवरी 1948 को नई दिल्ली के तीन मूर्ति इलाके में महात्मा गांधी को गोली मारी गई तो उस वक्त वह उनके ठीक पीछे मौजूद थे।

पत्रकार दयाशंकर शुक्ल सागर की पुस्तक 'महात्मा गांधीः ब्रह्मचर्य के प्रयोग' में बापू के अंतिम शब्द 'हे राम' पर बहस की गई है। पत्रकार दयाशंकर शुक्ल सागर ने इस किताब में दावा किया है कि 30 जनवरी, 1948 को गोली लगने के बाद महात्मा गांधी के मुख से निकलने वाले अंतिम शब्द 'हे राम' नहीं था। इस किताब में कहा गया है कि 30 जनवरी, 1948 को जब नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी को गोली मारी थी, तो बापू के सबसे करीब मनु गांधी थी। उन्होंने बापू का अंतिम शब्द 'हे रा...' सुनाई दिया था। दूसरी तरफ गांधीवादी निर्मला देशपांडे का इस बात का विरोध करते हुए कहना था कि उस शाम बापू जब बिड़ला मंदिर में प्रार्थना के लिए जा रहे थे तब उनके दोनों ओर आभा और मनु थी। आभा बापू की पौत्री और मनु उनकी पौत्रवधु थी। निर्मला गांधी का कहना है कि जब बापू को गोली लगी थी तब उनके हाथ आभा और मनु के कंधों पर थे। गोली लगने के बाद वे आभा की ओर गिरे थे। आभा ने स्पष्ट सुना था कि बापू के मुंह से आखिरी बार 'हे राम' ही निकला था। पंजाब के युवा हिन्दी उपन्यासकार डॉक टर अजय शर्मा ने अपने उपन्यास 'भगवा' में दावा किया था कि राष्ट्रपिता की हत्या करने के लिए जब नाथूराम गोडसे ने उन्हें गोली मारी थी तो उन्होंने 'हे राम' नहीं, 'हाय राम' कहा था। उपन्यास के लेखक शर्मा ने यह भी कहते हैं कि 'गांधीजी राम और रहीम दोनों की पूजा करते थे। ऐसे में मरते वक्त रहीम का नाम कहां रह गया? यह एक ज्वलंत प्रश्न है। हे राम कहने वाली बात भी पूरी तरह प्रासंगिक नहीं है और अगर ऐसा कहा गया था तो यह साबित होता है कि वह धर्मनिरपेक्ष नहीं थे।

उस दिन ऑल इंडिया रेडियो के रिपोर्टर केडी मदान भी घटना स्थल पर मौजूद थे। बापू की प्रार्थना सभा को 'कवर' करने मदान बिड़ला भवन रोज जाते थे। मदान ने कुछ साल पहले बताया था कि मैंने तो 'हे राम' कहते नहीं सुना था। साथ ही मदान ने यह भी कहा कि 'पर यह एक लेजेंड (किंवदंती) है, इसे लेजेंड ही रहने दिया जाए।

बापू के प्रपौत्र तुषार गांधी के अनुसार, कल्याणम की बात पूरी तरह गलत है। गांधी हत्याकांड मुकदमे के एक गवाह सरदार गुरू वचन सिंह ने 30 अगस्त 1948 को अदालत को बताया था कि गोली लगने के बाद बापू ने 'हे राम' कहा था। तुषार गांधी के अनुसार, दरअसल जो लोग बापू को हिंदू विरोधी साबित करना चाहते थे, उन्हीं का यह प्रचार है कि गांधी ने 'हे राम' नहीं कहा। गांधी जी के हत्यारे ने तो इसी आधार पर उनकी हत्या की थी कि गांधी हिन्दू विरोधी थे। यदि 'हे राम' वाली बात साबित हो जाती है तो हत्यारे का वह तर्क ध्वस्त हो जाएगा। तुषार गांधी के अनुसार कल्याणम को तो गांधी हत्याकांड का गवाह तक नहीं बनाया गया था। घटनास्थल पर मौजूद अंग्रेजी अखबार ह्यहिंदूह्ल के संवाददाता के अनुसार, गोलियां लगने के 15 मिनट बाद तक बापू जीवित रहे थे। भगवा में यह कहा गया, 'गांधी जी ने मरने से पहले हे राम कहा था। लेकिन ऐसा नहीं है, क्योंकि जब किसी को चोट लगती है तो वह हे नहीं हाय कहता है। जब किसी के शरीर में गोली लगती है तो व्यक्ति दर्द से चीखता है और ऐसे में उसके मुंह से हे नहीं हाय निकलता है। हे राम निकलना तो बहुत ही मुश्किल है। उपन्यास में लेखक और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता के बीच की चर्चा दौरान का यह प्रसंग है. संघ के कार्यकर्ता के हवाले से इसमें यह भी लिखा गया है कि कुछ सियासी लोगों ने इसे महिमा मंडित करते हुए कह दिया कि गांधीजी के मुंह से ह्यहे रामह्ल निकला था।

इसी आइस किताब के मुताबिक, मनु के अवचेतन मन में ये शब्द आना स्वाभाविक था, क्योंकि नोआखली में महात्मा गांधी ने कहा था कि "यदि मैं रोग से मरूँ तो मान लेना कि मैं इस पृथ्वी पर दंभी और रावण जैसा राक्षस था। मैं राम नाम रटते हुए जाऊं तो ही मुझे सच्चा ब्रह्मचारी, सच्चा महात्मा मानना।" शायद मनु के मन में यही बात गूंज रही होगी। इसी आधार पर यह मान लिया गया कि उनके आखिरी शब्द 'हे राम' ही थे। गांधी ने मरते वक्त 'हे राम' कहा हो या नहीं लेकिन उन्होंने देश में रामराज्य स्थापित होने का सपना जरूर देखा था। बापू का जीवन सादगी, ब्रह्मचर्य, विश्वास, अहिंसा और सत्य को समर्पित था।

ज्ञानवापी के सच को कब कबूल करेंगे भड़काऊ भाईजान ?

कोर्ट के आदेश पर ज्ञानवापी के व्यास तहखाने में लंबे अंतराल के बाद पूजा-अर्चना शुरू हो गयी है। यह अलग बात है कि मुगल आक्रांताओं को अपना आदर्श मानने वाले कुछ तथाकथित मुठ्ठीभर लोग कोर्ट के फैसले पर ही सवाल उठाकर अपनी सियायी रोटी सेकने में जुट गए है। जबकि ज्ञानवापी में जो फैसले दिए गए है, वे सबूत के आधार पर है। कानून के तहत ही फैसला दिया गया है। सेवा निवृत्त जज डॉ अजय विश्वेश की मानें तो कोर्ट ने समय देकर बाकायदा दोनों पक्षों को सुनने के बाद फैसला दिया है। कोर्ट भावनाओं के बजाय साक्ष्यों पर फैसला देता है। यदि किसी को आपत्ति है तो साक्ष्यों के साथ उपरी अदालतों में भी अपनी बात रख सकता। ऐसे में बड़ा सवाल तो यही है फैसला पक्ष में नहीं तो कब तक जुडिसियली का अपमान करते रहेंगे धर्म ठेकेदार? ओवैसी जैसे नेताओं को बताना पड़ेगा कि अदालते सरिया नहीं कानून से चलती है। दुसरा बड़ा सवाल आखिर कब तक भीड़तंत्र व एकजुटता का खौफ दिखाकर फैसले बदलवाते रहेंगे कट्टरपंथी? सबूत, दलील कमजोर, फिर आरोपों पर जोर क्यों? तीसरा बड़ा सवाल यह है कि ज्ञानवापी का सच कबूल क्यों नहीं कर रहा मुस्लिम पक्ष? क्या अदालत पर सवाल उठाकर सच को झूठला सकता है मुस्लिम पक्ष? इससे बड़ा सवाल तो यह है कि जब साबित हो चुका है ज्ञानवापी मंदिर आस्था ही नहीं ऐतिहासिक सत्य भी है तो झुठलाने की हिमाकत क्यों की जा रही है और ज्ञानवापी मंदिर नहीं मस्जिद है तो साबित करो, भीड़तंत्र को उकसाने की क्या जरुरत है? उन्हें समझना होगा अब हम नए भारत में जी रहे है, जहां वोटबैंक का दबाव नहीं बनाया जा सकता

सुरेश गांधी

फिरहाल, इलाहबाद हाईकोर्ट ने ज्ञानवापी के व्यास तहखाने में शुरू हुई पूजा पर साक्ष्यों व दलीलों के बाद कोई भी रोक लगाने से इनकार कर दिया है. हाईकोर्ट ने कहा है कि मुस्लिम पक्ष ने अपनी याचिका में 17 जनवरी के मूल आदेश को चुनौती नहीं दी. मामले पर अगली सुनवाई 6 फरवरी को होगी। मतलब साफ है वाराणसी जिला जज डॉ अजय विश्वेश के आदेश तथ्य व साक्ष्यों के साथ कानूनी दायरों में है। बावजूद इसके कुछ मुस्लिम धर्मगुरुओं व भड़काऊ भाईजान न सिर्फ पूरे मामले में देश की सरकार को घेरने की कोशिश में जुटे है, बल्कि भीड़ के सहारे दबाव बनाने की कोशिश कर रहे है। ये उनके भड़काऊ तकरीरों का ही कमाल था कि कल तक जहां 100 से 150 लोग जुमे की नमाज पढ़ते थे, इकठ्ठे 2400 से अधिक लोग पहुंच गए। मस्जिद में जगह कम पड़ गयी और बैरंग वापस लौटना पड़ा। इसके अलावा विरोध में दुकाने बंद की गयी। ऐसे में बड़ा सवाल तो यही है भीड़तंत्र के सहारे आदेश को पलटवाना चाहते है भड़काऊ भाईजान? हद तो तब हो गयी जब उन्होंने लोगों के बीच धर्म की खाई चैड़ी करने का आरोप लगाते हुए ज्ञानवापी पर हक को लेकर सड़कों पर लड़ाई होगी, का उेलान करने से भी बाज नहीं आएं। यह अलग बात है कि उनकी कोई सुनता नहीं। हलांकि इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि ज्ञानवापी मामले में कोर्ट के फैसले के बाद कुछ मुस्लिम समाज के लोगों में काफी गुस्सा है. इसी दौरान मलिक मोतासिम खां ने भी अपनी बात रखते हुए कहा परेशान हैं. सफोकेशन महसूस कर रहे हैं. इसके पीछे उनका तर्क है 1991 वर्शिप एक्ट। लेकिन 93 पर उनके मुंह पर खामोशी छायी हुई है। तथ्यों व साक्ष्यों पर यकीन करें तो 1993 से पहले व्यासजी के तहखाने में नियमित पूजा होती थी, बाबरी मस्जिद के हवाले से लॉ एंड आर्डर की दुहाई देकर तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने न सिर्फ पूजा बिना किसी आदेश के रुकवा दी, बल्कि लोहे के मोटे खंभों की चहारदीवारी से पूरे ज्ञानवापी की बैरिकेडिंग करा दी। इन्हीं तथ्यों को हिन्दू पक्ष के अधिवक्ता विष्णु शंकर जैन ने आधार बनाया व फैसला अपने पक्ष में किया। आखिर क्या वजह है कि ज्ञानवापी का सच कबूल नहीं कर पा रहा मुस्लिम पक्ष? आखिर कब तक कुतर्कों से भड़काते रहेंगे भाईजान? उन्हें समझना होगा कि अब वोटबैंक के दबाव वाली न सरकार है और ना ही वो भारत। अब भारत बदल रहा है। आदेश पहले भी होते थे लेकिन उसे समय दबाव वाली सरकारें थी। अब सरकारी आदेश का पालन करने वाली सरकारें है, इसलिए कंप्लायंट तुरंत हो रहा है। अधिवक्ता विष्णु जैन यूं ही सवाल नहीं खड़ा कर रहे है, उनके पास तथ्य व साक्ष्य दोनों है। इतिहास बताता है कि आक्रांताओं ने मंदिरों को तोड़ा है। किस तरह पाकिस्तान, ईरान, अफगानिस्तान सहित अन्य मुस्लिम मुल्कों में सैकड़ों मंदिरों को तोड़कर उनका अस्तित्व मिटाया गया है।

दरअसल, ज्ञानवापी सनातनी लोगों के दिल पर अंकित एक ऐसा शब्द है, जिसकी महिमा का वर्णन न केवल सनातन ग्रंथों में है बल्कि कई प्रतिष्ठित अंग्रेजी इतिहासकारो द्वारा काशी पर किए गए शोधकार्यों और उनकी पुस्तकों से भी इसकी पुष्टि होती है. दैवीय ग्रंथों और आध्यात्मिक खोज की कहानियों से भरे सनातन ग्रंथों में अक्सर ज्ञानवापी को एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल के रूप में उद्धृत किया गया है. इसी तरह वाराणसी का अध्ययन करने वाले अंग्रेजी इतिहासकार भी इन ग्रंथों से सहमति जताते हैं. ईबी हैवेल और एडविन ग्रीव्स जैसे लेखकों ने ब्राह्मण के कुएं के किनारे बैठकर तीर्थयात्रियों को पानी पिलाने का आकर्षक विवरण प्रस्तुत किया है. ज्ञानवापी का उल्लेख सनातन ग्रंथों में भी मिलता है. स्कंद पुराण के काशी खंड में कहा गया है कि ज्ञानवापी का निर्माण स्वयं भगवान शिव ने किया था. लिंग पुराण में 6

प्रमुख वापियों यानि कुओं का जिक्र है. पहली वापी ज्येष्ठा वापी है. दूसरी वापी है ज्ञानवापी; इसे ज्ञानवापी नाम इसलिए दिया गया क्योंकि यह भगवान शिव के आशीर्वाद से बनाई गई थी और इसका पानी पीने से भक्त प्रबुद्ध हो जाते हैं और सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हैं. तीसरी वापी का नाम कर्कोटक वापी है, जो नागकुआं के नाम से प्रसिद्ध है. चैथी वापी का नाम भद्रवापी है. पांचवी वापी शंखचूड़ वापी है और छठी वापी को सिद्ध वापी के नाम से जाना जाता है.

बनारस-द सेक्रेड सिटी पुस्तक में भी दर्ज है ज्ञानवापी की सच्चाई

ई.बी. हेवेल ने अपनी पुस्तक बनारस-द सेक्रेड सिटी में ज्ञानवापी की उत्पत्ति के संबंध में दो सिद्धांतों का जिक्र किया है. उनके अनुसार, इस कुएं से जुड़ी किंवदंती यह है कि एक समय की बात है जब बनारस सूखे से पीड़ित था. बारह वर्षों तक बारिश नहीं हुई थी जिसकी वजह से नगर की भयंकर दुर्दशा हो गई. अंततः एक ऋषि, जो महान हिंदू संतों में से एक थे, ने शिव का त्रिशूल पकड़कर उसे इसी स्थान पर धरती में गाड़ दिया. तुरंत पानी का एक झरना फूट पड़ा, जो पूरे शहर की परेशानी दूर करने के लिए पर्याप्त था. चमत्कार के बारे में सुनकर शिव ने कुएं में अपना निवास स्थान बना लिया और आज भी वहीं हैं. एक और किंवदंती के अनुसार जब विश्वेश्वर के पुराने मंदिर को औरंगजेब ने नष्ट कर दिया था तो एक पुजारी ने मूर्ति ले ली और उस कुएं में फेंक दिया. दोनों अंग्रेजी लेखकों ने उस ब्राह्मण का अच्छे से विवरण दिया है, जो कुएं के पास बैठकर तीर्थयात्रियों को पानी देता था. दोनों लेखकों ने अन्य छोटे मंदिरों और गणेश की बड़ी आकृतियों के बारे में भी लिखा है. ई.बी. हैवेल के मुताबिक ह्लज्ञान-कूप यानि ज्ञान का कुआं, स्वर्ण मंदिर और औरंगजेब की मस्जिद के बीच बड़े चतुर्भुज में स्थित है, जो पुराने विश्वेश्वर मंदिर के स्थान पर बनाया गया है. यह एक सुंदर सारासेनिक पिलर से ढका हुआ है, जिसे 1828 में ग्वालियर के दौलत राव सिंधधिया की विधवा ने बनवाया था. पास में विशाल पत्थर से बना हुआ बैल (नंदी) हैं. तीर्थयात्रियों की भीड़ को हमेशा देखने और अध्ययन करने के लिए बहुत कुछ मिलता है. एक ब्राह्मण प्रत्येक तीर्थयात्री को एक घूंट पानी पिलाने के लिए करछुल (डोई) लेकर कुएं के पास बैठता है. कोलोनेड एक पसंदीदा विश्राम स्थल है, और वहां आप अक्सर उन तीर्थयात्रियों को देख सकते हैं जो अपने संरक्षक देवता की तस्वीर और प्रतीकों को अपने साथ ले जाते हैं. फर्श पर एक छोटे से मंदिर की व्यवस्था करते हैं और विधि-विधान से पूजा करते हैं.ह्ल एडविन ग्रेव्स अपनी पुस्तक ह्लकाशी द सिटी इलस्ट्रियसह्लमें लिखते हैं, ह्लज्ञान बापी-एक ढलानदार पगडंडी वाली गली से उतरते हुए पहली इमारत जो नजर में आती है वह औरंगजेब की मस्जिद है, जो मस्लिमों द्वारा ध्वस्त किए गए विश्वनाथ के पुराने मंदिर की जगह बनाई गई है. यह एक अच्छी इमारत है, हालांकि इसका बहुत अधिक उपयोग नहीं किया गया है और यह हमेशा से ही हिंदुओं की आंखों की किरकिरी रही है क्योंकि यह उस स्थान के बिल्कुल केंद्र में है जिसे वे विशेष रूप से पवित्र भूमि मानते हैं. इसी जगह पर साल 1809 में झगड़ा हुआ था जो विनाशकारी साबित हुआ. मस्जिद के पीछे और इसके आगे के भाग में संभवतः पुराने विश्वनाथ मंदिर के कुछ टूटे हुए अवशेष हैं.ह्ल ह्लमस्जिद के पूर्व में एक सादा लेकिन अच्छी तरह से निर्मित स्तंभ स्थित है, जो ज्ञान बापी, ज्ञान के कुएं को कवर करता है. यह कुआं पत्थरों की दीवार से घिरा हुआ है, जिस पर एक ब्राह्मण बैठता है. उपासक कुएं पर आते हैं, फूल चढ़ाते हैं, और ब्राह्मण के हाथ से कुएं से एक छोटा चम्मच पानी प्राप्त करते हैं और इसे वे अपने माथे और आंखों पर लगाते हैं, और उनमें से कुछ थोड़ा पीते हैं, और फिर खुश होकर चले जाते हैं. स्तंभ के उत्तर में एक बैल की एक विशाल आकृति है, जो महादेव की नंदी है. इस बैल को बहुत सम्मान के साथ माना जाता है, इस बैल के नजदीक गौरी शंकर यानि पार्वती और महादेव की आकृतियों वाला एक मंदिर है.इसी खुली जगह में एक या दो अन्य छोटे मंदिर और गणेश की एक बड़ी आकृति है, जिसे ज्ञान के कुएं के पास उपयुक्त रूप से रखा

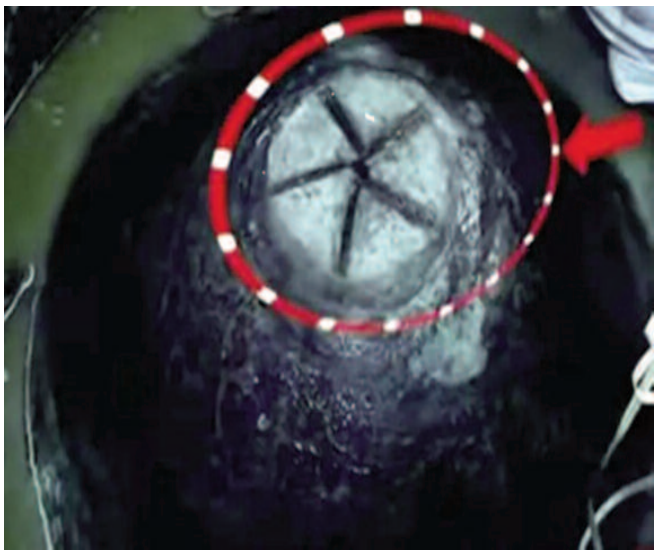

गया है क्योंकि गणेश बुद्धि के देवता हैं.ह्लखास बात है कि हिन्दू पक्ष के अधिवक्ता ने इसे अपनी दलीलों में कोड भी किया है।

जब औरंगजेब ने दिया मंदिर तोड़ने का फरमान

मंदिर के तोड़े जाने का एक महत्वपूर्ण प्रमाण ह्यमा-असीर-ए-आलमगीरीह्ल नाम की पुस्तक भी है। यह पुस्तक औरंगजेब के दरबारी लेखक सकी मुस्तईद खान ने 1710 में लिखी थी। इसी किताब में उस शाही फरमान का उल्लेख है, जिसमें औरंगजेब ने विश्वनाथ मंदिर को तोड़ने के लिए जारी किया था। फारसी में जारी शाही फरमान-1 में कहा गया है कि ज्ञानवापी वह जगह है जहां काशी में शिव का आदिस्थान माना गया है। जहां शिव स्वयं अविमुक्तेश्वर लिंग रूप में इस तरह से विराजमान हैं कि आक्रांताओं द्वारा कई बार की कोशिशों के बावजूद भी उसे हिलाया तक नहीं जा सका जबकि कोशिशें मुहम्मद गोरी, सुल्तान महमूद शाह, शाहजहां सहित कई मुगल आक्रांताओं ने की। बाद में 1669 में औरंगजेब के समय जब मूल मंदिर को तोड़कर मंडपम के ऊपर गुम्बद-मेहराब बनाकर उसे मस्जिद के रूप में तामीर करा दिया गया तो भी शिवलिंग को अपनी जगह से हिला पाने की कोशिशें नाकाम ही रहीं। यहीं पर वजूखाना बनवा दिया गया था जहां नमाजी हाथ-पैर धोते हैं जो उसी तरफ सिर किए बैठे नंदी से करीब 40 फिट की दूरी पर है। इसलिए भी इसके मुख्य मंदिर होने के प्रमाण सामने आए हैं। शिवलिंग को क्षति न पहुंचाए जाने का जिक्र प्रायः मुगलकालीन सभी इतिहासकारों ने करते हुए लिखा है कि काशी के प्रधान शिवालय का ध्वंस करने के बाद जब शिवलिंग को अपने साथ ले जाने की कोशिश हुई तो तमाम कोशिशों के बाद भी शिवलिंग अपने मूल स्थान से हिला भी नहीं। अंततः शिवलिंग छोड़ दिया गया और अंत में सारा खजाना लूटकर चले गए। बता दें कि पुराणों में शिव और पार्वती के आदि स्थान काशी विश्वनाथ को प्रथम लिंग माना गया है। इसका उल्लेख महाभारत में भी किया गया है। वहीं औरंगजेब से पहले जाएँ तो 11वीं सदी तक यह मंदिर अपने मूल रूप में बना रहा, सबसे पहले इस मंदिर के टूटने का उल्लेख 1034 में मिलता है। इसके बाद 1194 में मोहम्मद गोरी ने इसे लूटने के बाद तोड़ा। काशी वासियों ने इसे उस समय अपने हिसाब से बनाया लेकिन वर्ष 1447 में एक बार फिर इसे जौनपुर के सुल्तान महमूद शाह ने तुड़वा दिया। फिर वर्ष 1585 में राजा टोडरमल की सहायता से पंडित नारायण भट्ट ने इसे बनवाया था लेकिन वर्ष 1632 में शाहजहाँ ने एक बार फिर काशी विश्वनाथ मंदिर को तुड़वाने के लिए मुगल सेना की एक टुकड़ी भेज दी। लेकिन हिन्दुओं के प्रतिरोध के कारण मुगलों की सेना अपने मकसद में कामयाब न हो पाई। हालाँकि, इस संघर्ष में काशी के 63 जीवंत मंदिर नष्ट हो गए। इसके बाद सबसे बड़ा विध्वंश औरंगजेब ने करवाया जो काशी के माथे पर सबसे बड़े कलंक के रूप में आज भी विद्यमान है। साकी मुस्तइद खाँ की किताब ह्यमासिर -ए-आलमगीरीह्ल के मुताबिक 16 जिलकदा हिजरी- 1079 यानी 18 अप्रैल 1669 को एक फरमान जारी कर औरंगजेब ने मंदिर तोड़ने का आदेश दिया था। साथ ही यहाँ के ब्राह्मणों-पुरोहितों, विद्वानों को मुसलमान बनाने का आदेश भी पारित किया गया था। मंदिर से औरंगजेब के गुस्से की एक वजह यह थी यह परिसर संस्कृत शिक्षा बड़ा केन्द्र था और दाराशिकोह यहाँ संस्कृत पढ़ता था। और इस बार विश्वनाथ मंदिर की महज एक दीवार को छोड़कर जो आज भी मौजूद है और बिना किसी सर्वे के भी साफ दिखाई देती है, समूचा मंदिर संकुल ध्वस्त कर दिया गया। मुगल इतिहासकारों के अनुसार ही 15 रब- उल-आखरि यानी 2 सितम्बर 1669 को बादशाह औरंगजेब को खबर दी गई कि मंदिर न सिर्फ.गिरा दिया है, बल्कि उसकी जगह मस्जिद की तामीर भी करा दी गई है। इसे औरंगजेब के समय अंजुमन इंतजामिया जामा मस्जिद नाम दिया गया था लेकिन बाद में ज्ञानवापी कूप के कारण इसका नाम भी ज्ञानवापी मस्जिद ही रहा। वहीं मंदिर के खंडहरों पर ही बना वह मस्जिद बाहर से ही स्पष्ट दीखता है जिसके लिए न किसी पुरातात्विक सर्वे की जरुरत है न किसी खुदाई की। लेकिन अभी सर्वे के बाद मिले शिवलिंग और दूसरे प्रमाणों की वजह से हिन्दुओं की स्थिति और भी मजबूत

महिलाओं का साथ डिजीटलीकरण से हो रहा निरन्तर गांव-गांव का विकास

गीता कौर

डिजिटल सखी परियोजना

बायफ लाइवलीहुड, बायफ डेवलपमेंट रिसर्च सेंटर फाउंडेशन के साथ जुड़ा हुआ है यह एक ग्रामीण क्षेत्र के उन्नयन में स्थित एक प्रतिष्ठित संस्था है जिसकी स्थापना महात्मा गांधी के शिष्य डा. मणि भाई देसाई जी के ने की थी। बाएफ खाद्य सुरक्षा, सुरक्षित पेयजल, अच्छे स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, डिजिटल और वित्तीय साक्षरता और स्वच्छ वातावरण के साथ आत्मनिर्भर ग्रामीण समाज के निर्माण व्यापक दृष्टिकोण का समर्थन करता है।

डिजिटल सखी परियोजना

ग्रामीण भारत में डिजिटल और वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने पर विशेष ध्यान देने के लिए, यह सुनिश्चित करने के लिए, सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ गांव के अंतिम छोर तक पहुंचे, डिजिटल सखी परियोजना का शुभारंभ किया गया। 2016 की नोटबंदी के पश्चात गांव के लोगों में डिजिटल पेमेंट के बारे में जागरूकता ना होने के कारण अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ा इन्हीं सब परेशानियों को खत्म करने एवं जन-जन तक डिजिटल और वित्तीय समावेश को सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल सखी परियोजना का शुभारंभ किया गया। यह परियोजना एल&टी फाइनेंस

सर्विसेज के द्वारा वित्त पोषित है। डिजिटल सखी परियोजना के माध्यम से अब तक नौ राज्यों में लगभग 11000 लोगो तक डिजिटल पेमेंट को पहुंचाया जा चुका है। वर्तमान में बायफ लाइवलीहुड द्वारा यह परियोजना मई 2023 से उत्तर प्रदेश के गोरखपुर और बिहार राज्य के सुपौल जिले में 5-5 ब्लाक क्रियांवित की जा रही है। जिसमे बिहार के सुपौल जिले के विकास खंड छातापुर, सरायगढ, राघोपुर, त्रिवेणीगंज और सुपौल शामिल है। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद में पांच विकास खंड पिपराइच, सरदार नगर, गोला, उरवा एवं सहजनवा के है। वर्तमान में कुल 200 गांव में परियोजना शुरू की गई जिसके अंतर्गत प्रत्येक गांव में एक-एक डिजिटल सखी किया गया है जिसके माध्यम से गांव गांव में डिजिटल और वित्तीय जागरूकता को बढ़ाने, ग्रामीण महिला सूक्ष्म उद्यमियों को सशक्त बनाना और उनकी आजीविका में सुधार करना एवं नई सामाजिक सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता के स्तर में वृद्धि लाने के कार्य किए जा रहे हैं। डिजिटल सखियों का कम्युनिकेशन एवं लीडरशिप कौशल हेतु प्रशिक्षण गोरखपुर में किया गया आयोजित। एल एंड टी फाइनेंस और बायफ लाइवलीहुड्स द्वारा संचालित डिजीटल सखी कार्यक्रम के अन्तर्गत दो दिवसीय कम्युनिकेशन एवं लीडरशिप कौशल हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्राम पंचायत भवन सरैया , सरदार नगर गोरखपुर में आयोजित किया गया जिसमें ब्लॉक पिपराइच और सरदार नगर की कुल 40 डिजीटल सखी सहित ज्वाइंट प्रोग्राम कोर्डिनेटर गीता कौर, संतोष कुमार, अखिलेश कुमार एम आई एस और अखिलेश्वर कुमार प्रोजेक्ट मैनेज उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम डिजीटल सखी ने प्रार्थना के साथ की। संतोष कुमार जी द्वारा उपास्थित प्रतिभागी का स्वागत करते हुए ट्रेनिंग के उद्देश्य को साझा किया गया। गीता कौर द्वारा परियोजना का परिचय दिया।

इसके पश्चात ट्रैनर द्वारा विभिन्न गतिविधियों और खेल के माध्यम से क्षमता विकास के कार्य को सीखाया गया।

लीडर की विशेषताएं

निर्णय लेने की क्षमता
आत्म विश्वास और दृढ़ निश्चय
धैर्यवान है और गंभीरता
समय का प्रबंधन
लक्ष्य हेतु दूरदर्शिता

महाराष्ट्र से आए श्री राम कुमार बन्डे द्वारा डिजिटल सखी को खेल खेल के माध्यम से क्षमता विकास के कार्य बताए साथ ही अपने कार्यों को अच्छे और प्रभावशाली बनाने के तरीकों के बारे में भी जानकारी दी। रस्सी के खेल से सीखा अपनी सीमा आगे बढ़कर ही किया जा सकता है उद्देश्यों को हासिल । ब्लॉक स्तरीय समारोह में डिजिटल सखियों को दिया गया,बैग,साड़ी किट व टैबलेट ।

गोरखपुर जिले के पिपराईच

ग्रामीण महिलाओं को डिजिटली रूप में वित्तिय जानकारी एवं समूहों से लगातार बैठक करके उनकी वितीय योजनाओं ,पेंशन एवं अन्य रोजमर्रा की जानकारी को बढ़ाने के लिये गोरखपुर के पिपिराइच ब्लॉक के 20 गांव में संस्था द्वारा कई कार्यक्रमो का संचालन किया जा रहा है, इसी क्रम में नगर के एक सभागार में सोमवार को बीस ग्राम से आये डिजिटल सखी एवं प्रधानों की उपस्तिथि में कार्यक्रम से जुड़े डिजिटल सखियो को बैग,साड़ी,टैबलेट,एवं कार्यक्रम की किट वितरण किया गया, इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नगर परिषद के चेयरमैन संजय मधेशिया ने शिरकत करते हुये कहा कि आज महिलाओं को आगे बढ़ने के लिये सरकार की ओर से कई योजनाएं चलाई जा रही है, एक जानकार महिला पुरे परिवार व गांव को जागरूक कर सकती है।

आज महिलाओं को जागरूक रहना समय की मांग है

इस अवसर पर संतोष कुमार, यशोदा देवी, हरिकेश प्रसाद एवम अन्य ग्राम प्रधान व आंगनबाडी कार्यकर्ताओ के द्वारा कार्यक्रम की सराहना की गई साथ ही हमेशा साथ देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर उपस्तिथ 20 डिजिटल साखियों को डिजिटल किट,साड़ी एवं टैबलेट दिया गया। इस अवसर पर बायफ संस्था के कार्यक्रम क्षेत्रीय समन्वयक सुश्री गीता कौर ने संस्था द्वारा जिले के 100 गांवों में चलाए जा रहे डिजिटल सखी कार्यक्रम की जानकारी देते हुये बताया कि चयनित गांव को एक आदर्श गांव के रूप में विकसित करने में ग्राम प्रधान व सरकारी योजनाओं को जमीनी स्तर तक लाने के साथ ही महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है,जिसमें पिपराईच के 20 गांव शामिल है, कार्यक्रम का संचालन आशीष पाठक व पूर्णिमा सिंह ने किया।

इस अवसर पर उपस्तिथ 20 डिजिटल साखियों को डिजिटल किट,साड़ी एवं टैबलेट दिया गया। इस अवसर पर बायफ संस्था के कार्यक्रम क्षेत्रीय समन्वयक सुश्री गीता कौर ने संस्था द्वारा जिले के 100 गांवों में चलाए जा रहे डिजिटल सखी कार्यक्रम की जानकारी देते हुये बताया कि चयनित गांव को एक आदर्श गांव के रूप में विकसित करने में ग्राम प्रधान व सरकारी योजनाओं को जमीनी स्तर तक लाने के साथ ही महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है,जिसमें पिपराईच के 20 गांव शामिल है, जबकि डिजिटल सखी मीना देवी, मनीषा देवी, अनामिका गुप्ता, मेनिका पासवान, अनीता यादव, रंजन सिंह, पूजा मिश्रा, मीना देवी, अंजनी विश्वकर्मा, हेमा , पूजा मिश्रा, कंचन, रंजना यादव, खुशबू चौरसिया, मेनका सिंह, आशा, शीला देवी, सीमा गौड़, सुनीता देवी ने अपना अनुभव साझा किया।

इतिहास में दर्ज हो गए ज्ञानवापी पर आदेश देने वाले जज डॉ. अजय कृष्ण विश्वेश

कोर्ट भावना नहीं, तथ्यो व साक्ष्यों पर देता है फैसला: एके विश्वेश

ज्ञानवापी में कैसे मिली पूजा करने की इजाजत, फैसला सुनाने वाले जज ए के विश्वेश ने बताएं वजह

सुरेश गांधी

वाराणसी। ज्ञानवापी में जो फैसले दिए गए है, वे सबूत व तथ्यों के आधार पर है। कानून के तहत ही फैसला दिया गया है। कोर्ट ने समय देकर बाकायदा दोनों पक्षों को सुनने के बाद फैसला दिया है। कोर्ट भावनाओं के बजाय साक्ष्यों व तथ्यों पर फैसला देता है। यदि किसी को आपत्ति है तो साक्ष्यों के साथ उपरी अदालतों में भी अपनी बात रख सकता। यह बातें सेवा निवृत्त हो चुके वाराणसी जिला जज डॉ. अजय कृष्ण विश्वेश ने कहीं। ज्ञानवापी पर दो बड़े फैसले सुनाने वाले वाराणसी जिला अदालत के जज रहे जस्टिस (रिटायर्ड) एके विश्वेश ने सीनियर रिपोर्टर सुरेश गांधी से एक खास मुलाकात में ने बताया कि ह्लउन्होंने ज्ञानवापी मामले में साक्ष्यों के आधार पर फैसला दिया है. अपनी न्यायिक सेवा के आखिरी दिन ज्ञानवापी मामले में फैसला देकर अजय कृष्ण विश्वेश ने अपना नाम इतिहास में दर्ज करा लिया। जिला जज के आदेश से ही 839 पन्ने की सर्वे रिपोर्ट 25 जनवरी 2024 को पक्षकारों को मिली और सार्वजनिक हुई।

34 सालों का अनुभव साझा करते हुए डॉ. अजय कृष्ण विश्वेश ने बताया कि कोर्ट भावनाओं पर नहीं बल्कि सबूतों के आधार पर फैसले करता है. ज्ञानवापी परिसर के एएसआई सर्वे का आदेश भी इन्होंने दिया था. इस सर्वे में बताया गया है कि मस्जिद परिसर में ऐसी कई चीजें मिली हैं जिनसे साबित होता है कि ये पहले मंदिर था. बता दें, जज डॉ अजय कृष्ण विश्वेश ने सेवा निवृत्त होने से पहले अपने ऐतिहासिक फैसले में व्यास तहखाने (दक्षिणी तहखाना) में स्थित मूर्तियों की पूजा, राग-भोग करने की इजाजत दी थी. उनका फैसला आते ही करीब 31 साल बाद देर रात व्यास के आंशिक साफ-सफाई के साथ तहखाने में दीपक जलाने के साथ पूजा की गई. यही आदेश देने के बाद वो रिटायर हो गए थे. कोर्ट का आदेश आने के बाद रातोरात तहखाने से बैरीकेडिंग हटा दी गईं. इसके बाद तड़के ही पूजा के लिए लोग जुटने लगे. इसके बाद से मामला सुप्रीम कोर्ट गया. सुप्रीम कोर्ट ने मस्जिद कमेटी को हाईकोर्ट

जाने को कहा. इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भी कमेटी को कोई राहत नहीं दी.

गौरतलब है कि जिला जज रहते हुए अजय कृष्ण विश्वेश ने ही ज्ञानवापी परिसर के एएसआई सर्वे का आदेश दिया था। बनारस में उन्होंने 21 अगस्त, 2022 को कार्यभार ग्रहण किया था। कुल 34 सालों की न्यायिक सेवा के बाद वह 31 जनवरी, 2024 को रिटायर हो गए। यहां जिक्र करना जरुरी है कि डॉ अजय कृष्ण विश्वेश हरिद्वार के रहने वाले हैं. यूपी के कई अहम न्यायिक पदों पर तैनात रहे. ज्ञानवापी केस की सुनवाई करने के साथ ही उनका नाम एक बार फिर से चर्चा में आ गया. 7 जनवरी, 1964 को जन्में जस्टिस विश्वेश बचपन से मेधावी रहे हैं. कानून पर उनकी गहरी पकड़ है. उन्होंने 1984 में एलएलबी और 1986 में एलएलएम किया. 20 जून, 1990 को उनकी न्यायिक सेवा की शुरूआत हुई. पहली पोस्टिंग उत्तराखंड के कोटद्वार में मुंसिफ मजिस्ट्रेट के पर हुई. वह चार जिलों बदायूं, सीतापुर, बुलंदशहर और वाराणसी के जिला जज रह चुके हैं. 1991 में उनका ट्रांसफर सहारनपुर हो गया। इसके बाद वह देहरादून के न्यायिक मजिस्ट्रेट बने। खास यह है कि व्यास के तहखाने में फैसला सुनाए जाने के बाद अदालत के बाहर जहां हिंदू पक्ष के लोग अपने वकीलों के साथ जीत की खुशी मना रहे थे वहीं अंदर जिला जज अजय कृष्ण विश्वेश का विदाई समारोह भी चल रहा था। अपने 34 सालों के अनुभव के आधार पर केस की सुनावाई न्यायिक तरीके से करते रहे हैं। न्यायिक सेवा में कदम रखने से पहले वह राजस्थान में लेक्चरर भी रह चुके हैं। राजस्थान एजुकेशन सर्विसेज की लेक्चररशिप छोड़कर उन्होंने ज्यूडिशियल सर्विसेज में कदम रखा था। उनके पास ज्यूडिशियल सर्विसेज के सोलह ट्रेनिंग प्रोग्राम में शामिल होने का भी लंबा अनुभव है। इसके अलावा डेप्युटेशन पर हाईकोर्ट के स्पेशल विजिलेंस अफसर के रूप में भी डॉ विश्वेश कार्य कर चुके हैं। न्यायिक सेवा में रहते हुए अपने कार्य में खुद को बेहतर बनाए रखने के लिए उन्होंने कई ट्रेनिंग कोर्स भी किया है और पिछले मार्च में ही ये भोपाल स्थित नेशनल जुडिशियल एकैडमी से लीडरशिप कोर्स करके आए हैं। एडीजे पद पर उनकी पहली नियुक्ति 2006 में इलाहाबाद में हुई।

हार्डवर्क है सफलता का राज

जिला जज ज्ञानवापी जैसे महत्वपूर्ण प्रकरण से संबंधित प्रार्थना पत्रों में देर रात तक आदेश देने के लिए जाने जाते रहे। जिला जज डॉ अजय कृष्ण विश्वेश की कार्यशैली ऐसी रही कि सभी समस्याओं का समाधान वह हमेशा मुस्करा कर ही करते रहे। युवा अधिवक्ताओं को काम सीखने के लिए वह लगातार प्रोत्साहित करते रहे और कभी किसी के दबाव में नहीं दिखे। वह कामकाज के दौरान सख्त इतने रहे कि किसी के मोबाइल की घंटी कोर्ट रूम में बज जाती थी तो उसे जमा करा लेते थे। उन्होंने ही ज्ञानवापी की मीडिया रिपोर्टिंग पर रोक भी लगाई थी। जिला जज को बीते वर्ष अगस्त माह में उस समय दुख भी सहन करना पड़ा था, जब उनकी मां केला देवी का बीमारी के कारण काशी में निधन हो गया था।

आज बेटियां सभी क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही हैं: राज्यपाल

राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने पटना वीमेंस कॉलेज के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज बेटियाँ उन सभी क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही हैं जहाँ वे पहले जाने के लिए सोचती भी नहीं थी। ऐसा वातावरण अनेक लोगों के प्रयास से बना है। उन्होंने कहा कि समान नागरिक संहिता से सबसे अधिक लाभ हमारी बेटियों को होगा। राज्यपाल ने कहा कि हमें बिहार के समृद्ध इतिहास और परंपराओं से प्रेरणा लेकर आज के वर्तमान को संवारना चाहिए। उन्होंने महाविद्यालय की छात्राओं से कहा कि युवाओं को भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहभागी बनना चाहिए। इसके लिए उनका पूरा जीवन देश और समाज के लिए समर्पित होना चाहिए। हमारी बेटियों को नौकरी की तलाश करने के बजाए रोजगार प्रदाता बनना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 इसमें उपयोगी है। यह नीति हमें नया विचार देती है और देश के लिए काम करने को प्रेरित करती है। उन्होंने कहा कि युवाओं के विचारों, निष्ठा, आचरण एवं समर्पण से ही भारत एक विकसित राष्ट्र बनेगा। राज्यपाल ने पटना वीमेंस कॉलेज की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसने अपने 83 वर्षों की यात्रा में अनेक उपलब्धियाँ हासिल की हैं और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के क्रियान्वयन में भी तत्परता दिखाई है। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। राज्यपाल ने उल्लेखनीय प्रदर्शन हेतु अनेक छात्राओं को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम को पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ के॰सी॰ सिन्हा, बिहार लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री अतुल प्रसाद ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर पटना वीमेंस कॉलेज की प्रधानाचार्या डॉ॰ सिस्टर एम॰ रश्मि ए॰सी॰ एवं अन्य शिक्षिकाएँ, छात्राएँ एवं उनके अभिभावक तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

भारत का अनोखा मंदिर - जहां एक खंभा हवा में लटका है

आज तक कोई नहीं समझ पाया रहस्य

सुरभि सिन्हा, पटना

भारत को अगर मंदिरों का देश कहें तो गलत नहीं होगा, क्योंकि यहां इतने मंदिर हैं कि आप गिनते-गिनते थक जाएंगे, लेकिन गिन नहीं पाएंगे। यहां ऐसे कई मंदिर हैं, जो अपनी भव्यता और अनोखी मान्यताओं के लिए जाने जाते हैं। ऐसा ही एक अनोखा मंदिर आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले में भी है। इस मंदिर की सबसे खास और रहस्यमयी बात ये है कि इसका एक खंभा हवा में लटका हुआ है, लेकिन इसका रहस्य आज तक कोई नहीं जान पाया है। इस मंदिर का नाम है लेपाक्षी मंदिर, जिसे 'हैंगिंग पिलर टेंपल' के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर में कुल 70 खंभे हैं, जिसमें से एक खंभे का जमीन से जुड़ाव नहीं है। वो रहस्यमयी तरीके से हवा में लटका हुआ है।

लेपाक्षी मंदिर के अनोखे खंभे आकाश स्तंभ के नाम से भी जाने जाते हैं। इसमें एक खंभा जमीन से करीब आधा इंच ऊपर उठा हुआ है। ऐसी मान्यता है कि खंभे के नीचे से कुछ निकालने से घर में सुख-समृद्धि आती है। यही वजह है कि यहां आने वाले लोग खंभे के नीचे से कपड़ा निकालते हैं। ताकि उनके घर में सुख-समृद्धि बनी रहे।

किदवंती है कि मंदिर का खंभा पहले जमीन से जुड़ा हुआ था, लेकिन एक ब्रिटिश इंजीनियर ने यह जानने के लिए कि यह मंदिर पिलर पर कैसे टिका हुआ हुआ है, इसको हिला दिया, तब से ये खंभा हवा में ही झूल रहा है।

इस मंदिर में इष्टदेव भगवान शिव के रुद्र रूप वीरभद्र हैं। वीरभद्र महाराज दक्ष के यज्ञ के बाद अस्तित्व में आए थे। यहां भगवान शिव के अवतार "वीरभद्र" की प्रतिमा और वहीं माता "वीरन्ना" मंदिर में विराजमान है। दोनों प्रतिमा इतनी जागृत है की सीधे रुप से उसे स्थिर आंख रखकर देखना संभव नहीं हो पाता है इसके अलावा यहां भगवान शिव के अन्य रूप अर्धनारीश्वर, कंकाल मूर्ति, दक्षिणमूर्ति और त्रिपुरातकेश्वर भी मौजूद हैं। यहां विराजमान माता को भद्रकाली कहा जाता है। लेपाक्षी मंदिर परिसर में भगवान हनुमान के एक पैर का पदचिन्ह है, जिसमें पानी भरा रहता है, यह पानी उस पदचिन्ह वाली गढ्ढे में कहां से आता है आज तक किसी को यह पता नहीं है, लोग श्रद्धा से उस पानी को अपने सर पर लगाते हैं। कुमार्सेलम की पहाडियों पर बना ये मंदिर कछुए की आकार में बना है। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण विरुपन्ना और विरन्ना नाम के दो भाइयों ने 16वीं सदी में कराया था, जो विजयनगर के राजा के यहां काम करते थे। हालांकि पौराणिक मान्यता है कि इस मंदिर को ऋषि अगस्त्य ने बनवाया था।

मंदिर परिसर में ही पहाड़ को काटकर विशालकाय शिवलिंग स्थापित है जिसके ऊपर विशालकाय शिवलिंग के ऊपर सात फन वाले नाग देवता अपना फन फैलाए हुए हैं। इस शिवलिंग के संबंध में कहा जाता है कि लेपाक्षी मंदिर निर्माण के समय जब एक मजदूर के बच्चे को भूख लगा तो उसकी मां खाना बनाने लगी, जबतक मां खाना बाना रही थी, खाना बनाने तक की अवधि में उसका भूखा बेटा ने इस विशालकाय नाग एवं शिवलिंग का निर्माण पुरा कर लिया था। मान्यताओं के अनुसार, इस मंदिर का जिक्र रामायण में भी मिलता है और ये वही जगह है, जहां जटायु रावण से युद्ध करने के बाद जख्मी होकर गिर गये थे और राम को रावण का पता बताया था।

देश का आंतरिक बजट हुआ पेश - गरीबों महिलाओं, युवाओं और किसानों की आवश्यकताएं को सर्वोच्च प्राथमिकता

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

चुनावी वर्ष होने के कारण देश का आम बजट 2024-25 के पूर्ण बजट की जगह अंतरिम बजट संसद में पेश हुई। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का यह पहला अंतरिम बजट है। सरकार ने बजट पेश करते हुए परंपरा को भी बनाए रखा। दरअसल, अंतरिम बजट पेश होने के कारण हमेशा की तरह कोई बड़े लोकलुभावन वादे नहीं किए गए और सरकार ने अपनी आगे की सोच को दशार्या है। अप्रैल-मई में लोकसभा चुनाव होने वाले हैं, इसलिए यह अंतरिम बजट है। इस बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने चार जातियों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। संसद में बजट के दौरान उन्होंने कहा कि गरीबों, महिलाओं, युवाओं और किसानों की आवश्यकताएं, आकांक्षाएं और कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कोई लोक लुभावना घोषणा नहीं की, लेकिन अपनी दस वर्षों में सरकार की उपलब्धियों का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया है कि बताया कि 10 वर्षों के कार्यकाल में करीब 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। 78 लाख स्ट्रीट वेंडर को मदद दी गई है। मत्स्य संपदा योजना से 55 लाख लोगों को नया रोजगार मिला है। पीएम आवास योजना के तहत तीन करोड़ घर बनाए गए हैं। सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए बहुत सारे कार्य किए गए हैं। पीएम आवास योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में 70% से अधिक घरों की मालकिन महिलाएं हैं। मुद्रा योजना के अंतर्गत महिलाओं को 30 करोड़ रुपये से अधिक ऋण दिए गए हैं। करीब एक करोड़ महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उन- हें उनके अधिकार दिलाने के लिए तीन तलाक को गैरकानूनी घोषित किया है। महिलाओं को संसद में आरक्षण देने के लिए कानून लाया गया है। चार करोड़ किसानों को पीएम फसल बीमा योजना का लाभ दिया जा रहा है। पीएम किसान योजना से 11.8 करोड़ लोगों को आर्थिक मदद मिली है। आम लोगों के जीवन में बदलाव लाने का प्रयास किया जा रहा है। युवाओं को सशक्त बनाने पर भी काम किया है। 3000 नए आईटीआई खोले गए हैं। 54 लाख युवाओं को कौशल योजना के तहत प्रशिक्षित किया गया है। एशियाई खेलों में भारत के युवाओं को कामयाबी मिली है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि जुलाई में होने वाली बजट में भारत को विकसित देश बनाने के लिए विस्तृत रूप रेखा पेश की जायेगी। उन्होंने बताया कि सुधार, प्रदर्शन और बदलाव सिद्धांत के आधार पर सरकार अगली पीढ़ी के सुधारों को आगे बढ़ाएगी और क्रियान्वयन के लिए राज्यों के साथ सहमति बनाएगी। उन्होंने कहा कि अब सरकार का लक्ष्य तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने का है। इस योजना से महिलाओं के जीवन में बदलाव और आत्मनिर्भरता आई है। सरकार सर्वाइकल कैंसर के टीकाकरण पर ध्यान देगी। मातृ और शिशु देखरेख की योजनाओं को व्यापक कार्यक्रम के अंतर्गत लागू किया जाएगा। 9-14 साल की लड़कियों के टीकाकरण पर ध्यान दिया जाएगा। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत अगले 5 वर्षों में ग्रामीण इलाकों में दो करोड़ घर बनाए जाएंगे। सरकार मध्‍ यमवर्गीय लोगों के लिए भी आवासीय योजना लाएगी। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में बताया कि प्रत्येक महीने लोगों को 300 यूनिट मुफ्त बिजली मिलेगी। मुफ्त बिजली का लाभ एक करोड़ परिवारों को मिलेगा।

बता दें कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना का एलान किया था। योजना के तहत एक करोड़ घरों में सोलर पैनल लगाया जाएगा। वित्त मंत्री ने कहा कि कोविड के चुनौती के बावजूद केन्द्र सरकार ने गरीबों को घर मुहैया कराया। सरकार 3 करोड़ घर के लक्ष्य को बनाने के करीब हैं। अगले पांच साल में 2 करोड़ घर और बनाए जाएंगे। वंदेभारत स्तर के 40 हजार रेल डिब्बे बनाए जाएंगे। वित्त मंत्री ने कहा कि ज्यादा भीड़ वाले रेल मार्गों के लिए 3 अलग कॉरिडोर बनाएं जाएंगे। किराए के मकानों, झुग्गियों या अनधिकृत कॉलोनियों में रहने वाले लोगों को अपना घर खरीदने के लिए सरकार नई हाउसिंग स्कीम लाएगी।

लोगों का मत है कि आंतरिक बजट से उधम वर्ग को मिल सकती है राहत, रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे, रेलवे यातायात सुगम होगा,गरीब, महिला, युवा और किसान को होगा फायदा, बाजार में पैसे की गतिशीलता बढ़ेगी, धार्मिक पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा, बजट का लक्ष्य लोगों की क्षमता बढ़ाना, आम आदमी को साधने की कोशिश, देश का इन्फ्रास्ट्रक्चर बेहतर बनेगा, बजट में बढ़ता भारत दिखता है, राहत देने वाला बजट, निरंतरता और विश्वास का बजट, विकासन्मुख बजट है। वहीं कुछ लोगों का मत है कि आंतरिक बजट बेहद निराशाजनक है, बजट में इस बार कुछ खास नहीं है, महिलाओं के लिए उम्मीद से कम, एक्साइज ड्यूटी में फेरबदल नहीं, आयकर स्लैब को बढ़ाना चाहिए था।

टैक्सपेयर्स के लिए राहत का कोई ऐलान 7 लाख रुपये तक आय पर कोई टैक्स नहीं यथावत। जबकि घरेलू कंपनियों के लिए कॉरपोरेट आयकर दर 30 प्रतिशत से घटाकर 22 प्रतिशत की गई है।

खींचतान में फंसा मराठा आरक्षण

सरकार सकारात्मक, जरांगे-भुजबल आमने-सामने

धनगर, मुस्लिम भी मैदान में

बिपेंद्र कुमार सिंह, मुंबई

यूं तो मराठा आरक्षण की मांग करीब चार दशक पुरानी है। कई बार आंदोलन हुए या आंदोलन की सुगबुगाहट हुई लेकिन किसी तरह तत्कालीन सरकारों ने आंदोलन को शांत करा दिया। साल 1982 में पहली बार बड़ा आंदोलन हुआ था। अन्नासाहब पाटिल ने आर्थिक स्थिति के आधार पर मराठों को आरक्षण दिये जाने की मांग को लेकर आंदोलन किया था। जब सरकार ने उनकी मांगों को नहीं माना तो उन्होंने खुद को गोली मार ली थी। इसके काफी वर्षों बाद 2017 में पूरे महाराष्ट्र में ह्यएक मराठा-लाख मराठाह्ल के ओजस्वी नारे के साथ शांतिपूर्ण-अनुशासित मूक आंदोलन किया गया था। साल 2021 में संभाजीराजे छत्रपति के नेतृत्व में कोल्हापुर में मराठा क्रांति मूकआंदोलन किया गया था। इस आंदोलन पर राज्य सरकार ने ध्यान दिया और संभाजीराजे सहित मराठा समन्वयक को चर्चा के लिए बुलाया था। उनकी बात मान भी ली गई लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने मराठाओं को 16 प्रतिशत आरक्षण देने का राज्य सरकार का फैसला रद्द कर दिया था।

आखिरकार मौजूदा वक्त में एक नए नेता मनोज जरांगे का उदय हुआ। 16 जून 2021 को मनोज जरांगे ने जालना जिले के अंतरवाली सराटी में आमरण उपवास शुरू किया था। सरकार के आश्वासन से आंदोलन थम गया किंतु 29 अगस्त 2023 को फिर से शुरू हुए आंदोलन ने 1 सितंबर को यहां उग्र रूप ले लिया जिसमें प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच एक हिंसक झड़प हुई। इसके बाद, 30 अक्टूबर को मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की मांग को लेकर आंदोलन बेहद ही हिंसक और आगजनी से भर गया था। मराठवाड़ा क्षेत्र में कई सारे नेताओं के घरों में आग लगा दी गई और कई के दफ्तरों को आग के हवाले कर दिया गया। दिसंबर के शीतसत्र के समापन दिन 19 दिसंबर 2023 को विधानमंडल में प्रदेश के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने घोषणा की कि राज्य पिछड़ा वर्ग का पुनर्गठन करके आयोग को मराठा समाज को आरक्षण देने के लिए नए सिरे से एक माह में इम्पेरिकल डाटा इकट्ठा करने को कहा गया है। आवश्यकता पड़ी तो राज्य सरकार फरवरी 2024 में मराठा आंदोलन पर एक विशेष सत्र आयोजित करेगी। लेकिन सरकार की उदासीनता को देखते हुए मराठा नेता जरांगे ने 20 जनवरी 24 को फिर मुंबई कूच की घोषणा कर दी। आखिरकार 29 जनवरी 24 को शिंदे सरकार सकारात्मक हुई और मराठा आरक्षण आंदोलन के नेता मनोज जरांगे के माथे पर गुलाल लगाकर मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने सभी मांगें पूरी करने का लिखित आश्वासन दे दिया। लेकिन कहते हैं न ढाक के तीन पात यानी कुछ भी करो स्थिति फिर वही वाली है क्योंकि जरांगे अभी भी क्रमिक भूख हड़ताल को जारी रखे हैं और आगे भी आंदोलन करने के लिए तैयार हैं। वहीं दूसरी तरफ राज्य मंत्रिमंडल में शामिल मंत्री छगन भुजबल जो अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) समाज का नेतृत्व करते हैं, वह अपनी सरकार से नाराज हैं। वह कहते हैं कि मराठा आरक्षण के नाम पर कुछ भी हो रहा है, वह भीड़तंत्र के सामने आत्मसमर्पण से अधिक कुछ नहीं है। उनका मानना है कि मराठा आरक्षण के लिए अध्यादेश ओबीसी और वीजेएनटी (विमुक्त जाति और घुमंतू जनजातियों) के अधिकारों पर अतिक्रमण है और जिसके लिए पिछले दरवाजे से प्रवेश करने के वास्ते लाखों हलफनामे जमा किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने घोषणा की थी कि जब तक मराठों को आरक्षण नहीं मिल जाता, तब तक उन्हें ओबीसी को प्राप्त सभी लाभ मिलते रहेंगे। भुजबल ने कहा, ह्यह्यइससे ओबीसी के बीच यह सोच बन रही है कि वे अपना आरक्षण गंवा बैठे हैं। मैं मराठों को अलग से आरक्षण का समर्थन करता हूं लेकिन मौजूदा ओबीसी आरक्षण साझा करने के पक्ष में नहीं हूं। मराठा आरक्षण का मुद्दा सुलझा नहीं है कि इसी बीच धनगर समाज और मुस्लिम भी आरक्षण के लिए बैचेन हो रहे हैं। उन्हें भी यह प्रेरणा कुछ हद तक मराठा आरक्षण आंदोलन से ही मिल रही है। धनगर आरक्षण कृति समिति के नेतृत्व में धनगर समाज अनुसूचित जनजाति श्रेणी के तहत आरक्षण की मांग कर रहा है। राज्य की आबादी में धनगरों की हिस्सेदारी नौ प्रतिशत तक है। अब तस्वीर यह है कि एक तरफ जहां मराठा समाज में खुशी की लहर है तो वहीं ओबीसी समाज लामबंद होने को तैयार है। सरकार मराठा आंदोलन के प्रति सकारात्मक तो है लेकिन वह आरक्षण को लेकर पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। उसके पास आश्वासनों के अलावा कुछ नहीं है। हालांकि मुख्यमंत्री शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस बार-बार कह रहे हैं कि ओबीसी समाज के आरक्षण को प्रभावित किए बिना वे मराठा समाज को आरक्षण देंगे। अब राजनीतिक दृष्टि से चुनाव समीप हैं और कोई भी दल जन आकांक्षाओं को नजरअंदाज करने की स्थिति में नहीं है। जिनमें सामाजिक स्तर पर उठती आरक्षण जैसी कोई मांग बड़े वर्ग को प्रभावित करती है। चुनाव के पास आते ही हर समाज भी दबाव बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। किंतु राज्य सरकारें कभी जल्दबाजी और कभी दिखावे के लिए अपने निर्णय कर रही हैं, जिससे आरक्षण की जटिल समस्या अधिक उलझती ही जा रही है। दो समाज में वैमनस्य पैदा होने की स्थितियां तक पैदा होने लगी हैं। ऐसे में राज्य सरकारों से परिपक्व निर्णय की अपेक्षा है। अदालत हो या फिर समाज, यदि सरकार के निर्णय से असहमत होगा तो राजनीतिक और सामाजिक दोनों रूप में स्थितियां अच्छी नहीं होंगी।

पत्रकार बीमा योजना हुआ महंगा आंचलिक एवं कस्बाई पत्रकारों की पहुंच से हुआ दूर

जियाउद्दीन/नालंदा

पत्रकार बीमा योजना हुआ महंगा आंचलिक एवम कस्बाई पत्रकारों की पहुंच से होता चला गया दूर। समय के साथ पत्रकार वीमा मँहगा होता गया, पत्रकार खामोशी से बीमा के राशी देते गए। सरकार को लगा पत्रकार नीतीश कुमार के राज्य में अमीर हो गये। सुशासन बाबू और बिहार मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का शासन 18 साल से बिहार में चल रहा है।बिहार में बड़े बडे पत्रकार और बहुत बड़ा तबका जो अंचल में रहकर पत्रकारीता करते हैं। जिनमें खास कर प्रिंट मीडिया में न के बराबर उन्हें परिश्रमिक मिलता है, जिससे उनका खुदका गुजारा नहीं होता है, किसी तरह परिश्रम कर अपने और अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं। बिहार सरकार ने लंबे समय के बाद पत्रकार बीमा लागू किया जो सिर्फ चिकित्सा के लिए दिया जाता है और हजार से शुरू होकर प्रत्येक वर्ष दुगने राशी के बढ़ोतरी की जाती रही है। अब इस वर्ष ये राशि लगभग (छ हजार पांच सौ से ऊपर) सात हजार के करीब प्रतिवर्ष के लिए कर दी गई है। जो अखबार /मीडिया दफ्तर से बेचारे उन पत्रकारों से पूछिए जिनकी आमदनी नगण्य है वो कैसे बीमा की राशि जुगाड़ कर भविष्य को सुरक्षित करने का प्रयास करते है। सरकार अगर इसी राशी में एक्सीडेंटल और आकस्मिक मृत्यु एवम गरीब पत्रकारों के बेटी के विवाह सहायता एवम आवास का व्यवस्था कर देती तो एक बात होती,नेशनल जर्नलिस्ट एसोसिएशन सहित कई पत्रकार संगठन इस मुद्दे पर अपना ज्ञापन कई बार सरकार को दे चुकी है,

जिस तरह से निबंधित श्रमिकों को मात्र 50 रुपये में 4 परिवार को 16 तरह का लाभ सरकार दे रही है उसी तरह से पत्रकारों को भी लाभ मिलना चाहिए।जिससे अंचल एवम कसवाई पत्रकारों का भला हो जाता।

स्वामी ज्योतिर्मयानंद सरस्वती जी के 93वां जन्मोत्सव सह आध्यात्मिक उत्सव का हुआ समापन

जितेन्द्र कुमार सिन्हा

आध्यात्मिक उत्सव का आयोजन स्वामी ज्योतिर्मयानंद सरस्वती के जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया था। यह आयोजन ज्योतिर्मय ट्रस्ट पटना तथा उनके जन्म स्थान श्री डुमरी बुजुर्ग, सोनपुर, सारण स्थित स्वामी ज्योतिर्मयानंद आश्रम में मनाया गया। इस कार्यक्रम में योग के विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई तथा इससे होने वाले लाभ के बारे में लोगों को बताया गया। आश्रम विधान के अनुसार वैदिक रीति से गुरु जी का पूजा - पाठ संपन्न किया गया तथा आध्यात्मिक चेतना के माध्यम से मानव जीवन में आने वाली समस्या व उसका निराकरण कर अपने जीवन को आध्यात्मिक रूप से सबल और सक्षम बनाने के लिए प्रेरित किया गया।

ज्ञातव्य है कि 3 फरवरी 1931 को अवतरित स्वामी ज्योतिर्मयानंद सरस्वती का नाम बाल्य काल में सुरेश था तथा वह पटना साइंस कॉलेज के विद्यार्थी थे। उसी समय स्वामी शिवानंद सरस्वती के प्रवचन से प्रभावित होकर संन्यास ग्रहण कर आध्यात्मिक मार्ग के लिए दृढ़ सकल्पित हो गए तथा अपने गुरु के अनुमति से अपना आश्रम " योग रिसर्च फाउंडेशन " मियामी, फ्लोरिडा, अमेरिका में साठ के दशक में स्थापित किए तथा उन्हा से करीब सौ देशों में भारतीय योग एवं वेदांत का प्रचार प्रसार किए हैं। स्वामी जी के गुरु भाई स्वामी सत्यानंद सरस्वती बिहार योग विद्यालय की स्थापना कर भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में भारतीय योग दर्शन का परचम लहराए है। महर्षि पतंजलि द्वारा निर्देशित योग

दर्शन की आध्यात्मिक भावना व चेतना को जागृत रखते हुए पूरे विश्व में स्वामी शिवानंद सरस्वती जी के दोनों शिष्य स्वामी ज्योतिर्मयानंद सरस्वती एवं स्वामी सत्यानंद सरस्वती की भूमिका ईश्वरी व दिव्य है। स्वामी ज्योतिर्मयानंद जी के निदेर्शानुसार ज्योतिर्मय ट्रस्ट की स्थापना वर्ष 2014 श्री विमल कुमार एवं उनके सहयोगी अवधेश झा, अधिवक्ता मनोज कुमार, निशांत कुमार, श्रीमती रेणु कुमार आदि के द्वारा पटना में हुई तथा इसे योग रिसर्च फाउंडेशन, मियामी, फ्लोरिडा, अमेरिका की अधिकृत इकाई की मान्यता प्रदान की गई। इसका मुख्य उद्देश्य स्वामी ज्योतिर्मयानंद जी द्वारा स्थापित किए गए अध्यात्मिक उद्देश्य को जन जन तक पहुंचाना है। स्वामी जी अभी तक सत्तर से ज्यादा पुस्तक योग एवं अध्यात्म पर लिख चुके है जो कि मानव कल्याण के लिए लाभप्रद है।

योग एवं आध्यात्मिक उत्थान केन्द्र के रूप में स्थित स्वामी ज्योतिर्मयानंद आश्रम सारण में वर्ष 2018 में " ज्योतिर्मय संस्कार शाला " का शुभारंभ किया गया जिसमें आस पास के गांव एवं मुहल्लों के बच्चों को शिक्षा व संस्कार दी जाती है। साथ ही ज्योतिर्मय इंटरनेशनल स्कूल का शुभारंभ भी इस वर्ष दूरगामी शिक्षा योजना के तहत की गई।

पटना एवं सारण की धरती पर होने वाली इस आयोजन में कई गण्यमान लोगों के साथ साथ आस पास गांव के लोग भी उपस्थित हुए।

आयोजन एवं ट्रस्ट सचिव विमल कुमार, ट्रस्ट्री सह अन्तर्राष्ट्रीय योग समन्वयक एवं प्रशिक्षक अवधेश झा, अरविन्द कुमार, श्याम कुमार, मनोज कुमार, रेणु कुमार, निशांत कुमार, माला, रजनीश योगी, के. एन. सिन्हा, डॉ सतीश कुमार सिन्हा आदि उपस्थित थे। इनर व्हील क्लब के कई सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया तथा उनके तरफ से सॉल से कई व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। ज्योतिर्मय ट्रस्ट के सचिव विमल कुमार के द्वारा ट्रस्ट के तरफ से कई व्यक्तियों को उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया। सारण स्थित स्वामी ज्योतिर्मयानंद आश्रम में पारस हॉस्पिटल द्वारा हेल्थ कैंप का आयोजन किया गया था जिसमें गांव तथा आस पास के कई लोगों ने इसका लाभ उठाया। स्वामी रितेश मिश्र द्वारा योग परिचर्चा एवं बच्चों को योग अभ्यास कराया गया। इस कार्यक्रम नवीन कुमार, निर्मल कुमार, रवि, अक्षय, अमरेंद्र कुमार, ऋतिक कुमार आदि उपस्थित थे।

शहीद दिवस विशेष

कुमुद रंजन सिंह

सामाजिक चिंतक एवम पत्रकार

शहीद दिवस, जिसे शहीद दिवस या अमर शहीद दिवस के रूप में भी जाना जाता है, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की शहादत की याद में प्रतिवर्ष 30 जनवरी को मनाया जाता है, जिनकी 1948 में इसी दिन हत्या कर दी गई थी। यह उन्हें श्रद्धांजलि देने का दिन है वे सभी शहीद जिन्होंने भारत की आजादी और प्रगति के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

शहीद दिवस कब है? 30 जनवरी या 23 मार्च?

भारत दो अलग-अलग तारीखों पर शहीद दिवस या शहीद दिवस मनाता हैः

30 जनवरीः यह तारीख 1948 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या का प्रतीक है। इसे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी के बलिदान और योगदान का सम्मान करने के लिए राष्ट्रीय अवकाश के रूप में मनाया जाता है। 23 मार्चः यह तारीख तीन युवा क्रांतिकारियों भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर की शहादत की याद दिलाती है, जिन्हें 1931 में स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने फांसी दे दी थी। दोनों तारीखें भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण महत्व रखती हैं, जो देश की आजादी और प्रगति के लिए राष्ट्रीय नायकों द्वारा किए गए बलिदान की याद दिलाती हैं। जबकि 30 जनवरी मुख्य रूप से गांधी की शहादत को समर्पित है, 23 मार्च भगत सिंह और उनके साथी क्रांतिकारियों की विरासत का सम्मान करता है।

शहीद दिवस की थीम

शहीद दिवस 2024 के लिए कोई विशेष विषय नहीं है। यह दिन हमारे राष्ट्रीय नायकों की अटूट प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में खड़ा है जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता और प्रगति के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। यह एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं था और हमें एक अधिक न्यायसंगत, न्यायसंगत और समृद्ध राष्ट्र के लिए प्रयास करना जारी रखना चाहिए।

शहीद दिवस का इतिहास

शहीद दिवस का इतिहास देश की आजादी के संघर्ष और स्वतंत्रता और न्याय के लिए लड़ने वाले अनगिनत व्यक्तियों के बलिदान से जुड़ा हुआ है।

शहीद दिवस का जन्म

30 जनवरी, 1948 को स्वतंत्रता आंदोलन के श्रद्धेय नेता महात्मा गांधी की नई दिल्ली में हत्या कर दी गई थी। इस दुखद घटना ने देश को झकझोर कर रख दिया और इस महान नेता की स्मृति का सम्मान करने का आह्वान किया। 1949 में, भारत सरकार ने गांधी की शहादत और देश की आजादी की लड़ाई में उनके अतुलनीय योगदान को याद करने के लिए 30 जनवरी को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया।

शहीद दिवस का दायरा बढ़ाया जा रहा है

जबकि शहीद दिवस शुरू में गांधी की विरासत पर केंद्रित था, धीरे-धीरे यह उन सभी शहीदों के बलिदानों को शामिल करने के लिए विकसित हुआ जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता और प्रगति के लिए लड़ाई लड़ी। 1969 में, भारतीय संसद ने विशेष रूप से भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर की शहादत का सम्मान करते हुए, 23 मार्च को शहीद दिवस मनाने के लिए एक और दिन घोषित किया। इन युवा क्रांतिकारियों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के कारण ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने 1931 में फाँसी पर लटका दिया था।

शहीद दिवस का महत्व

शहीद दिवस भारत में बहुत महत्व रखता है, जो देश की आजादी, न्याय

और प्रगति के लिए लड़ने वाले अनगिनत व्यक्तियों के बलिदान की याद दिलाता है। यह स्वतंत्रता और समानता के प्रति उनके साहस, दृढ़ संकल्प और अटूट प्रतिबद्धता को श्रद्धांजलि देने का दिन है। ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित करनाः शहीद दिवस भारत के शहीदों की ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित करने में मदद करता है, यह सुनिश्चित करता है कि उनके योगदान और बलिदान को भुलाया न जाए। भावी पीढ़ियों को प्रेरित करनाः यह दिन भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करता है, उनमें देशभक्ति, साहस और राष्ट्र के प्रति निस्वार्थ सेवा के मूल्यों को स्थापित करता है। राष्ट्रीय एकता को मजबूत करनाः शहीद दिवस राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है और नागरिकों को भारत की स्वतंत्रता और प्रगति के लिए किए गए साझा बलिदानों की याद दिलाता है।

महात्मा गांधी उद्धरण

यहां महात्मा गांधी के कुछ सबसे प्रसिद्ध और प्रेरक उद्धरण दिए गए हैंः

"आंख के बदले आंख का मतलब पूरी दुनिया को अंधा बनाना है।"

"पहले वे आपको नजरअंदाज करते हैं, फिर वे आप पर हंसते हैं, फिर वे आपसे लड़ते हैं, फिर आप जीत जाते हैं।"

"खुद वो बदलाव बनें जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।"

"कमजोर कभी माफ नहीं कर सकते। क्षमा ताकतवर की विशेषता है।"

"आपमें वह बदलाव होना चाहिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।"

"एक विनम्र तरीके से, आप दुनिया को हिला सकते हैं।" "खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका खुद को दूसरों की सेवा में खो देना है।" "अभ्यास का एक औंस ढेर सारे उपदेशों से अधिक मूल्यवान है।" "स्वतंत्रता केवल उत्पीड़न की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि अवसर की उपस्थिति है।" ह्लभविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आप आज क्या करते हैं। ये उद्धरण महात्मा गांधी के अहिंसा, सत्य और दूसरों की सेवा के दर्शन का सार दशार्ते हैं। उनकी शिक्षाएं दुनिया भर में शांति, न्याय और समानता के लिए प्रयास करने वाले व्यक्तियों और आंदोलनों को प्रेरित और मार्गदर्शन करती रहती हैं।

30 जनवरी 2024 विशेष दिन

30 जनवरी का गहरा राष्ट्रीय महत्व है क्योंकि भारत 2024 में शहीद दिवस मनाता है। उस देश के लिए महात्मा गांधी के बलिदान के साथ मेल खाते हुए, जिसके लिए वह 1948 में जीते और मर गए, यह स्मारक अवसर पूरे इतिहास में बहादुर देशभक्तों की यादगार विरासत का जश्न मनाता है। यह पवित्र समय अहिंसा, सद्भाव और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों पर विचार करने का समय पर अवसर प्रदान करता है ,जिसका राष्ट्र के नायकों ने प्रतीक किया।

सिंगापुर में डॉ. बालकृष्ण महाजन को मिला अंतरराष्ट्रीय गौरव भूषण सम्मान

कुमुद रंजन सिंह

डेस्क रिपोर्ट

भारत के साहित्यकार को सिंगापुर में मिला सम्मान,इस संदर्भ में

सिंगापुर तथा भारत के मध्य भाषा, साहित्य तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान हेतु सिंगापुर की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था 'संगम सिंगापुर एसोसिएशन' तथा भारत की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था 'हिंदी अकादमी, मुंबई' के संयुक्त तत्वावधान में डी.ए.वी. हिंदी विद्यालय, सिंगापुर में अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित कार्यक्रम में संत्रा नगरी के साहित्यकार एवम पत्रकार डॉ बालकृष्ण महाजन को डी.ए.वी. हिंदी विद्यालय, सिंगापुर के अध्यक्ष ओमप्रकाश राय की मेजबानी में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिवजी तिवारी (चांसरी प्रमुख-भारतीय उच्चायोग सिंगापुर) के करकमलों द्वारा " अंतरराष्ट्रीय गौरव भूषण सम्मान " -2024 शाल, स्मृति चिन्ह और प्रमाण -पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में नवयुवा रचनाकारों तथा साहित्यकारों को एक नई दिशा प्रदान करने के साथ-साथ भविष्य में साहित्य लेखन के लिए प्रोत्साहन देने के लिए संगम सिंगापुर एसोसिएशन की अध्यक्ष डॉ. संध्या सिंह ने बताया कि 'विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम से न सिर्फ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का आदान-प्रदान होगा अपितु दो देशों के बीच साहित्य के माध्यम से आपसी संबंध भी मजबूत होंगे। हिंदी अकादमी, मुंबई के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. प्रमोद पांडेय ने बताया कि 'साहित्य के माध्यम से दो देशों के बीच रिश्तों को और मजबूत बनाने तथा प्रवासी एवं भारतीय रचनाकारों को एक साथ एक मंच पर लेकर आना है। इस इस कार्यक्रम में भारत से डॉ. कृष्ण कुमार द्विवेदी, डॉ. ज्योति शर्मा, सीमा त्रिवेदी, बबिता जैन, उमा विश्वकर्मा, सावित्री सुमन तथा सिंगापुर से बृजेश कुमार शुक्ल, शांति प्रकाश उपाध्याय, चित्रा गुप्ता, गौरव उपाध्याय, रीता पाण्डेय, वीणा शर्मा, आलोक मिश्रा, अजीत कुमार, अनिल

कुलश्रेष्ठ, विनोद दुबे, अरुणा सिंह, नीलिमा गुप्ते,

इस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु डी.ए.वी. हिंदी विद्यालय, सिंगापुर ने अमूल्य योगदान प्रदान किया है। कार्यक्रम आयोजक तथा संयोजक ने विद्यालय प्रशासन को धन्यवाद ज्ञापित किया नेशनल जर्नलिस्ट एसोसिएशन से जुड़े पत्रकार एवम साहित्यकार

डॉ बालकृष्ण महाजन नागपुर को सम्मान दिए जाने पर राष्ट्रीय महासचिव कुमुद रंजन सिंह के साथ ही, सुश्री गीता कौर पत्रकार एवम समाजसेवी उत्तराखंड,सुप्रिया सिंह पत्रकार, जियाऊदीन,एम के पांडेय सहित नेशनल जर्नलिस्ट एसोसिएशन के विभिन्न पत्रकारों ने शुभकामनाएं देते हुए देश एवम साहित्यकारों के लिए एक आदर्श बताया।

डा बालकृष्ण अपने यात्रा वृतांत में बताते है की

कार्यक्रम के पहले दिन की सुबह कब दस्तक दी पता ही नहीं चला। बताया गया था कि,सुबह नाश्ता तैयार है। हम सभी ने भरपूर नाश्ता किया और फ्रेश होकर साहित्यकार निकल चले कार्यक्रम स्थल की ओर। लेकिन हल्के बारिश के कारण हमने टैक्सी से डी.ए.वी, स्कूल में पहुंच गए। वहीं हमारा जोर-शोर से स्वागत हुआ।यहां पर हिंदी अकादमी, मुंबई संगम एसोशिएशन और डी ए वी स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में इस कार्यक्रम का आयोजन था। शुरूवात स्वागत नृत्य से हुई। फिर परिचर्चा शुरू हुई।भारत से डा ज्योति शर्मा ने इसका नेतृत्व किया। तपश्चात कवि सम्मेलन में भारत का एक कवि तो सिंगापुर का एक कवि। जुगलबंदी जोर -शोर से चल रहा था। मेरे द्वारा कविता के बोल कुछ इस तरह थे," उनकी एक मुस्कुराहट ने हमारे होश उडा दिए,हम होश में आ ही रहे थे, फिर वह मुस्करा दिए।" सभी ओर खुशी की लहर छा गई और सभी श्रोताओं का मन मोह लिया।

बाद में सभी साहित्य कारों को बारी-बारी

मंच पर आसीन सिंगापुर के भारतीय उच्चायुक्त चान्सरी प्रमुख शिव तिवारी, हिंदी अकादमी, मुंबई के संस्थापक अध्यक्ष डॉ प्रमोद पाण्डेय, डीएवी स्कूल के संस्थापक श्री राम,संगम एसोशिएशन के अध्यक्ष डॉ संध्या सिंह के उपस्थिती में सभी रचनाकारों को शाल,

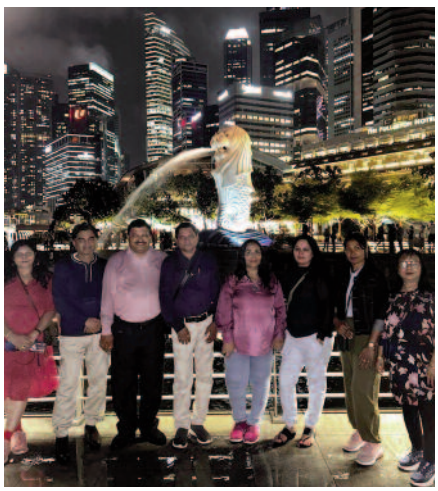

स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।तब हम सभी को विदेशी धरती पर सम्मानित किए जाने का गौरव हमें प्राप्त हुआ। फिर क्या हम सभी स्वादिष्ट भोजन पर टूट पड़े। एक दूसरे को आपस में संपर्क स्थापित करने का आश्वासन देकर हम भारतीय साहित्यकार अपने होटल की ओर बढ़ लिए। कुछ क्षण पश्चात आपसी सहमति से जंगल नाइट सफारी करने हेतु स्थानीय बस से स्थानक पर पहुंच गए। ठीक एक घंटे की नाइट सफारी हमने ट्राम से शुरू की। हम वहां के रात्रि के समय दिखाई देने वाले शेर, जंगली जानवर, देखकर हम डर के मारे भयभीत भी हो रहे थे और विलक्षण अनुभव से फोटो खींच कर आनंद महसूस कर भी रहे थे। फिर एक दूसरों के मोबाइल में कैद होकर वापस अपने होटल की ओर बढ़ लिए लेकिन गुजरात के होटल में रात्रि में देरी से पहुंचने बाद भी भोजन का स्वाद लेकर होटल पहुंचे। बिना बातचीत किए अपने कमरे में चिर निद्रा में कब सो गए पता ही चला।

जब आंख खुली तो पता चला कि, हमें आज अपना होटल खाली करना है। फिर हम अपना सामान लेकर नीचे लिफ्ट द्वारा पहुंच गए। अब हम सभी नाश्ता भरपेट करके अपना सामान स्टोर रुम में रहते हुए आगे सिंगापुर दर्शन हेतु निकल पड़े।बस में बैठने के बाद वहां के बिल्डिगों की तस्वीरें मोबाइल फोन में करना ना भूलें।

आगे हम मेट्रो से युनिवर्सल पाइंट की ओर आए। वहां सभी प्राकृतिक सौंदर्य ने हम सभी का मन मोह लिया। लेकिनहर किसी ने भी मोबाइल में वही के दृश्य को अपने कैमरे द्वारा कैद कर ही लिया।बस हम वापसी यात्रा में बड़े दुःखी होकर खाना खाकर होटल से सामान लेकर चल पड़े अंतिम पड़ाव पर मेट्रो से एयरपोर्ट पर आकर सर्वप्रथम टुरिस्ट पास बड़े दुःखी होकर वापस किए।मन अब उभर आया था कि,हम सभी कभी भी सिंगापुर ना छोड़े। लेकिन हवाई जहाज हमारा बड़े बेहरमाई से इंतजार कर रहा था। हमारे कुछ दिनों में सभी साथी बिछुडने के गम मे डूबे हुए थे। डॉ प्रमोद पाण्डेय जी ने ऐसे ही स्थिति में हमारे मन की बात जानकर मोबाइल पर हम सभी का सिंगापुर यात्रा के बारें इंटरव्यू ले लिया। तभी मेरे कलम कहने लगी कि," आज फिर आइना झूठ पकड़ा गया,दिल में दर्द था, लेकिन चेहरा मुरझा हुआ पकड़ा गया।"

वहीं से टर्मिनल दो से सभी साथी अलग -अलग बिछड़ गए। हम बिना किसी हंसी मजाक किए बिना गंभीर रूप धारण करके अपने देश में पहुंचने के लिए हवाई जहाज में बैठ गए। फिर हमें ना खाने में रुचि थी ना पीने में एक झपकी लेते ही अपने देश याने मुंबई में पहुंच गए।अपना सामान लेकर बड़े दुःखी होकर आगे इसी तरह अगली यात्रा की योजना को सभी ने मूक समर्थन देते हुए अपने गंतव्य स्थान के अपने वाहन से निकल पड़े। हम भी आटो में बैठकर अंधेरी स्टेशन पर पहुंच कर लोकल से छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल से सुबह गीतांजलि एक्सप्रेस से बैठकर शाम नागपुर सभी सिंगापूर यादें लेकर अपने घर सकुशल पहुंच गए। रात्रि में वही सिंगापुर यात्रा की तस्वीरें आंखों के सामने आने लगी।नींद ने कब कर-वट ली पता ही नहीं चला। एक दो दिन की यात्रा हम सबको इतना मोह ले सकती है और यादें हमें इतना गंभीर बना सकती यह बात मेरे जहन घर कर गई। इस तरह से मेरी यह अस्मरणीय सिंगापुर यात्रा सफल रही।

नागरिकों के लिए उपयोगी जानकारी कानूनी अधिकार

सुप्रिया सिंह

पत्रकार एवं कानूनी सलाहकार.(नेशनल जर्नलिस्ट एसोसिएशन)

नागरिकों को कुछ कानूनी अधिकार जिसेके बारे में हम सभी को जानना चाहिए। इन कानूनी अधिकारों को जानने के बाद बेवजह के शोषण से हम सभी बच सकते हैं। साथ ही इन कानूनों के प्रति अन्य लोगों को जागरूक करके हम कई लोगों की मदद भी कर सकते हैं।

गर्भवती महिलाओं के लिए जरूरी कानून

Maternity Profit Act, 1961 के तहत कोई भी कंपनी गर्भवती महिला को नौकरी से नहीं निकाल सकती, ऐसा करने पर अधिकतम 3 साल तक की सजा हो सकती है।

ट्रैफिक चालान से जुड़ा अहम कानून

Automotive Amendment Bill 2016 के तहत यदि आपका किसी दिन चालान (बिना हेलमेट के या किसी अन्य कारण से) काट दिया जाता है तो फिर दोबारा उसी अपराध के लिए आपका चालान नही काटा जा सकता है।

क्या गैर-कानूनी है लिव इन रिलेशनशिप?

Home Violence Act, 2005 के तहत यदि दो वयस्क महिला या पुरुष अपनी मर्जी से लिव इन रिलेशनशिप में रहना चाहते हैं तो यह गैर-कानूनी नही है । यही नहीं इन दोनों से पैदा होने वाली संतान भी गैर कानूनी नही है और संतान को अपने पिता की संपत्ति में हक भी मिलेगा।

महिलाओं की गिफ्तारी से जुड़ा अहम कानून

Criminal Procedure Code, Sectio के तहत किसी भी महिला को सुबह 6 बजे से पहले गिरफ्तार नहीं किया जा सकता है और शाम 6 बजे के बाद।

फाइव स्टार होटल में फ्री टॉयलेट इस्तेमाल करने का अधिकार

Indian Sarais Act, 1887 कोई भी होटल चाहे वो 5 स्टार ही क्यों न हो, आपको फ्री में पानी पीने और टॉयलेट का इस्तेमाल करने से नही रोक सकता है।

मकान मालिक जबरदस्ती घर खाली नहीं करा सकता

Delhi Hire Management Act, 1958, Part 14 के तहत यदि आप दिल्ली में रह रहे हैं तो आपके मकान मालिक के पास आपको पूर्व सूचना दिए बिना जबरदस्ती घर खाली करने का अधिकार नहीं है।

हर नागरिक को यह कानून तो पता होना ही चाहिए

Most Retail Value Act, 201के तहत कोई भी दुकानदार किसी वस्तु के लिए उस पर अंकित अधिकतम खुदरा मूल्य से अधिक रुपये नही मांग सकता है लेकिन कंज्यूमर अधिकतम खुदरा मूल्य से कम पर वस्तु खरीदने के लिए दुकानदार से भाव तौल कर सकता है।

FIR दर्ज करने से पुलिस नहीं कर सकती मना

Indian Penal Code, 166 A के तहत एक पुलिस अधिकारी प्राथमिकी (FIR) दर्ज करने से इनकार नहीं कर सकता है। ऐसा करने पर उन्हें 6 महीने से 1 साल तक की जेल हो सकती है।

टैक्स चोरी के मामले में गिरफ्तारी से पहले नोटिस जरूरी

Earnings Tax Act, 1961 टैक्स चोरी के मामले में कर वसूली अधिकारी को आपको गिरफ्तार करने का अधिकार है लेकिन गिरफ्तार करने से पहले उसे आपको नोटिस भेजना पड़ेगा। केवल टैक्स कमिश्नर यह फैसला करता है कि आपको कितनी देर तक हिरासत में रहना है ।

ऑफ ड्यूटी भी पुलिस अधिकारी को सुननी होगी शिकायत

Police Act, 1861 के तहत एक पुलिस अधिकारी हर समय ड्यूटी पर रहता है चाहे उसने वर्दी पहनी हो या नहीं। यदि कोई व्यक्ति अधिकारी को शिकायत करता है तो वह यह नहीं कह सकता कि वह पीड़ित की सहायता नहीं कर सकता क्योंकि वह ड्यूटी पर नहीं है। अधिक जानकारी एवं बेहतर सुझाव के लिए अपने पास के अधिवक्ता या हमारे संगठन से कानूनी सलाह लिया जा सकता है।

बिहार में बनी एनडीए की सरकार

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

राजनीति में कब कौन कहां और किसके साथ, कैसे होगा कौन पार्टी किस पार्टी के साथ किसी को नहीं होता है पता, लेकिन जो होगा, उसका अनुमान पहले से ही मीडिया के माध्यम से, हवा के बदले रुख को देखकर अंदाजा लगाया जा रहा था। इसी बीच बिहार में चल रही नीतीश कुमार की अगुवाई वाली जदयू और लालू प्रसाद यादव के राजद की (महागठबंधन की) सरकार में मतभेद अपनी चरम सीमा पर पहुंच कर गठबंधन टूट गई और नीतीश कुमार की जदयू एनडीए सरकार में शामिल हो कर एनडीए की सरकार बिहार में बन गई। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का स्वतंत्र राजनीतिक जीवन का राष्ट्रीय भविष्य उम्र के ढलान पर है और अब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का आने वाला राजनीतिक भविष्य एनडीए में जाने से ज्यादा फायदा दिख रहा है। इधर लालू यादव अपने पुत्र तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर देखने के लिए एन-केन-प्रक्रेन में नीतीश कुमार और उनकी पार्टी जदयू पर दवाब लगातार बना रहे थे। ऐसी स्थित में नीतीश कुमार अपनी कुर्सी और अपनी जदयू पार्टी की फायदा को देखते हुए, राजद के साथ सरकार बनाने की भूल को सुधारने के लिए पूरी तरह तैयार दिख रहे थे। बिहार विधान सभा में राजनीतिक दलों की दलगत स्थिति (27 फरवरी 2023) में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की संख्या - 79, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) - 78, जनता दल यूनाइटेड (जदयू) - 45, इंडियन नेशनल कांग्रेस (कांग्रेस) - 19, कम्यूनिष्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्कससिस्ट-लेनिनिस्ट) (लिबरेशन) - 12, हिन्दूस्तानी आवाम मोर्चा (सेक्यूलर) - 04, कम्यूनिष्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्कससिस्ट) - 02, कम्यूनिष्ट पार्टी ऑफ इंडिया -02, ऑल इंडिया मजलिस-ए-ईतेहादुल मुस्लमिन - 01 और निर्दलीय - 01 है। लालू प्रसाद और नीतीश कुमार की पार्टियों की बातें 2015 में भी गंभीर रूप से हुई थीं जब सपा, राजद, जदयू, जेडीएस, इनेलो और सजपा ने मिलकर जनता परिवार बनाने का ऐलान किया था, लेकिन वो बात ऐलान से आगे नहीं बढ़ सकी। मुलायम सिंह यादव को इस नई पार्टी का अध्यक्ष चुना गया था लेकिन बिहार विधानसभा चुनाव में तीन सीट ऑफर होने पर सपा ने ही सबसे पहले रास्ता अलग कर लिया था। 2015 में नीतीश कुमार और लालू प्रसाद ने मिलकर बिहार में विधानसभा का चुनाव लड़ा और जीतने के बाद नीतीश ने सरकार बनाई थी। फिर नीतीश 2017 में वापस एनडीए के पास चले गए और फिर से राजद के साथ वापस आ गए। नीतीश कुमार इस बार जब लालू यादव के साथ आए तो माहौल अलग था। भाजपा दूसरे और जदयू तीसरे नंबर की पार्टी थी। विधानसभा में राजद सबसे बड़ी पार्टी थी। असदुद्दीन ओवैसी के चार विधायकों के राजद में शामिल होने से विधानसभा में भाजपा से बड़ी राजद पार्टी बनी। राजनीति के गलियारों में यह कहा जाता है कि ये चार विधायक जदयू में जाना चाहते थे लेकिन वहीं से इशारा हुआ कि राजद में जाकर विधानसभा में उसे सबसे बड़ी पार्टी बनाया जाए। ताकि भाजपा का साथ छोड़ने के बाद अगर राजभवन गठबंधन के बदले सबसे बड़ी पार्टी को ही पहला मौका देना चाहे तो भी भाजपा सरकार नहीं बना सके। प्लान कामयाब रहा। राजभवन ने कोई अड़चन भी नहीं पैदा की। एक दिन एनडीए सरकार के मुख्यमंत्री के तौर पर नीतीश कुमार का इस्तीफा हुआ। अगले दिन महागठबंधन सरकार के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ हो गया। बिहार में सरकार चला रहे गठबंधन में बदलाव हुआ जब एनडीए की जगह महागठबंधन सरकार बन गई।

इससे पहले महाराष्ट्र में भाजपा ने ऑपरेशन लोटस का कमाल दिखा दिया था। 55 विधायकों वाली शिवसेना के मुखिया और मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को जब तक बगावत की खबर लगी, तब तक उनके 40 विधायक एकनाथ शिंदे के साथ घूम रहे थे। सरकार बदल गई और आखिरी मौके पर भाजपा ने देवेंद्र फड़णवीस को झटका देते हुए बागी गुट के शिंदे को मुख्यमंत्री बना दिया जिससे ये लगे कि ये ऑपरेशन लोटस नहीं था। बगावत शिवसेना की थी और सरकार बनाने के लिए हमने समर्थन दिया। महाराष्ट्र का खौफ बिहार में काम कर रहा था। नीतीश कुमार की जदयू के विधायक तो 45 ही थे। ऊपर से उनके पुराने अध्यक्ष और तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री आरसीपी सिंह बागी हो चुके थे। एनडीए छोड़ने के बाद जदयू अध्यक्ष ललन सिंह ने बताया कि आरसीपी सिंह भाजपा के साथ मिल गए थे और जदयू को तोड़ने की साजिश कर रहे थे। तो इस तरह नीतीश की लालू के घर वापसी हुई। नीतीश कुमार महागठबंधन में आने के बाद से ही 2024 के चुनाव के लिए विपक्षी दलों को एकजुट करने के मिशन में लग गए, जो राष्ट्रीय राजनीति में उनकी दिलचस्पी का इशारा है। लालू प्रसाद भी यही चाहते थे कि तेजस्वी बिहार में मुख्यमंत्री बनें और नीतीश कुमार दिल्ली की राजनीति करें। इसी राजनीतिक सेट-अप को तैयार करने के लिए राजद और जदयू को मिलाकर एक बड़ी और मजबूत पार्टी बनाने की कोशिश की गई। राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने कहा भी था कि 2023 में तेजस्वी को मुख्यमंत्री बनाकर नीतीश दिल्ली की राजनीति करेंगे। लेकिन नीतीश जिस कद के नेता हैं, उन्हें ये फॉमूर्ला कतई कबूल नहीं हुआ कि राजद के साथ रहकर जदयू अपना अस्तित्व खत्म कर ले और राजद बनी रहे। बिहार के मुख्यमंत्री विगत दिनों कांग्रेस के सोनिया गांधी से मिलने दिल्ली गये थे, लेकिन मुलाकात नहीं हुई थी और कांग्रेस का सकारात्मक रुख महागठबंधन की ओर दिखाई नहीं पड़ी तो वे हतास हो गये। फिर वे अपना रूख बंगाल की ममता बनर्जी की ओर किया था वहाँ भी हताशा मिला। वहीं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव का कहना था कि भाजपा को हटाने में हम साथ है। आगामी आम चुनाव में अब कुछ महीने ही बचा है और ऐसे में राजनीतिक गोलबंदी होना, गठबंधन में बिखराव होना भी लाजमी था। नीतीश कुमार ने संयोजक के रूप में लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार को परास्त करने के लिए महागठबंधन बनाने में विपक्षी पार्टियों के साथ शामिल हो कर बैठक 23 जून को पटना में की थी, जिसमें 15 राजनीतिक पार्टियाँ शामिल हुए थे। जबकि बैठक में 21 राजनीतिक पार्टियाँ को शामिल होने की संभावना थी। महागठबंधन में शामिल होने वालों में जदयू, राजद, कांग्रेस, भाकपा, माकपा, भाकपा माले, एनसीपी, झामुमो, टीएमसी, डीएमके, शिवसेना(बाला साहेब ठाकरे गुट), समाजवादी पार्टी, आम आदमी पार्टी, नेशनल कान्फ्रेंस और पीडीपी के कुल 27 नेता थे। वर्तमान समय में सीट बटवारे को लेकर महागठबंधन में कई दरारें पड़ गई है।

भाजपा और जदयू अपने उत्पत्ति से ही अलग-अलग विचारधारा और पृष्ठभूमि की पार्टी रही है। दोनो में कहीं से भी कोई मेल था ही नहीं। फिर भी राजनीतिक परिस्थिति ऐसी थी, कि इसमें नीतीश कुमार इस बार के 2020 के चुनाव के बाद अपने आप को एक कठपुतली और भारी दवाब में महसूस कर रहें थे। जिसका परिणाम यह हुआ की वह एनडीए से अलग महागठबंधन के साथ नई सरकार बना लिए। अब इसके बाद आगे की भविष्य की राजनीति में राज्य और केन्द्र दोनो के संदर्भ में उनके लिए अपनी पार्टी और खुद के स्वतंत्र छवि को कायम रखने के लिए दूसरा कोई विकल्प बचा ही नहीं था। उम्र के ढलान के बाद अपनी आखिरी राजनीतिक पारी को यादगार बनाने के लिए दूसरा कोई राजनीतिक धारा, बची हुई नहीं दिख रही है। बिहार में एनडीए की सरकार मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बन गई है। इस बार नीतीश कुमार ने नौवीं बार मुख्यमंत्री बनने का रिकॉर्ड बनाया हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ शपथ ग्रहण करने वालों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा, प्रेम कुमार, जदयू के बिजेंद्र प्रसाद यादव, विजय कुमार चौधरी, श्रवण कुमार, हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) के संतोष कुमार सुमन और निर्दलीय विधायक सुमित कुमार सिंह शामिल हैं। नीतीश कुमार के साथ शपथ ग्रहण करने वालों में 2 भूमिहार, एक यादव, कुर्मी, एक कुशवाहा, एक राजपूत, एक मुसहर और एक कहार जाति के लोग हैं। मंत्री बनने वालों में विजय कुमार सिन्हा और विजय चौधरी भूमिहार जाति से हैं। सम्राट चौधरी कुशवाहा जाति से हैं। वहीं यादव बिरादरी से विजेंद्र यादव जबकि कुर्मी जाति से श्रवण कुमार मंत्री बने है। संतोष सुमन मुसहर जाति से हैं, वहीं प्रेम कुमार कहार जाति से आते हैं। नीतीश कुमार खुद भी कुर्मी जाति से आते हैं। बिहार में नए राजनीतिक समीकरण के बाद भाजपा ने सम्राट चौधरी को राज्य में भाजपा विधायक दल का नेता और विजय कुमार सिन्हा को उपनेता चुना है। सम्राट चौधरी भाजपा के बिहार प्रदेश अध्यक्ष हैं। बिहार की नई सरकार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपने पास सामान्य प्रशासन, गृह, मंत्रिमंडल सचिवालय, निगरानी, निर्वाचन और ऐसे सभी विभाग जो किसी को आवंटित नहीं है रखे हैं। वहीं, उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के पास वित्त, वाणिज्य-कर, नगर विकास एवं आवास, स्वास्थ्य, खेल, पंचायती राज, उद्योग, पशु एवं मत्स्य संसाधन और विधि दिया गया है। उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा के पास विभाग कृषि, पथ निर्माण, राजस्व एवं भूमि सुधार, गन्ना उद्योग, खान एवं भूतत्व, श्रम संसाधन, कला, संस्कृति एवं युवा, लघु जल संसाधन और लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग दिया गया है। मंत्री विजय कुमार चौधरी को जल संसाधन, संसदीय कार्य, भवन निर्माण, परिवहन, शिक्षा और सूचना एवं जन-संपर्क दिया गया है। मंत्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव को ऊर्जा, योजना एवं विकास, मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन, ग्रामीण कार्य और अल्पसंख्यक कल्याण विभाग दिया गया है। मंत्री डा० प्रेम कुमार को सहकारिता, पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछडा वर्ग कल्याण, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन और पर्यटन विभाग दिया गया है। मंत्री श्रवण कुमार को ग्रामीण विकास, समाज कल्याण और खाद्य संरक्षण एवं उपभोक्ता विभाग दिया गया है। मंत्री संतोष कुमार सुमन को सूचना प्रावैधिकी और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग दिया गया है। मंत्री सुमित कुमार सिंह को विज्ञान, प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग दिया गया है।

प्रभु श्रीराम वनवासियों एवं वंचितों के अधिक करीब

यह एक एतिहासिक तथ्य है कि प्रभु श्री राम ने लंका पर चढ़ाई करने के उद्देश्य से अपनी सेना वनवासियों एवं वानरों की सहायता से ही बनाई थी। केवट, छबरी, आदि के उद्धार सम्बंधी कहानियां तो हम सब जानते हैं। परंतु, जब वे 14 वर्षों के वनवास पर थे तो इतने लम्बे अर्से तक वनवास करते करते वे स्वयं भी एक तरह से वनवासी बन गए थे। इन 14 वर्षों के दौरान, वनवासियों ने ही प्रभु श्री राम की सेवा सुषुर्शा की थी एवं प्रभु श्री राम भी इनके स्नेह, प्रेम एवं श्रद्धा से बहुत अभिभूत थे। इसी तरह की कई कहानियां इतिहास के गर्भ में छिपी हैं। यह भी एक कटु सत्य है एवं इतिहास इसका गवाह है कि हमारे ऋषि मुनि भी वनवासियों के बीच रहकर ही तपस्या करते रहे हैं। अतः भारत में ऋषि, मुनि, अवतार पुरुष, आदि वनवासियों, जनजातीय समाज के अधिक निकट रहते आए हैं। इस प्रकार, हमारी परम्पराएं, मान्यताएं एवं सोच एक ही है। जनजातीय समाज भी भारत का अभिन्न एवं अति महत्वपूर्ण अंग है।

आज भी भारत में वनवासी मूल रूप में प्रभु श्री राम की प्रतिमूर्ति ही नजर आते हैं। दिल से एकदम सच्चे, धीर गम्भीर, भोले भाले होते हैं। यह प्रभु श्री राम की उन पर कृपा ही है कि वे आज भी सतयुग में कही गई बातों का पालन करते हैं। परंतु, कई बार ईसाई मशीनरियों एवं कुछ विकृत मानसिकता वाले लोगों द्वारा वनवासियों को उनके मूल स्वभाव से भटकाकर लोभी, लालची एवं रावण का वंशज बताया जाता है। रावण स्वयं तो वनवासी कभी रहे ही नहीं थे एवं वे श्री लंका के एक बुद्धिमान राजा थे। इस बात का वर्णन जैन रामायण में भी मिलता है। अब प्रशन्न यह उठता है कि जब रावण स्वयं एक ब्राह्मण था तो वह वंचित वर्ग का मसीहा या पूर्वज कैसे हो सकता है? जैन रामायण की तरह गोंडी रामायण भी रावण को पुलत्स वंशी ब्राह्मण मानती है, न कि आदिवासियों का पूर्वज, कुछ गोंड पुजारी रावण को अपना गुरु भाई भी मानते हैं, चूंकि पुलत्स ऋषि ने उनके पूर्वजों को भी दीक्षा दी थी। इस तरह के तथ्य भी इतिहास में मिलते हैं कि रावण अपने समय का एक बहुत बड़ा शिव भक्त एवं प्रकांड विद्वान था। रावण जब मृत्यु शैया पर लेटा था तब प्रभु श्री राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कहा था कि रावण अब मृत्यु के निकट है एवं प्रकांड विद्वान है अतः उनसे उनके इस अंतिम समय में कुछ शिक्षा ले लो। तब लक्ष्मण रावण के सिर की तरफ खड़े होकर शिक्षा लेने पहुंचे थे तो लक्ष्मण को कहा गया था कि शिक्षा लेना है तो रावण के पैरों की तरफ आना होगा। तब लक्ष्मण, रावण के पैरों के पास आकर खड़े हुए तब जाकर रावण ने लक्ष्मण को अपने अंतिम समय में शिक्षा प्रदान की थी। अतः रावण अपने समय का एक प्रकांड पंडित था।

भारतीय संस्कृति पर पूर्व में भी इस प्रकार के हमले किए जाते रहे हैं। भारत में समाज को आपस में बांटने के कुत्सित प्रयास कोई नया नहीं हैं। एक बार तो रामायण एवं महाभारत आदि एतिहासिक ग्रंथों को भी अप्रामाणिक बनाने के कुत्सित प्रयास हो चुके हैं। वर्ष 2007 में तो केंद्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय के मातहत भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने एक हलफनामा (शपथ पत्र) दायर किया था, जिसमें कहा गया था कि वाल्मीकीय रामायण और गोस्वामी तुलसीदासजी कृत श्रीरामचरितमानस प्राचीन भारतीय साहित्य के महत्त्वपूर्ण हिस्से हैं, लेकिन इनके पात्रों को एतिहासिक रूप से रिकार्ड नहीं माना जा सकता है, जो कि निर्विवाद रूप से इनके पात्रों का अस्तित्व सिद्ध करता हो या फिर घटनाओं का होना सिद्ध करता हो। ये बातें कितनी दुर्भाग्यपूर्ण हैं। यह कहना कि प्रभु श्री राम और रामायण के पात्र (राम, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव और रावण, आदि) एतिहासिक रूप से प्रामाणिक सिद्ध नहीं होते, एक प्रकार से भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात ही था। हालांकि भारतीय जनमानस के आंदोलित होने पर उस

समय की भारत सरकार को अपनी गलती का एहसास हुआ था और उसने अपने शपथ पत्र (हलफनामे) को न्यायालय से वापस मांग लिया था।

विभिन्न देशों में वहां की स्थानीय भाषाओं में पाए जाने वाले ग्रंथों एवं विदेशों तक में किए गए कई शोध पत्रों के माध्यम से भी यह सिद्ध होता है कि प्रभु श्री राम 14 वर्ष तक वनवासी बनकर ही वनों में निवास किए थे। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि प्रभु श्रीराम भी अपने वनवास के दौरान वनवासियों के बीच रहते हुए एक तरह से वनवासी ही बन गए थे। साथ ही, वनों में निवासरत समुदायों ने सहज ही उन्हें अपने से जुड़ा माना और प्रभु श्री राम उनके लिए देव तुल्य होकर उनमें एक तरह से रच बस गए थे। कई वनवासी एवं जनजाति समाजों ने तो अपनी रामायण ही रच डाली है। जिस प्रकार, गोंडी रामायण, जो रामायण को अपने दृष्टिकोण से देखती है, हजारों सालों से गोंडी व पंडवानी वनों में रहने वाले जनजाति समाजों की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा रही है। गुजरात के आदिवासियों में डांगी रामायण तथा वहां के भीलों में भलोडी रामायण का प्रचलन है। साथ ही, हृदय स्पर्शी लोक गीतों पर आधारित लोक रामायण भी गुजरात में राम कथा की पावन परम्परा को दर्शाती है।

इसके साथ ही, विदेशों में भी वहां की भाषाओं में लिखी गई रामायण बहुत प्रसिद्ध है। आज प्रभु श्री राम की कथा भारतीय सीमाओं को लांघकर विश्व पटल पर पहुंच गई है और निरंतर वहां अपनी उपयोगिता, महत्ता और गरिमा की दस्तक देती आ रही है। आज यह कथा विश्व की विभिन्न भाषाओं में स्थान, विचार, काल, परिस्थिति आदि में अंतर होने के बावजूद भी अनेक रूपों में, विधाओं में और प्रकारों में लिखी हुई मिलती है। यथा, थाईलेंड में प्रचलित रामायण का नाम रामकिचेन है। जिसका अर्थ है राम की कीर्ति। कम्बोडिया की रामायण रामकेर नाम

भारतीय संस्कृति पर पूर्व में भी इस प्रकार के हमले किए जाते रहे हैं। भारत में समाज को आपस में बांटने के कुत्सित प्रयास कोई नया नहीं हैं। एक बार तो रामायण एवं महाभारत आदि एतिहासिक ग्रंथों को भी अप्रामाणिक बनाने के कुत्सित प्रयास हो चुके हैं। वर्ष 2007 में तो केंद्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय के मातहत भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने एक हलफनामा (शपथ पत्र) दायर किया था, जिसमें कहा गया था कि वाल्मीकीय रामायण और गोस्वामी तुलसीदासजी कृत श्रीरामचरितमानस प्राचीन भारतीय साहित्य के महत्त्वपूर्ण हिस्से हैं, लेकिन इनके पात्रों को एतिहासिक रूप से रिकार्ड नहीं माना जा सकता है, जो कि निर्विवाद रूप से इनके पात्रों का अस्तित्व सिद्ध करता हो या फिर घटनाओं का होना।

से प्रसिद्ध है। लाओस में फालक फालाम और फोमचक्र नाम से दो रामायण प्रचलित हैं। मलेशिया यद्यपि मुस्लिम राष्ट्र है, परंतु वहां भी हिकायत सिरीरामा नामक रामायण प्रचलित है, जिसका तात्पर्य है श्री राम की कथा।

इंडोनेशिया की रामायण का नाम ककविन रामायण है, जिसके रचनाकार महाकवि ककविन हैं। नेपाल में भानुभक्त रामायण और फिलीपीन में महरादिया लावना नामक रामायण प्रचलित है। इतना ही नहीं, प्रभु श्री राम को मिस्र (संयुक्त अरब गणराज्य) जैसे मुस्लिम राष्ट्र और रूस जैसे कम्युनिस्ट राष्ट्र में भी लोकनायक के रूप में स्वीकार किया गया है। इन सभी रामायण में भी प्रभु श्री राम के वनवास में बिताए गए 14 वर्षों के वनवास का विस्तार से वर्णन किया गया है।

भारतीय साहित्य की विशिष्टताओं और गहनता से प्रभावित होकर तथा भारतीय धर्म की व्यापकता एवं व्यावहारिकता से प्रेरित होकर समय समय पर चीन, जापान आदि एशिया के विभिन्न देशों से ही नहीं, यूरोप में पुर्तगाल, स्पेन, इटली, फ्रान्स, ब्रिटेन आदि देशों से भी अनेक यात्री, धर्म प्रचारक, व्यापारी, साहित्यकार आदि यहां आते रहे हैं। इन लोगों ने भारत की विभिन्न विशिष्टताओं और विशेषताओं के उल्लेख के साथ साथ भारत की बहुप्रचलित श्रीराम कथा के सम्बंध में भी बहुत कुछ लिखा है। यही नहीं, विदेशों से आए कई विद्वानों जहां इस संदर्भ में स्वतंत्र रूप से मौलिक ग्रंथ लिखे हैं, वहीं कई ने इस कथा से सम्बंधित रामचरितमानस आदि विभिन्न ग्रंथों के अनुवाद भी अपनी भाषाओं में किए हैं और कई ने तो इस विषय में शोध ग्रंथ भी तैयार किए हैं। भारत के वनवासियों के तो रोम रोम में प्रभु श्री राम बसे हैं। उन्हें प्रभु श्रीराम से अलग ही नहीं किया जा सकता है। यह सोचना भी हास्यास्पद लगता है। प्रभु श्री राम की जड़ें आदिवासियों में बहुत गहरे तक जुड़ी हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि विदेशी मशीनरियों के कुत्सित प्रयासों को विफल करते हुए भारतीय संस्कृति पर हमें गर्व करना होगा। धर्मप्राण भारत सारे विश्व में एक अद्भुत दिव्य देश है। इसकी बराबरी का कोई देश नहीं है क्योंकि भारत में ही प्रभु श्रीराम एवं श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। हमारे भारतवर्ष में भगवान स्वयं आए हैं एवं एक बार नहीं अनेक बार आए हैं। हमारे यहां गंगा जैसी पावन नदी है एवं हिमालय जैसा दिव्य पर्वत है। ऐसे भाग्यशाली कहां हैं अन्य देशों के लोग।

अन्य देशों की कम्पनियों का अधिग्रहण कर रही हैं भारतीय कम्पनियां

हाल ही के समय में कई भारतीय कम्पनियां बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का स्वरूप ग्रहण करती नजर आ रही हैं। कुछ भारतीय कम्पनियां अन्य देशों की कम्पनियों में न केवल अपना पूंजी निवेश बढ़ा रही हैं बल्कि कुछ कम्पनियां अन्य देशों की कम्पनियों का अधिग्रहण भी कर रही हैं। एक महत्वपूर्ण तथ्य उभरकर सामने आ रहा है कि भारत कई ऐसे देशों, जो आपस में शायद मित्र देश की भूमिका में नहीं हैं इसके बावजूद भारत दोनों देशों, के साथ अपने व्यापारिक रिश्तों को बढ़ाता नजर आ रहा है। उदाहरण के लिए, यूनाइटेड अरब अमीरात, कतर एवं सऊदी अरब आदि देश मिडल ईस्ट में भारत के महत्वपूर्ण व्यापार भागीदार हैं एवं ये देश भारत में भारी राशि का निवेश कर रहे हैं। सऊदी अरब तो भारत में 10,000 करोड़ अमेरिक डॉलर का निवेश करने जा रहा है। परंतु, हाल ही के कुछ वर्षों में मिडल ईस्ट के कुछ देशों के साथ ही, इजराईल के साथ भी भारत के मिलिटरी, राजनैतिक एवं व्यापारिक सम्बंध प्रगाढ़ हुए हैं। न केवल इजराईल की कंपनियां भारत में निवेश कर रही हैं बल्कि कई भारतीय कम्पनियां भी इजराईली कम्पनियों में निवेश कर रही हैं एवं कुछ कम्पनियों का अधिग्रहण कर रही हैं। इस प्रकार भारत के अरब देशों के साथ साथ इजराईल के साथ भी प्रगाढ़ व्यापारिक रिश्ते कायम हो गए हैं। कई भारतीय कम्पनियां इजराईल के स्टार्ट अप में भारी मात्रा में निवेश करती दिखाई दे रही हैं। चूंकि भारत का सकल घरेलू उत्पाद अब लगभग 4 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को छूने जा रहा है, अतः भारतीय कम्पनियां अब इस स्थिति में पहुंच गई हैं कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की तरह अन्य देशों में विभिन्न क्षेत्रों में कम्पनियों का अधिग्रहण कर सकें अथवा इन विदेशी कम्पनियों में अपना पूंजी निवेश बढ़ा सकें। इस दृष्टि से भारत की कुछ बड़ी कम्पनियां जैसे रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (मुकेश अम्बानी समूह), इनफोसिस, विप्रो, टाटा समूह, अडानी समूह आदि इजराईल की कम्पनियों का अधिग्रहण करने में सफलता हासिल कर रही हैं।

हाल ही में रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, इजराईल में सेमीकंडक्टर चिप का निर्माण करने वाली एक कम्पनी टावर सेमीकंडक्टर नामक कम्पनी का अधिग्रहण करने का प्रयास कर रही है। सेमीकंडक्टर चिप के उपयोग हेतु भारत में बहुत बड़ा बाजार उपलब्ध है, इससे इस उत्पाद के लिए अन्य देशों पर भारत की निर्भरता कम होगी। इजराईल की उक्त कम्पनी पूर्व में ही भारी मात्रा में सेमीकंडक्टर चिप का निर्माण कर रही है। पूर्व में अमेरिकी कम्पनी इंटेल ने उक्त कम्पनी को 540 करोड़ अमेरिकी डॉलर में खरीदने का प्रयास किया था परंतु इंटेल को इस कार्य में सफलता नहीं मिल सकी थी। परंतु, अब भारत की रिलायंस इंडस्ट्रीज इस कम्पनी को खरीदने का प्रयास कर रही है। टावर सेमीकंडक्टर वर्ष 2009 में केवल 30 करोड़ अमेरिकी डॉलर का व्यापार करती थी परंतु यह वर्ष 2022 में इस कम्पनी का व्यापार बढ़कर 168 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर गया है। अतः यह कम्पनी अत्यधिक तेज गति से प्रगति कर रही है। भारत में दवाईयों का निर्माण करने वाली एक कम्पनी सन फार्मा ने भी इजराईल की टेरो फार्मा नामक एक कम्पनी को अपनी सहायक कम्पनी बना लिया है। इससे भारतीय सन फार्मा कम्पनी का विस्तार इजराईल में भी हुआ है। सन फार्मा को नई तकनीकी को विकसित करने में भी सहायता मिली है। इसी प्रकार, भारतीय कम्पनी अदानी पोर्ट्स एंड लाजिस्टिक्स ने इजराईल के सबसे बड़े हाईफा पोर्ट का विस्तार करने का कार्य हाथ में लिया है। इस विस्तार के कार्य पर 115 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि खर्च होगी। वर्ष 2021 में इजराईल के कुल विदेशी व्यापार का लगभग 56 प्रतिशत हिस्सा इसी पोर्ट के माध्यम से हो रहा था।

टाटा समूह की टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) नामक सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनी भी इजराईल में अपने व्यापार का लगातार विस्तार कर रही है। भारत की इनफोसिस कम्पनी ने इजराईल की सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की पनाया नामक कम्पनी का 20 करोड़ अमेरिकी डॉलर में अधिग्रहण कर लिया है।

भारत का टाटा समूह इजराईल के एयर स्पेस में कार्य कर रही कम्पनियों एवं सुरक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही कम्पनियों में अपना निवेश बढ़ा रहा है ताकि इन क्षेत्रों में इजराईल की कम्पनियों के साथ मिलकर कार्य किया जा सके। इजराईल के पास सुरक्षा उपकरण बनाने की नवीनतम तकनीक उपलब्ध है। भारत एवं इजराईल अब टैंक्स एवं राडार के निर्माण का कार्य साथ मिलकर करने जा रहे हैं। वैसे भी भारत एवं इजराईल के बीच मिलिटरी सैन्य समझौता पूर्व में ही किया जा चुका है। इसी प्रकार के समझौते, उद्योग के क्षेत्र में रिसर्च, आर्थिक विकास के लिए एक दूसरे के साथ भागीदारी, विशेष रूप से स्वास्थ्य, एयरो स्पेस एवं इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों में भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से भी किए जा रहे हैं। आरटीफिशियल इंटेलिजेन्स के क्षेत्र में निजी क्षेत्र द्वारा किए जा रहे निवेश के मामले में अमेरिका, चीन एवं यूनाइटेड किंगडम के बाद इजराईल, पूरे विश्व में, चौथे स्थान पर है। अतः भारत की इजराईल के साथ व्यापार के क्षेत्र में बढ़ती भागीदारी का लाभ भारत को भी मिलने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है।

इजराईल में भारतीय इंजीनीयरों की संख्या भी तेजी से बढ़ती जा रही है। आज इजराईल में सॉफ्टवेयर विकसित करने हेतु 18,000 से अधिक इंजीनियर कार्य कर रहे हैं और यह संख्या अमेरिका में कार्य कर रहे इंजीनियरों की तुलना में बहुत कम जरूर है परंतु अब तेजी से भारतीय इजनीयरों की मांग इजराईल में बढ़ रही है। सुरक्षा के क्षेत्र में भी इजराईल भारत का एक महत्वपूर्ण भागीदार है। भारत इजराईल से हाई क्वालिटी ड्रोन, मिसाईल, एवं अन्य उपकरण आदि खरीदता है। इजराईल-हम्मास युद्ध के बाद से इजराईल में कार्य कर रहे फिलिस्तिनियों को इजराईल से बाहर निकाल दिया गया है। अतः अब इजराईल ने एक लाख भारतीय कामगारों की मांग भारत सरकार से की है। उधर, ताईवान ने भी एक लाख भारतीय कामगारों की मांग की है। अब विभिन्न देशों में भारतीय कामगारों की मांग भी बढ़ती जा रही है।

भारतीय कम्पनियां इसी प्रकार ब्रिटेन की कम्पनियों में भी अपना निवेश बढ़ा रही हैं। टाटा समूह ने ब्रिटेन की कोरस नामक कम्पनी में 217 करोड़ यूरो का पूंजी निवेश किया है। रिलायंस समूह ने बैटरी का निर्माण करने वाली एक फरडीयन नामक कम्पनी में 10 करोड़ यूरो का पूंजी निवेश किया है। टाटा समूह ने टेटली नामक कम्पनी में 4 करोड़ से अधिक यूरो का पूंजी निवेश किया है। टाटा मोटर्स ने जगुआर लैंड रोवर्स नामक कम्पनी का अधिग्रहण कर लिया है एवं टाटा मोटर्स 400 करोड़ यूरो का अतिरिक्त पूंजी निवेश इस कम्पनी में करने जा रही है। इसी प्रकार के पूंजी निवेश करते हुए सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की विभिन्न भारतीय कम्पनियां जैसे विप्रो एवं इनफोसिस आदि, भी ब्रिटेन की कम्पनियों का अधिग्रहण कर रही हैं। टाटा केमिकल्स लिमिटेड भी कुछ अन्य कम्पनियों में अपना पूंजी निवेश बढ़ा रही है। यूनाइटेड किंगडम के लिए, भारत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का दूसरा सबसे बड़ा स्त्रोत बन गया है। आज भारत की 954 कम्पनियां यूनाइटेड किंगडम में कार्य कर रही हैं एवं वहां 106,000 नागरिकों को रोजगार प्रदान कर रही हैं।

भारतीय कम्पनियों द्वारा इजराईल एवं ब्रिटेन की कम्पनियों के अधिग्रहण एवं इन कम्पनियों में किए जाने वाले पूंजी निवेश से भारतीय कम्पनियों की साख पूरे विश्व में बढ़ रही है एवं अब कुछ भारतीय कम्पनियां भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की श्रेणी में गिनी जाने लगी हैं।

चापलूसी संस्कृति से चमक खोती कांग्रेस

कांग्रेस में शीर्ष नेतृत्व के प्रति चापलूसी की पुरानी परंपरा रही है, इस परंपरा को कांग्रेसी नेता पार्टी की संस्कृति की तरह से अपनाते रहे हैं। ऐसे अनेक नेता हुए हैं, जिन्होनें उस परंपरा को परवान चढ़ाने की मिसाल कायम करके सुर्खियां बटोरीं हैं, लेकिन इससे सबसे सशक्त एवं पुरानी राजनीतिक पार्टी का क्या हश्र हो रहा है, इस बात को देखने का साहस पार्टी के भीतर किसी नेता में नहीं है। यही कारण है कि राष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी के बाद सर्वाधिक वोट बैंक वाली पार्टी होने के बावजूद वह कोई सार्थक परिणाम एवं प्रदर्शन नहीं दिखा पा रही हैं। हाल ही में सम्पन्न पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में उसने करारी हार का सामना किया है। इन राज्यों में हुए चुनावों में या तो कांग्रेस की सरकार जाती रही या विपक्ष में होने का बावजूद भी वो वहां कुछ खास कमाल नहीं कर सकी। राहुल गांधी के कांग्रेस अध्यक्ष रहते हुए पार्टी 2019 के लोकसभा चुनाव में कोई खास कमाल नहीं कर सकी। पूर्व में सम्पन्न हुई राहुल की भारत जोड़ो यात्रा की भांति आगामी न्याय यात्रा कोरा चापसूसों का जमावड़ा होकर रह जाये तो कोई आश्चर्य नहीं है।

भारतीय राजनीति के अमृतकाल तक पहुंचे शासन में से लगभग पचास साल कांग्रेस का राज रहा है। प्रश्न है कि ऐसे क्या कारण है कि अब कांग्रेस सत्ता से दूर होती जा रही है। कद्दावर एवं राजनीतिक खिलाड़ियों की पार्टी होकर भी वह अपना धरातल खोती जा रही है। इसका कारण परिवारवाद एवं चापलूसी राजनीतिक संस्कृति ही है। इसी कारण अनेक पार्टी-स्तंभ नेता पार्टी छोड़कर जा चुके हैं। बावजूद इसके पार्टी कोई सबक लेने को तैयार नहीं है। कांग्रेस अगर इस गलतफहमी में जीना चाहती है कि वंशवादी नेतृत्व ही उसका उद्धार करेगा तो उसे ऐसी गलतफहमी पालने का पूरा अधिकार है, लेकिन उसके परिणाम भी उसे झेलने ही होंगे। ऐसा नहीं कि पार्टी से जुड़े हर ऊपर से नीचे तक के कार्यकर्ता एवं नेता को उचित अनुचित का बोध नहीं है। वे सब कुछ जानते हुए भी मक्खी निगलते हैं? आखिर क्यों? इसीलिए कि जिंदगी भर चापलूसी करते-करते जी-हूजुरी या चमचागिरी करना ही उनका बोध रह गया है।

नेता को सारे अधिकार समर्पित करके हमारे देश के पार्टी कार्यकर्ता अपनी बुद्धि एवं विवेक को स्थायी तौर पर निस्तेज एवं गूंगा बना देते हैं। इसी के चलते लोकतंत्र की ओट में नेतातंत्र पनपने लगता है। उसका आखरी अंजाम होता है, राजनीति का पतन। अपनी कुर्सी बचाने के लिए नेता अपनी पार्टी, सरकार, संसद और यहां तक कि देश को भी दांव पर लगा देता है। चापलूसी खुद को तो आगे बढ़ा देती है, लेकिन बाकी सबको पीछे ढकेल देती है। चापलूसी का मक्खन राजनीति की राह को इतनी रपटीली बना देता है कि उस पर नेता, पार्टी और देश, सभी चारों खाने चित हो जाते हैं। चापलूसी का दरवाजा खुलते ही प्रश्नों की खिड़कियां अपने आप बंद हो जाती हैं। लगातार रसातल ही ओर जा रही कांग्रेस की इस स्थिति का कारण भी यही है। कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व कब समझेगा कि चापलूसी एक नकली सिक्का है और नकली सिक्कों की बदौलत उन्नति नहीं, अवनति ही झेलनी पड़ती है।

कांग्रेस को चापलूसी का घुन खोखला कर रहा है। यूं तो प्रारंभ से ही कांग्रेस चापलूसियों का गिरोह रही है। राजनीति की द्वंद्वात्मकता को समाप्त करने में चापलूसी मुख्य भूमिका निभाती है। चापलूसी ने भारतीय राजनीति को वंशवादी, सम्प्रदायवादी, जातिवादी बना दिया है। नेता का हित ही पार्टी का हित है, देश का हित है। इस संकीर्ण चरित्र ने पार्टियों में आंतरिक लोकतंत्र को मरणासन्न कर दिया

है। अगर पार्टियों में आंतरिक लोकतंत्र नहीं है तो वह देश में कैसे रह सकता है? संकट की घड़ी में वह धराशायी हो जाता है। हमारे आज के नेता कोई महात्मा गांधी की तरह नहीं हैं कि उनके सद्गुणों को उनके अनुयायी लोग अपने जीवन में उतारे। नेता वैसा आग्रह करते भी नहीं और अनुयायी वैसा करना जरूरी भी नहीं समझते। इसीलिए हमारी राजनीति ऊपर से चमकदार और अंदर से खोखली होती जा रही है। जो अपने इर्द-गिर्द चापलूस लोगों की भीड़ देखने के आदी होते हैं, उन्हें हर जगह यही अपेक्षित होता है। आज इंडिया गठबंधन में बिखराव का भी बड़ा कारण यही चापलूसी संस्कृति है। कांग्रेस में चापलूसी का इतिहास पुराना रहा है। अपने नेता का महिमामंडन करने के लिये कार्यकर्ता क्या-क्या नहीं करते एवं कहते हैं। कभी तत्कालीन कपड़ा मामलों के मंत्री रहे शंकरसिंह वाघेला ने महात्मा गांधी के बाद भारतीय इतिहास में त्याग करने वाले लोगों में सोनिया गांधी को माना। वहीं सलमान खुर्शीद ने कहा था कि सोनिया गांधी सिर्फ राहुल गांधी की मां नहीं हैं। हम सब की मां हैं। वे सारे देश की मां हैं!ह्ल संवेदनशील भारतीय इससे चौंके ही नहीं, बुरी तरह क्रोधित भी हुए हैं। यह भारत का अपमान था, यह ह्यमांह्ल जैसे सर्वोच्च रिश्ते का अपमान था। लेकिन अपमान करने में कांग्रेस के कार्यकर्ता ही नहीं, खुद सोनिया, राहुल एवं अन्य नेताओं ने कोई कमी नहीं रखी। राहुल गांधी जैसे नेता ने प्रधानमंत्री को पनौती करार दे दिया। वनडे विश्व कप फाइनल में भारत की हार के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने प्रधानमंत्री को जेबकतरा भी करार दिया। इसके अलावा उन्होंने यह भी समझाने की कोशिश की कि आप जो कुछ खरीदते हैं उसका पैसा सीधे अदाणी की जेब में जाता है। ऐसे अनेक उदाहरण है जिसमें कांग्रेस के नेताओं ने मयार्दा, शालीनता एवं शिष्टता का चीरहरण ही कर दिया। पार्टी के किसी भी कार्यकर्ता में यह दम नहीं कि वह अपने नेताओं से पूछे कि आप देश के प्रधानमंत्री के लिये विषवमन करके किस तरह पार्टी का हित कर रहे हैं?

बात केवल कांग्रेस की ही नहीं, सभी दलों की है। दलों में चापलूसी गहरी पैठ गयी है। लगातार पांव पसार रही इस विसंगति के कारण अनेक दल आज अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बचाने की जद्दोजहद में लगे हैं। जिन दलों ने इस विसंगति से दूरी बनायी, वे लगातार अपनी राजनीतिक जमीन को मजबूत बना रहे हैं। राजनीति के इस चापलूसीकरण के कारण ही देश के श्रेष्ठ और स्वाभिमानी लोग राजनीति से परे रहते हैं। राजनीति में घुसने और आगे बढ़ने के लिए सिद्धान्त एवं मयार्दाहीन नेताओं के आगे इतनी नाक रगड़नी पड़ती है कि जिन लोगों में देश-सेवा एवं शुद्ध- राजनीति की ललक है, वे भी घर बैठना ज्यादा सही समझते हैं। नेतागण केवल उन्हीं लोगों को अंदर घुसने देते हैं और आगे बढ़ाते हैं, जो उनके निजी स्वार्थों की पूर्ति करें। अनेक नामी-गिरामी उद्योगपति, पत्रकार, फिल्म अभिनेता और विद्वान भी राजनीति में गए हैं, लेकिन उन्हें इसीलिए स्वीकार किया गया है कि वे साफ-साफ या चोरी छिपे किसी नेता की चमचागिरी करते रहे हैं। उनसे अधिक प्रसिद्ध और उनसे अधिक योग्य लोग अपने घर बैठे हैं।

चापलूसी के घेराबंदी का ही परिणाम है कि कांग्रेस में सही को सही एवं गलत को गलत ठहराने का निर्णय लेने वाला कोई साहसी नेता नहीं है। यही कारण है कि राहुल गांधी मोदी विरोध के नाम पर देश के विरोध पर उतर जाते हैं। वे इस तरह का आचरण इसीलिए करते हैं, क्योंकि उन्हें पार्टी संचालन एवं राजनीतिक परिपक्वता के तौर-तरीकों का कोई अनुभव नहीं। उनकी तरह सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी भी कोई जिम्मेदारी लिए बिना पर्दे के पीछे से सब कुछ करने में ही यकीन रखती हैं। कांग्रेस की मजबूरी यह है कि वह गांधी परिवार के बिना चल नहीं सकती। कांग्रेस नेताओं की भी यह विवशता है कि अपने नेता के बयानों को सही एवं जायज ठहराने में सारी हदें लांघ जाते हैं। लेकिन, प्रश्न यह है कि क्या दुश्मन राष्ट्र से जुड़ी स्थितियों पर बोलते हुए वह मात्र भारत के विपक्षी दल के नेता होते हैं? क्या उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि वह भारत का भी प्रतिनिधित्व कर रहे हैं? यह समस्या मात्र राहुल गांधी की नहीं है। पूरा विपक्ष यह नहीं समझ पा रहा है कि सत्ताधारी दल के विरोध और देश के विरोध के बीच फर्क है। सत्ताधारी दल का विरोध करना स्वाभाविक है, लेकिन उस लकीर को नहीं पार करना चाहिए, जिससे वह देश का विरोध बन जाए। ऐसे बयानों से किस पर और कैसे प्रभाव पड़ता है। सरकार और राष्ट्र के विरोध के बीच अंतर समझना भी आवश्यक है।

अपराधों से जूझती आधी-आबादी

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो प्रतिवर्ष महिलाओं पर अपराधों की रिपोर्ट जारी करता है लेकिन इससे प्रेरित होकर कहीं कोई कार्रवाई होती नहीं दिखती। विचित्र यह है कि महिलाओं पर होने वाले अपराधों में उत्तर भारत के राज्य हर बार बाजी मार लेते हैं। क्या कहते हैं एनसीआरबी के ताजा आंकड़े? बता रहे हैं वरिष्ठ पत्रकार योगेश कुमार गोयल।

एनसीआरबी (राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो) की नवीनतम रिपोर्ट में एक बार फिर महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों की चिंताजनक तस्वीर उभरकर सामने आई है। इस रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2022 में महिलाओं के विरुद्ध आपराधिक घटनाओं के 4,45,256 मामले दर्ज किए गए, जबकि 2021 में यह आंकड़ा 4,28,278 और 2020 में 3,71,503 था। महिलाओं के विरुद्ध आपराधिक घटनाओं के ये मामले 2021 की तुलना में करीब चार प्रतिशत ज्यादा हैं। आंकड़ों से स्पष्ट है कि सरकार महिला सशक्तिकरण का कितना भी दावा करे, वास्तविकता यही है कि महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों के मामलों में कोई सुधार नहीं आया है। उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में महिलाओं के खिलाफ अपराध सबसे ज्यादा बढ़े हैं, जबकि दिल्ली में महिलाओं के खिलाफ अपराध की दर सर्वाधिक बताई गई है। दूसरे राज्यों के मुकाबले उत्तरप्रदेश में महिलाओं के खिलाफ अपराधों के मामलों में सर्वाधिक प्राथमिकी दर्ज हुई हैं।

महिलाओं के खिलाफ अपराध में दिल्ली लगातार तीसरे साल 19 महानगरों में सबसे आगे है। सभी राजनीतिक दल चुनावों में घोषणा करते हैं कि सत्ता में आने के बाद वे महिलाओं की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित करेंगे, लेकिन हकीकत इससे कोसों दूर है। महिलाओं के प्रति अपराधों पर एनसीआरबी के आंकड़ों से साफ पता चलता है कि महिलाएं स्वयं को कहीं भी सहज और सुरक्षित महसूस नहीं करतीं। देश में शायद ही कोई ऐसा राज्य हो, जहां महिलाओं के खिलाफ अपराधों में बढ़ोतरी न हुई हो। विडंबना है कि महिलाओं पर अपराध के मामलों में अधिकतर पति, प्रेमी, रिश्तेदार या कोई अन्य करीबी शख्स ही आरोपी निकले। इन मामलों में महिलाओं के पति या रिश्तेदारों द्वारा 31.4 फीसद क्रूरता, 19.2 फीसद अपहरण, 18.7 फीसद बलात्कार की कोशिश और 7.1 फीसद बलात्कार करने के मामले शामिल हैं। रिपोर्ट के मुताबिक देश में बलात्कार के कुल 31,516 मामले दर्ज किए गए, जिनमें सर्वाधिक 5399 मामले राजस्थान में, 3690 मामले उत्तरप्रदेश, 3029 मध्यप्रदेश, 2904 महाराष्ट्र और 1787 मामले हरियाणा में दर्ज किए गए। महिलाओं के प्रति अपराध के मामले में देश की राजधानी दिल्ली सबसे आगे है, जहां 2022 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 14247 मामले दर्ज किए गए। दिल्ली और राजस्थान जहां महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित राज्य हैं, वहीं

दहेज के लिए जान लेने वालों में पहले स्थान पर उत्तरप्रदेश और दूसरे पर बिहार है। उत्तरप्रदेश में दहेज के लिए 2138 और बिहार में 1057 महिलाओं की हत्या कर दी गई, जबकि मध्यप्रदेश में 518, राजस्थान में 451 और दिल्ली में 131 महिलाओं की हत्या दहेज के लिए की गई। एनसीआरबी के अनुसार प्रति एक लाख जनसंख्या पर महिलाओं के खिलाफ अपराध की दर 2021 में 64.5 फीसद से बढ़कर 2022 में 66 फीसद हो गई, जिसमें से 2022 के दौरान 19 महानगरों में महिलाओं के खिलाफ अपराध के कुल 48,755 मामले दर्ज किए गए। ये 2021 के 43,414 मामलों की तुलना में 12.3 फीसद ज्यादा हैं। महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों को लेकर अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि तमाम दावों, वादों और नारों के बाद भी आखिर देश में ऐसे अपराधों पर लगाम क्यों नहीं लग पा रही है? कितनी चिंतनीय स्थिति है कि जिस भारतीय संस्कृति में नारी को देवी के रूप में पूजा जाता है, वही नारी घर में भी सुरक्षित नहीं है। परिजनों के हाथों घरेलू हिंसा, दहेज हत्या, झूठी शान के लिए हत्या, बलात्कार और सहजीवन में जान गंवाने के मामले में स्थिति काफी दयनीय है। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि महिलाएं न परिवार में, न आस-पड़ोस में और न ही बाहर के वातावरण में खुद को पूरी तरह सुरक्षित महसूस करती हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग के आंकड़े देखें तो 2023 के 19 सितंबर तक ही महिलाओं के खिलाफ अपराध की कुल 20,693 शिकायतें मिलीं, जिनके इस वर्ष के अंत तक बढ़ने की संभावना है। वर्ष 2022 में आयोग को 30,957 शिकायतें मिली थीं, जो 2014 के बाद सर्वाधिक थी। वर्ष 2014 में 30,906 और 2021 में महिलाओं के खिलाफ अपराध की 30 हजार से ज्यादा शिकायतें मिली थी। आयोग ने तेजाब हमले, महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध, दहेज हत्या, यौन शोषण और दुष्कर्म जैसी कुल 24 श्रेणियों में शिकायत दर्ज की।

दिल्ली और राजस्थान जहां महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित राज्य हैं, वहीं दहेज के लिए जान लेने वालों में पहले स्थान पर उत्तरप्रदेश और दूसरे पर बिहार है। उत्तरप्रदेश में दहेज के लिए 2138 और बिहार में 1057 महिलाओं की हत्या कर दी गई, जबकि मध्यप्रदेश में 518, राजस्थान में 451 और दिल्ली में 131 महिलाओं की हत्या दहेज के लिए की गई। एनसीआरबीह्न के अनुसार प्रति एक लाख जनसंख्या पर महिलाओं के खिलाफ अपराध की दर 2021 में 64.5 फीसद से बढ़कर 2022 में 66 फीसद हो गई, जिसमें से 2022 के दौरान 19 महानगरों में महिलाओं के खिलाफ अपराध के कुल 48,755 मामले दर्ज किए गए। ये 2021 के 43,414 मामलों की तुलना में 12.3 फीसद ज्यादा हैं। महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों को लेकर अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि तमाम दावों, वादों और नारों के बाद भी आखिर देश में ऐसे अपराधों पर लगाम क्यों नहीं लग पा रही है?

सर्वाधिक शिकायतें गरिमा के साथ जीने के अधिकार को लेकर दर्ज की गई, उसके बाद घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, छेड़खानी और बलात्कार की शिकायतें हैं। दिल्ली में निर्भया कांड के बाद महिलाओं के प्रति अपराधों पर लगाम कसने के लिए जिस प्रकार कानून सख्त किए गए, उससे लगा था कि समाज में संवेदनशीलता बढ़ेगी और ऐसे कृत्यों में लिप्त असामाजिक तत्त्वों के हौसले पस्त होंगे, पर शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता हो, जब महिला हिंसा से जुड़े अपराधों के मामले सामने न आते हों। ऐसे अधिकांश मामलों में प्रायः पुलिस-प्रशासन का भी गैर-जिम्मेदाराना रवैया दिखता है। यह निश्चित रूप से कानून-व्यवस्था और पुलिस- प्रशासन की उदासीनता का ही नतीजा है कि महिलाओं के खिलाफ अपराध करने वालों में शायद ही कभी खौफ दिखता हो। कानूनों में सख्ती, महिला सुरक्षा के नाम पर कई तरह के कदम उठाने और समाज में आधी-दुनिया के आत्मसम्मान को लेकर बढ़ती संवेदनशीलता के बावजूद आखिर ऐसे क्या कारण हैं कि बलात्कार के मामले हों, छेड़छाड़, मयार्दा हनन या फिर अपहरण, क्रूरता, आधी दुनिया के प्रति अपराधों का सिलसिला थम नहीं रहा है? कड़े कानूनों के बावजूद असामाजिक तत्त्वों पर अपेक्षित कार्रवाई नहीं होती। स्पष्ट है, केवल कानून कड़े कर देने से महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों पर लगाम नहीं कसी जा सकेगी। इसके लिए जरूरी है कि सरकारें प्रशासनिक मशीनरी को चुस्त-दुरुस्त करने के साथ उसकी जबाबदेही सुनिश्चित करें। ऐसे मामलों में प्रायः पुलिस-प्रशासन की जिस तरह की भूमिका सामने आती रही है, वह काफी हद तक इसके लिए जिम्मेदार है। पुलिस किस प्रकार ऐसे अनेक मामलों में पीड़िताओं को ही परेशान करके उनके जले पर नमक छिड़कने का काम करती रही है, ऐसे उदाहरण अक्सर सामने आते रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों के मद्देनजर अपराधियों के मन में पुलिस और कानून का भय कैसे उत्पन्न होगा और कैसे महिलाओं के खिलाफ अपराधों में कमी होगी?

कुपोषित विकास एवं कुपोषण की त्रासदी

कुपोषण और भुखमरी से जुड़ी ताजा रिपोर्ट न केवल चौंकाने बल्कि सरकारों की नाकामी को उजागर करने वाली हैं। इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि एक ओर विकास और अर्थव्यवस्था की भावी सुखद तस्वीर की चमक की बात की जा रही हो और दूसरी ओर देश में बच्चों के बीच कुपोषण की समस्या के गहराते जाने के आंकड़े सामने आएं। जबकि अमूमन हर कुछ रोज बाद इस तरह की बातें शीर्ष स्तर से कही जाती रहती हैं कि बच्चे चूंकि भविष्य की उम्मीद और बुनियाद हैं, इसलिए शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने सहित बाकी मामलों में भी उनके जीवन-स्तर में बेहतरी जरूरी है। लेकिन ताजा कुपोषण एवं भुखमरी के आंकड़े शासन-व्यवस्था की एक शर्मनाक विवशता है। लेकिन इस विवशता को कब तक ढोते रहेंगे और कब तक देश में कुपोषितों का आंकड़ा बढ़ता रहेगा, यह गंभीर एवं चिन्ताजनक स्थिति है। लेकिन ज्यादा चिंताजनक यह है कि तमाम कोशिशों और दावों के बावजूद कुपोषितों और भुखमरी का सामना करने वालों का आंकड़ा पिछली बार के मुकाबले हर बार बढ़ा हुआ ही निकलता है।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अनुसार देश में तैंतीस लाख से ज्यादा बच्चे कुपोषित हैं। इनमें से आधे से अधिक बच्चे अत्यंत कुपोषित की श्रेणी में आते हैं। ये आंकड़े पिछले साल विकसित पोषण ऐप पर पंजीकृत किए गए, ताकि पोषण के नतीजों पर निगरानी रखी जा सके। फिलहाल आंगनवाड़ी व्यवस्था में शामिल करीब 8.19 करोड़ बच्चों में से चार फीसद से ज्यादा बच्चों को कुपोषित के दायरे में दर्ज किया गया है। लेकिन न सिर्फ यह संख्या अपने आप में चिंताजनक है, बल्कि इससे ज्यादा गंभीर पक्ष यह है कि पिछले साल नवंबर की तुलना में इस साल अक्टूबर में गंभीर रूप से कुपोषित बच्चों की तादाद में इक्यानबे फीसद की बढ़ोतरी हो गई है। विचित्र यह भी है कि बच्चों के बीच कुपोषण की समस्या जिन राज्यों में सबसे ज्यादा है, उनमें शीर्ष पर महाराष्ट्र है। दूसरे स्थान पर बिहार और तीसरे पर गुजरात है। बाकी राज्यों में भी स्थिति परेशान करने वाली है, मगर यह हैरानी की

बात है कि बिहार के मुकाबले महाराष्ट्र और गुजरात जैसे विकसित राज्यों में संसाधन और व्यवस्था की स्थिति ठीक होने के बावजूद बच्चों के बीच कुपोषण चिंताजनक स्तर पर है। एक अन्य अध्ययन में कहा गया है कि भुखमरी एवं कुपोषण के खिलाफ दशकों से हुई प्रगति कोरोना महामारी की वजह से प्रभावित हुई है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा भारत सहित पूरे विश्व में भूख, कुपोषण एवं बाल स्वास्थ्य पर चिंता व्यक्त की गई है। यह चिन्ताजनक स्थिति विश्व का कड़वा सच है लेकिन एक शर्मनाक सच भी है और इस शर्म से उबरना जरूरी है। रिपोर्टें बताती हैं कि ऐसी गंभीर समस्याओं से लड़ते हुए हम कहां से कहां पहुंचे है। इसी में एक बड़ा सवाल यह भी निकलता है कि जिन लक्ष्यों को लेकर दुनिया के देश सामूहिक तौर पर या अपने प्रयासों के दावे करते रहे, उनकी कामयाबी कितनी नगण्य एवं निराशाजनक है।

यह सवाल तो उठता ही रहेगा कि इन समस्याओं से जूझने वाले देश आखिर क्यों नहीं इनसे निपट पा रहे हैं?

इसका एक बड़ा कारण आबादी का बढ़ना भी है। गरीब के संतान ज्यादा होती है क्योंकि कुपोषण में आबादी ज्यादा बढ़ती है। विकसित राष्ट्रों में आबादी की बढ़त का अनुपात कम है, अविकसित और निर्धन राष्ट्रों की आबादी की बढ़त का अनुपात ज्यादा है। भुखमरी पर स्टैंडिंग टुगेदर फॉर न्यूट्रीशन कंसोर्टियम ने आर्थिक और पोषण डाटा इकट्ठा किया, इस शोध का नेतृत्व करने वाले सासकिया ओसनदार्प अनुमान लगाते हैं कि जो महिलाएं अभी गर्भवती हैं वो ऐसे बच्चों को जन्म देंगी जो जन्म के पहले से ही कुपोषित हैं और ये बच्चे शुरू से ही कुपोषण के शिकार रहेंगे। एक पूरी पीढ़ी दांव पर है।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अनुसार देश में तैंतीस लाख से ज्यादा बच्चे कुपोषित हैं। इनमें से आधे से अधिक बच्चे अत्यंत कुपोषित की श्रेणी में आते हैं। ये आंकड़े पिछले साल विकसित पोषण ऐप पर पंजीकृत किए गए, ताकि पोषण के नतीजों पर निगरानी रखी जा सके। फिलहाल आंगनवाड़ी व्यवस्था में शामिल करीब 8.19 करोड़ बच्चों में से चार फीसद से ज्यादा बच्चों को कुपोषित के दायरे में दर्ज किया गया है। लेकिन न सिर्फ यह संख्या अपने आप में चिंताजनक है, बल्कि इससे ज्यादा गंभीर पक्ष यह है कि पिछले साल नवंबर की तुलना में इस साल अक्टूबर में गंभीर रूप से कुपोषित बच्चों की तादाद में इक्यानबे फीसद की बढ़ोतरी हो गई है। विचित्र यह भी है कि बच्चों के बीच कुपोषण की समस्या जिन राज्यों में सबसे ज्यादा है, उनमें शीर्ष पर महाराष्ट्र है। दूसरे स्थान पर बिहार और तीसरे पर गुजरात है। बाकी राज्यों में भी स्थिति परेशान करने वाली है।

ग्रामीण किशोरियों को कंप्यूटर साक्षरता से जोड़ना की है जरुरत

जब से टेक्नोलॉजी का विकास हुआ है, पूरी दुनिया एक गाँव के रूप में सिमट गई है। इसमें सबसे बड़ी भूमिका कंप्यूटर की है। आज के समय में कंप्यूटर का ज्ञान होना पहली प्राथमिकता हो गई है। टेक्नोलॉजी के इस दौर में बिना कंप्यूटर के आज किसी भी फील्ड में आगे बढ़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन हो गया है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां कंप्यूटर का इस्तेमाल जरूरी ना बन गया हो। गवर्नमेंट फील्ड हो या प्राइवेट सेक्टर, कोई भी क्षेत्र बिना इसके अधूरा है। जब बात कंप्यूटर की आती है तो यह जानना जरूरी हो जाता है कि आखिर देश और दुनिया में कंप्यूटर साक्षरता दर कितनी है और कितने प्रतिशत लोग कंप्यूटर से आज के समय में जुड़े हैं?

वैसे तो विश्व का बड़ा हिस्सा कंप्यूटर की जानकारी रखता है। भारत की लगभग शहरी आबादी कंप्यूटर से जुड़ी हुई है। परंतु दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों में आज भी कंप्यूटर की साक्षरता दर कम है। विशेषकर पुरुषों की अपेक्षा ग्रामीण महिलाओं और किशोरियां कंप्यूटर की जानकारी से अभी भी दूर हैं। विश्व में सर्वाधिक कंप्यूटर उपयोग वाला देश जहां संयुक्त राष्ट्र अमेरिका है, वहीं अगर भारत की बात की जाए तो इस सूची में भारत का स्थान 19वां है। देश में जहां 59 प्रतिशत पुरुष डिजिटल लिटरेसी हैं, वहीं मात्र 29 प्रतिशत महिलाएं ही कंप्यूटर चलाना जानती हैं। इन आंकड़ों से यह साफ हो जाता है कि कंप्यूटर साक्षरता दर अभी भी भारत में कहीं ना कहीं कम है। इस मामले में महिलाएं तो बहुत पीछे हैं। यह युग कंप्यूटर का है इसलिए महिलाओं और किशोरियों को इसमें दक्ष होना ही पड़ेगा।

लोगों में कंप्यूटर की जानकारी एवं महत्व को बढ़ाने के उद्देश्य से नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ इनफर्मेशन टेक्नोलॉजी के द्वारा साल 2001 में विश्व कंप्यूटर साक्षरता दिवस की भी शुरूआत की गई है। प्रति वर्ष 2 दिसंबर को आयोजित इस दिवस के माध्यम से लोगों को कंप्यूटर साक्षरता की दिशा में जागरूक भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त कई सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं की ओर से कंप्यूटर साक्षरता कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। इस दिशा में भारतीय सेना भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जो जम्मू कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रों के युवाओं विशेषकर किशोरियों को कंप्यूटर की जानकारी देने और उसमें दक्ष करने के उद्देश्य से अपना योगदान दे रही है।

भारतीय सेना की ओर से जम्मू जिला स्थित अखनूर तहसील के सीमावर्ती इलाका खुई मिलान के एक सरकारी हाई स्कूल के छात्र-छात्राओं को तीन माह में

कंप्यूटर कोर्स कराने का प्रोजेक्ट शुरू किया है। इसमें बच्चों को कंप्यूटर की बेसिक जानकारी दी जाएगी ताकि वह इससे न केवल परिचित हो सकें बल्कि भविष्य में इसके माध्यम से रोजगार हासिल कर सकें। इस कोर्स को पूरा करने वाले छात्र-छात्राओं को सर्टिफिकेट भी दिए जाएंगे। इस स्कूल में सेना द्वारा नियुक्त किए गए कंप्यूटर टीचर बलवीर सिंह कहते हैं कि 90 दिनों में हम बच्चों को बेसिक सिखाएंगे और हमारी कोशिश रहेगी कि हर बच्चा इसमें दक्ष हो जाए। उन्होंने बताया कि बड़ी संख्या में छात्राएं उत्साह के साथ इस कोर्स को सीख रही हैं। बलवीर सिंह कहते हैं कि हमारा लक्ष्य है कि हर शहरी क्षेत्रों की तरह ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को भी कंप्यूटर की बेसिक जानकारी अवश्य होनी चाहिए। अन्यथा आज के टेक्नोलॉजी के इस दौर में वह पीछे रह जाएंगे।

इस संबंध में आंचलिक शिक्षा अधिकारी विदुषी गुप्ता का कहना है कि पहले बच्चों को स्वयं आर्मी वाले कंप्यूटर सिखाते थे। लेकिन बच्चे रोज आर्मी वालों के पास जाकर कंप्यूटर नहीं सीख पाते थे। जिसको देखते हुए हमारी आर्मी ने स्कूल को 10 कंप्यूटर डोनेट किया है ताकि बच्चों को कंप्यूटर सीखने दूर न जाना पड़े। इसी हाई स्कूल की एक छात्रा संजीवनी वर्मा कहती है कि मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर है। जिसके कारण मैं कंप्यूटर सीखने कहीं नहीं जा सकती थी। अब भारतीय सेना ने हमारे स्कूल में कंप्यूटर दिए हैं और साथ में उसे सिखाने के लिए टीचर भी दिया है। जो हमें कंप्यूटर सीखा रहे हैं। यह हमारे लिए बहुत लाभदायक साबित हो रहा है। वह कहती है कि आज का भारत डिजिटल हो रहा है। जिस के चलते हमें कंप्यूटर जरूर सीखना चाहिए।

वहीं सीमावर्ती जिला पुंछ के मंगनाड गाँव में एक गैर सरकारी संस्था सेवा भारती ने बच्चों को कंप्यूटर सिखाने के लिए एक सेंटर स्थापित किया है। जहां दो कंप्यूटर दिए गए हैं। इसे सिखाने के लिए संस्था की ओर से एक शिक्षक भी नियुक्त किया गया है। जो प्रतिदिन शाम के समय एक-दो घंटे किशोर और किशोरियों को कंप्यूटर की जानकारी देते हैं। संस्था की यह पहल इस गांव की किशोरियों के लिए वरदान साबित हो रहा है क्योंकि इस गांव में कंप्यूटर साक्षरता दर की बहुत कमी है और महिला कंप्यूटर साक्षरता दर तो ना के बराबर है। इस संबंध में एक 22 वर्षीय स्थानीय किशोर प्रिंस कुमार कहते हैं कि मैं रोज शाम को इस कंप्यूटर सेंटर में एक से दो घंटे सीखने आता हूं। पहले मुझे कंप्यूटर का कुछ भी पता नहीं था। लेकिन अब धीरे-धीरे कंप्यूटर की बहुत सी चीजें सीख गया हूं।

वहीं एक 25 वर्षीय महिला सुरक्षा देवी कहती हैं कि कंप्यूटर की जानकारी के बिना डिजिटल बनना मुश्किल है। वैसे तो आज हर इंसान के पास स्मार्टफोन है। जो एक प्रकार का कंप्यूटर ही है। परंतु कुछ चीज ऐसी हैं जिसे सीखे बिना कंप्यूटर की जानकारी अधूरी है। इसलिए मैंने यहां कुछ बेसिक चीजें सीखी हैं। जिसके चलते आज मुझे इंटरनेट की अच्छी खासी जानकारी हो गई है। आज मैं एमएस वर्ड और एक्सेल पर काम करना सीख गई हूँ। यह जानकारी मुझे भविष्य में सफल बनाएगी। वह कहती हैं कि आज की किशोरियों चाहे वह ग्रामीण क्षेत्रों की ही क्यों न हों, उन्हें कंप्यूटर में साक्षर अवश्य होनी चाहिए क्योंकि यह उन्हें सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण कड़ी साबित होगा।

वहीं सीमावर्ती जिला पुंछ के मंगनाड गाँव में एक गैर सरकारी संस्था सेवा भारती ने बच्चों को कंप्यूटर सिखाने के लिए एक सेंटर स्थापित किया है। जहां दो कंप्यूटर दिए गए हैं। इसे सिखाने के लिए संस्था की ओर से एक शिक्षक भी नियुक्त किया गया है। जो प्रतिदिन शाम के समय एक-दो घंटे किशोर और किशोरियों को कंप्यूटर की जानकारी देते हैं। संस्था की यह पहल इस गांव की किशोरियों के लिए वरदान साबित हो रहा है क्योंकि इस गांव में कंप्यूटर साक्षरता दर की बहुत कमी है और महिला कंप्यूटर साक्षरता दर तो ना के बराबर है।

लिव इन रिलेशन - कानून बनने के बाद भी विरोध जारी

लिव-इन रिलेशनशिप अर्थात ह्यस्वैच्छिक सहवासह्न को हमारे देश में कानूनी मान्यता हासिल हो चुकी है। भारत में लिव-इन रिलेशनशिप को जब कानूनी मंजूरी मिली थी, उस समय बद्री प्रसाद बनाम डायरेक्टर ऑफ कंसॉलिडेशन नामक एक मुकद्दमे में सर्वोच्च न्यायलय ने पहली बार लिव-इन रिलेशनशिप को वैध ठहराया था। इसके बाद 2010 में महिलाओं की सुरक्षा पर चर्चा करते हुए लिव-इन रिलेशनशिप अर्थात ह्यस्वैच्छिक सहवासह्न को कानूनी मान्यता दी गई थी। परन्तु कानूनी मान्यता मिलने के बावजूद लिव-इन रिलेशनशिप में बनने वाले शारीरिक रिश्ते अर्थात बिना शादी किए एक ही घर में एक साथ रहने पर सामाजिक दृष्टिकोण से बार-बार सवाल उठते रहे हैं। लिव-इन रिलेशनशिप कानून के पक्षधर इसे मूलभूत मानवीय अधिकारों और लोगों के व्यक्तिगत जीवन के विषय के रूप में देखते हैं तो वहीं दूसरी तरफ एक बड़ा वर्ग इस व्यवस्था को भारतीय सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विरुद्ध मानता हैं। यह वर्ग इसे गैर पारंपरिक,अनैतिक यहां तक कि अधार्मिक भी मानता है। जबकि अदालत अपने निर्णय में स्पष्ट कर चुकी है कि लिव-इन रिलेशनशिप को पर्सनल ऑटोनॉमी यानी व्यक्तिगत स्वायत्ता के चश्मे से देखने की जरूरत है, ना कि सामाजिक नैतिकता की धारणाओं से। फिर भी लिव-इन रिलेशनशिप को कानूनी मंजूरी मिलने के बावजूद अर्थात 45 वर्षों बाद भी इस कानून के विरुद्ध अभी भी देश के किसी न किसी भाग से स्वर उठते ही रहते हैं। परन्तु लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले जोड़ों को अदालतें यही कहकर संरक्षण देती रही हैं कि ये विषय संविधान के आर्टिकल 21 के तहत दिए राइट टू लाइफ की श्रेणी में आता है। सर्वोच्च न्यायालय तो यहाँ तक कह चुकी है कि शादीशुदा होने के बावजूद लिव-इन रिलेशनशिप में रहना भी कोई गुनाह नहीं है। और इससे भी कोई फर्क. नहीं पड़ता कि शादीशुदा व्यक्ति ने तलाक की कार्रवाई शुरू की है या नहीं।

निश्चित रूप से अदालत का यह फैसला उन मानवाधिकारों की तजुर्मानी करता है जिसके तहत किसी भी व्यस्क व्यक्ति को अपने जीवन व भविष्य के बारे में निर्णय लेने का अधिकार हासिल है। जाहिर है जब किसी व्यस्क को अपनी मजी का कपड़ा पहनने,खाने-पीने,अपने शैक्षिक विषय चुनने,अपना कैरियर चुनकर भविष्य निर्धारित करने जैसे सभी अधिकार हासिल हैं फिर उसे अपना जीवन साथी चुनने जैसा महत्वपूर्ण निर्णय लेने का भी हक होना चाहिये। क्योंकि यह निर्णय जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है। सर्वोच्च न्यायालय ने 2006 के ऐसे ही एक मामले में फैसला देते हुए कहा था कि, वयस्क होने के बाद व्यक्ति किसी के साथ रहने या शादी करने के लिए आजाद है। परन्तु इसी दौरान लिव-इन रिलेशनशिप में ही रहने वालों से

सम्बंधित कई खबरें ऐसी भी आ चुकीं हैं जो घोर अपराधपूर्ण तथा रिश्तों में विश्वासघात या धोखा साबित हुईं। कहने को तो यह नकारात्मक स्थितियां उस वैवाहिक रिश्तों के बाद भी सामने आती हैं जिन्हें पारंपरिक विवाह या ह्यअरेंज मैरिज ह्य कहा जाता है। परन्तु यह भी सच है कि सामाजिक व धार्मिक परम्परानुसार होने वाली शादियों में आने वाले किसी भी उतार चढ़ाव के समय परिवार व समाज बच्चों के साथ खड़ा होता दिखाई देता है। किसी भी पारिवारिक संकट के समय बच्चों के परिजन उनके साथ होते हैं। परन्तु लिव इन रिलेशन शिप में ऐसा नहीं हो पाता। क्योंकि चूँकि लिव-इन रिलेशनशिप अर्थात ह्यस्वैच्छिक सहवासह्ल को हमारे देश की परम्पराओं व मान्यताओं के अनुसार अनैतिक माना गया है इसलिये प्रायः लिव-इन रिलेशनशिप में रहने के इच्छुक लड़के या लड़की दोनों ही के परिजन इस रिश्ते में रहने के लिये शुरू से ही राजी नहीं होते। और यदि राजी होते भी हैं तो बच्चों के दबाव में आकर ही अपने अभिभावकों को इस रिश्ते में रहने के लिये किसी तरह अनमने तरीके से राजी कर लेते हैं। जबकि अदालत ह्यप्री-मैरिटल सेक्सह्ल और ह्यलिव-इन रिलेशनशिपह्ल के संदर्भ अपने एक फैसले में यहां तक कह चुकी है कि -इसमें कोई शक नहीं कि भारत के सामाजिक ढांचे में शादी अहम है, लेकिन कुछ लोग इससे इत्तेफाक नहीं रखते और प्री-मैरिटल सेक्स को सही मानते हैं। आपराधिक कानून का मकसद यह नहीं है कि लोगों को उनके अलोकप्रिय विचार व्यक्त करने पर सजा दें।

लिव-इन-रिलेशनशिप के खिलाफ सबसे अधिक धार्मिक व सामाजिक संगठन तथा खाप पंचायतें मुखरित रही हैं। गत वर्ष चरखी दादरी में आयोजित फोगाट खाप की सर्वजातीय महापंचायत में हिंदू मैरिज एक्ट में बदलाव करने और लिव इन रिलेशनशिप पर रोक लगाने के लिए सर्वसम्मति से फैसला लिया गया था और सरकार से इन मामलों में संज्ञान लेने की मांग की गयी थी। साथ ही यह निर्णय भी लिया गया था कि खाप द्वारा सामाजिक ताना-बाना बनाए रखने व समाज में एकजुटता लाने के लिए जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।

इस पंचायत में सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जन जागरूकता अभियान शुरू करने को लेकर भी कई अहम फैसले लिए गए थे । पंचायत में प्रतिनिधियों ने लिव इन रिलेशनशिप से सामाजिक ताना-बाना बचाने व लिव इन रिलेशनशिप जैसे मामलों पर प्रतिबंध लगवाने की मांग की गयी थी । इसी तरह पिछले दिनों एक बार फिर जींद ज़िले की 23 खाप पंचायतें जाट स्कूल में इकठ्ठा हुई। यहाँ इन 23 खापों की महापंचायत में भी यही निर्णय लिया गया कि लिव इन रिलेशनशिप पर बना कानून सही नहीं है। इसको लेकर खापें बहुत नाराज हैं। इन खापों ने लिव इन रिलेशनशिप कानून को संसद के शीतकालीन सत्र में रद्द करने की मांग भी की है।

अदालत ने जिसतरह सामान्य शादी शुदा जोड़ों को उनके कर्तव्यों व अधिकारों के मद्देनजर कानूनों के माध्यम से संरक्षण प्रदान किया है ठीक उसी तरह लिव इन रिलेशन में रहने वाले जोड़ों को तथा उनके बच्चों के अधिकारों को भी अपनी विस्तृत व्यवस्था देकर संरक्षित किया है। किसी व्यस्क के मानवाधिकार व निजी ज़िंदिगी के नाम पर मिले इस अदालती संरक्षण के बावजूद हमारा भारतीय पारम्परिक समाज चाहे वे खाप पंचायतें हों,साधू संत,धर्म गुरु या मौलवी -काजी किसी भी धर्म के परम्परावादी लोग लिव-इन-रिलेशनशिप की इस व्यवस्था को पचा नहीं पा रहे हैं। यही वजह है कि लिव इन रिलेशन व्यवस्था के पक्ष में अदालती कानून बनने के बाद भी इसका विरोध अभी भी जारी है।

फोन की तरह इंसान होंगे कंट्रोल, होगी दिमाग की हैकिंग!

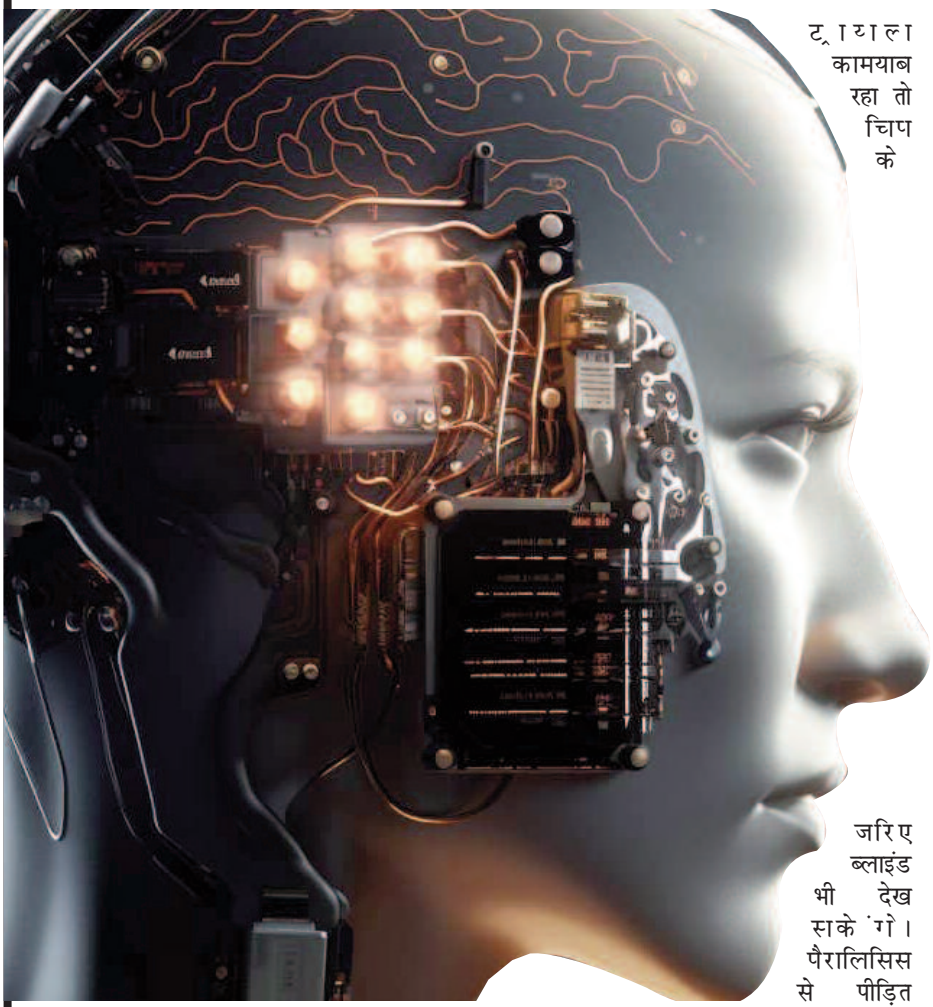

अभी तक आप स्मार्टफोन हैकिंग से परेशान हैं। हैकिंग हर एक यूजर के लिए बड़ा खतरा बना हुआ है, लेकिन क्या ऐसा संभव है कि स्मार्टफोन की तरह ही इंसानों को कंट्रोल किया जा सकता है? इस तरह की संभावनाओं की चचाएं हो रही हैं। इसकी वजह एलन मस्क की नई ब्रेन कंप्यूटर इंटरफेस कंपनी है, जिसका ऐलान एलन मस्क ने पिछले हफ्ते किया है। इसमें एक न्यूरालिंक डिवाइस को इंसानों के दिमाक में फिट किया जाएगा, जिसे लेकर कई तरह के चिंताएं जाहिर की जा रही हैं।एलन मस्क ने 6 साल पहले ब्रेन कंट्रोल इंटरफेसेस स्टार्टअप न्यूरालिंक की स्थापना की थी। एलन मस्क की ब्रेन-चिप कंपनी न्यूरालिंक को अपने पहले ह्यूमन ट्रायल के लिए इंडिपेंडेंट इंस्टिट्यूशनल रिव्यू बोर्ड से रिक्रूटमेंट की मंजूरी मिल गई है। यानी अब न्यूरालिंक ह्यूमन ट्रायल के लिए लोगों की भर्ती कर सकेगी। अगर ह्यूमन ट्रायल कामयाब रहा तो चिप के जरिए ब्लाइंड भी देख सकेंगे। पैरालिसिस से पीड़ित मरीज सोचकर कंप्यूटर चला सकेंगे।

क्या हैं चिंता की बात

दरअसल इसे लेकर ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि इंसानों के दिमाग में चिप फिट करना आसान काम नहीं है। इसके लिए मेडिकल सर्टिफिकेट की जरूरत होगी। डॉक्टर और घर वालों के सुझाव के बाद ही इसे इंसानों के दिमाग में फिट किया जाएगा। यह चिप मेडिकल डिवाइस की तरह काम करेगी। इसका फायदा उन लोगों के लिए होगा, जो लकावग्रस्त हो गए है। इस डिवाइस की मदद से लकवाग्रस्त इंसानों के दिमाग को चिप की मदद से एक्टिव किया जाएगा। साथ ही मेंटली तौर पर बीमार इंसानों के लिए यह डिवाइस फायदेमंद साबित हो सकती है। हालांकि इसके गलत इस्तेमाल से भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

कई स्तर पर हुई टेस्टिंग

इस डिवाइस को वैसे तो कई तरह के टेस्ट से गुजारा गया है। न्यूरालिंक डिवाइस को लेकर पिछले कई सालों से शोध चल रहा है। साथ ही इसके गलत इस्तेमाल को लेकर कई सारे जानवरों पर लैब टेस्ट किया गया है। इस टेक्नोलॉजी पर काम करते हुए करीब 10 साल हो गए हैं। पहली बार ब्रेन कंप्यूटर इंटरफेस की जिक्र साल 1963 में हुआ था। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के न्यूरोसाइंटिस्ट विलियम ग्रे वॉल्टर ने इसका जिक्र किया था।

न्यूरालिंक डिवाइस क्या है?

1. सोचने भर से ऑपरेट होगा कंप्यूटर

न्यूरालिंक ने सिक्के के आकार का एक डिवाइस बनाया है। इसे लिंक नाम दिया गया है। यह डिवाइस कंप्यूटर, मोबाइल फोन या किसी अन्य उपकरण को ब्रेन एक्टिविटी (न्यूरल इम्पल्स) से सीधे कंट्रोल करने में सक्षम करता है। उदाहरण के लिए पैरालिसिस से पीड़ित व्यक्ति के मस्तिष्क में चिप लगाने के बाद वह सिर्फ सोचकर माउस का कर्सर मूव कर सकेगा।

2. कॉस्मेटिक रूप से अदृश्य चिप

न्यूरालिंक ने कहा, हम पूरी तरह से इम्प्लांटेबल, कॉस्मेटिक रूप से अदृश्य ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस डिजाइन कर रहे हैं, ताकि आप कहीं भी जाने पर कंप्यूटर या मोबाइल डिवाइस को कंट्रोल कर सकें। माइक्रोन-स्केल थ्रेड्स को ब्रेन के उन क्षेत्रों में डाला जाएगा जो मूवमेंट को कंट्रोल करते हैं। हर एक थ्रेड में कई इलेक्ट्रोड होते हैं, जिसे वह लिंक इम्प्लांट से जोड़ता है।

3. रोबोटिक प्रणाली डिजाइन की

कंपनी ने बताया कि लिंक पर थ्रेड इतने महीन और लचीले होते हैं कि उन्हें मानव हाथ से नहीं डाला जा सकता। इसके लिए कंपनी ने एक रोबोटिक सिस्टम डिजाइन किया है। यह थ्रेड को मजबूती से और कुशलता से इम्प्लांट कर सकेगा।

एक चिप लाएगी क्रांति

न्यूरालिंक ने कहा, हमारी तकनीक का प्रारंभिक लक्ष्य पैरालिसिस वाले लोगों को कंप्यूटर और मोबाइल डिवाइसेस का नियंत्रण देना है। हम उन्हें इंडिपेंडेंट बनाना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हमारी डिवाइस के जरिए ऐसे लोग फोटोग्राफी जैसी अपनी क्रिएटिविटी भी दिखा सकें। इस तकनीक में कई सारे न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर का इलाज करने की क्षमता है।

महिलाएं इन तरीकों से पर्सनल हाइजीन को कर सकती हैं मेंटेन

शरीर का हाइजीन मेंटेन रखना जरूरी नहीं, बल्कि हमारी जरूरत भी होती है। क्योंकि हाइजीन का ध्यान न रखने पर हमारे शरीर में बैक्टीरिया पनपने लगते हैं। जिससे स्किन इंफेक्शन का खतरा बढ़ जाता है। वहीं पीरियड्स और वजाइनल हेल्थ में कई बदलाव होने से महिलाओं को इंफेक्शन की संभावना हो सकती है। इसलिए जरूरी होता है कि फुल बॉडी हाइजीन पर विशेष ध्यान दिया जाए। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि महिलाओं को शरीर हाइजीन को मेंटेन रखने के लिए किन टिप्स को फॉलो करना जरूरी होता है।

समय पर बदलें पैड

कई महिलाएं पीरियड्स के दौरान पूरा दिन एक ही पैड लगाए रखती हैं। लेकिन क्या आप जानती हैं कि पैड न चेंज करने से आपको वजाइनल इंफेक्शन का खतरा हो सकता है। बता दें कि पैड पर ज्यादा समय गंदा ब्लड लगा रहने से बैक्टीरिया पनपने का खतरा बना रहता है। ऐसे में आपको वजाइनल इंफेक्शन भी हो सकता है। इसलिए हर 4 से 6 घंटे के अंतराल पर पैड जरूर बदलना चाहिए।

न पहनें टाइट पैंट्स

बहुत ज्यादा टाइट पैंट्स पहनने से थाइज और वजाइना में पसीना आने लगता है। जिससे बैक्टीरियल इंफेक्शन होने का खतरा हो सकता है। जिससे आपको खुजली के साथ इरिटेशन भी हो सकता है। इसलिए बहुत ज्यादा देर के लिए टाइट पैंट्स पहनने से बचना चाहिए। खासकर पीरियड्स के दौरान टाइट कपड़े पहनने की गलती न करें। वरना यह क्रैंप्स की वजह भी बन सकती है।

न यूज करें रेजर

हेयर रिमूव का इस्तेमाल करने से त्वचा सॉफ्ट और क्लीन रहती है। लेकिन कई लोग रेजर का इस्तेमाल करने के दौरान सावधानी नहीं बरतते हैं। क्योंकि रेजर का इस्तेमाल करने से पहले त्वचा को अच्छे से हाइड्रेट करना चाहिए। वहीं इसते इस्तेमाल के बाद त्वचा को मॉइस्चराइज करना चाहिए। ऐसा न करने पर आपको खुजली और जलन की समस्या हो सकती है।

न पहनें गीले कपड़े

कई बार नहाने के बाद शरीर को सही से पोंछे बिना कपड़े पहन लेते हैं। ऐसे में आपको बैक्टीरियल इंफेक्शन का खतरा हो सकता है। गीले शरीर पर कपड़े पहनने से शरीर नमी के संपर्क में आता है। जिसके कारण शरीर में खुजली हो सकती है। ऐसा होने पर आपको पूरा दिन अंकम्फर्ट महसूस हो सकता है। इसलिए नहाने के बाद शरीर को अच्छे से जरूर पोछें। फिर शरीर को माइस्चराइज करें।

ब्रेस्ट को करें मॉइस्चराइज

शरीर के हाइजीन को मेंटेन रखने के दौरान ब्रेस्ट हाइजीन को नजरअंदाज कर देते हैं। ऐसे में आपको त्वचा संबंधी समस्या हो सकती है। इसलिए महिलाओं को ब्रेस्ट हाइजीन का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। ऐसे में नहाने के बाद शरीर को अच्छे से पोछें। फिर

बच्चों की डाइट में शामिल करें पोहा, मिलेगी भरपूर एनर्जी

पोहा में पोटेशियम, फाइबर, प्रोटीन और सोडियम आदि अच्छी मात्रा में पाया जाता है। इसके सेवन से न सिर्फ बच्चे का पेट अच्छे से भर जाता है, बल्कि उनके शरीर को इससे ताकत भी मिलती है।

शरीर के लिए पोहा फायदेमंद माना जाता है। सॉफ्ट होने के कारण इसे बच्चे आसानी से खा सकते हैं। वहीं यह पौष्टिकता से भरपूर होने के साथ आसानी से पच भी जाता है। बता दें कि पोहा कई तरह के पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसमें पोटेशियम, फाइबर, प्रोटीन और सोडियम आदि अच्छी मात्रा में पाया जाता है। इसके सेवन से न सिर्फ बच्चे का पेट अच्छे से भर जाता है, बल्कि उनके शरीर को इससे ताकत भी मिलती है। पोहा के सेवन से बच्चे कब्ज और गैस जैसी समस्याओं से राहत पा सकते हैं। पोहा के सेवन से बच्चों को एनर्जी मिलने के साथ वह हेल्दी और फिट रहते हैं। ऐसे में एक साल की उम्र के बच्चों को पोहा दिया जा सकता है। पोहा ग्लूटन फ्री फूड की कैटेगरी में आता है। इसके सेवन से बच्चे को फूड एलर्जी भी नहीं होती है। पोहा को बनाना भी काफी आसान है और आप चाहें तो इसकी पौष्टिकता को बढ़ाने के लिए इसमें सब्जियों को भी एड कर सकती हैं। ऐसे में हम आपको इस आर्टिकल के जरिए बच्चों को पोहा खिलाने के फायदों के बारे में बताने जा रहे हैं।

दूर होगी शारीरिक कमजोरी

पोहा के सेवन से बच्चों के शरीर की कमजोरी दूर होती है और उन्हें ताकत मिलती है। पोहा आयरन से भरपूर होता है। जो बच्चों को एनीमिया जैसी बीमारियों से दूर रखने में सहायक होता है। साथ ही यह बच्चों के शरीर में हीमोग्लोबिन के स्तर को भी मेंटेन करता है।

पाचन-तंत्र के लिए लाभकारी

पोहा बच्चों के पाचन तंत्र को हेल्दी रखने में सहायक होता है। पोहा में मौजूद फाइबर कब्ज की समस्या को कम करने के साथ मल को मुलायम बनाता है। साथ ही यह आसानी से पच जाता है और बच्चों के पाचन तंत्र को हेल्दी रखता है। बता दें कि पोहा के सेवन से बच्चों का पेट हल्का रहता है।

कार्बोहाइड्रेट से भरपूर है पोहा

पोहा के सेवन से न सिर्फ बच्चों के शरीर को एनर्जी मिलती है, बल्कि शरीर की थकावट भी दूर होती है। इसमें भरपूर मात्रा में कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। जो शरीर को एनर्जी देता है और बच्चे को हेल्दी रखने में मदद करता है।

ग्लूटन फ्री

अगर आप भी अपने बच्चे को ग्लूटन फ्री फूड खिलाना चाहती हैं, तो आपको बच्चों की डाइट में पोहा जरूर शामिल करना चाहिए। इसमें ग्लूटन की काफी कम मात्रा पायी जाती है। जिसके कारण बच्चों को फूड एलर्जी होने की संभावना काफी कम होती है।

इम्यूनिटी होगी मजबूत

बच्चों के लिए पोहा सेहत के लिए फायदेमंद होने के साथ यह उनका बीमारियों से भी बचाव करता है। पोहा बनाने के लिए आस इसमें कई तरह की हरी सब्जियों को भी एड कर सकती हैं। इससे बच्चों के शरीर की इम्यूनिटी मजबूत होती है और कई तरह की बीमारियों से उनका बचाव होता है।

व्यक्तित्व

अपने व्यक्तित्व
को ऊंचा उठाने के लिए
झूठ का सहारा लेकर
पीठ पीछे गिराते हैं
किसी ओर का
व्यक्तित्व।
और
बाद में
सफलता का
कुटील हास्य
अपने ही
चेहरे पर दिखाकर
स्वयं ही गिर जाते है
अपने ही नजरों में
अपनों के ही बीच।
******

आदत

हमें आदत है
दूसरों के कंधों का भार सहने की।
फिर हम उठा
लेते हैं
स्वार्थी लोगों के
कंधों का भार
और
फंस जाते है
बार बार
तब याद आता है
आ बैल मुझे मार।
******

नकाब

वें इतने नकाब
अपने ही
चेहरे पर लगाते है
कि,
कौनसा असली है
या नकली,
समझ ही नहीं पाते।
******

क्षणिका

एक लोकप्रिय
समाचार -पत्र में
एक ही समाचार
लगातार
चारों दिन छपकर आया।
जागरुक कवि ने
उस समाचार को कांटकर,
संपादक को पहुंचाया।
संपादक गुरार्या
कवि का नाम

अगले ही दिन
ब्लैक लिस्ट में
डाल दिया,
न छपवाने के लिए।
******

तस्वीर

आज-
हर नेता जी तस्वीर
हमें अलंग ही
दिखने लगी है।
कल तक -
जो नदारत हुए थे
चुनावी कुरुक्षेत्र में
आज वह
चुस्त, तंदुरुस्त
दिखने लगे हैं।
हम चाहते हैं कि -
प्रतिवर्ष चुनाव
होते रहे और
नेताजी की तस्वीर
हमें और
लुभाने लगे।
******

रंग

रंग लेलो, रंग लेलो,
लाल,केशरी,हरा नीला
रंग लेलो रंग लेलो।
मैंने किसी के चेहरे का रंग उड़ते हुए
देखा है।
ऐसा रंग है तुम्हारे पास, नहीं बाबूजी।
मेरे पास है,
केशरी,हरा, लाल
नीला, पीला,
जो अपनी -अपनी
विशेषता बताते हैं।
कोई किसी धर्म
को दशार्ता है,तो
कोई किसी देश को
आज बस। मेरे पास
चेहरे को रंगने रंग है,
बाबूजी,
आप लीजिए,
ऐसे ही रंग को
रंगाइए।
फिर
आप महसूस करेंगे,
होली के साथ
राष्ट्रीय एकात्मकता।

डॉ बालकृष्ण महाजन
कवि एवं पत्रकार
(नेशनल जर्नलिस्ट
एसोसिएशन),130, सुरेंद्र नगर,
नागपुर- 440015, महाराष्ट्र

मेष अष्टम शनि के लिए चांदी का टुकड़ा अपने पास रखें। दशम सूर्य आपके जीवन में विशेष कृपा बनाएगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।प्रतिष्ठा तो मिलेगी। लेकिन धनागमन में थोड़ी परेशानी होगी।मा के महालक्ष्मी रूप की पूजा करें। शुभ अंक 3 रंग हरा और लाल।

बृषभ श्री लुक्ष्मी नारायण की पूजा से धन लाभ होगा। संध्या प्रहर घी का चतुर्मुख दीपक अपने घर के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन जलाए। मंत्र के वेश में छुपे शत्रु से सावधानी की जरूरत है। उत्सव और मांगलिक कार्य की बातें करने का उपयुक्त समय है। शुभ रंग नीला। शुभ अंक 8।

मिथुन शनिबार की संध्या में लड्डू गरीबों में बांटे। सेहत का ध्यान रखें। गुरु की कृपा से भाग्य की बृद्धि होगी।कर्म स्थान का शनि मेहनत के बाद ही सफलता देगा। भगवान श्री सूर्यनारायण को अर्ध्य प्रदान करें। शुभ अंक 1 और शुभ रंग लाल है।

कर्क प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है। सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा। हनुमान जी की आराधना करें। बजरंगबाण का पाठ करें। शुभ अंक 7। शुभ रंग- गुलाबी

सिंह जीवन में आनंद का वातावरण बनाने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें।विद्यार्थी के लिए और प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल अवसर हैं। मन खिन्न रहेगा।बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। शुभ अंक 2 और शुभ रंग सफेद या ऑफ वाइट।

कन्या पंचम शनि करियर के क्षेत्र में अच्छे अवसर देंगे।विद्या व बुद्धि से सफलता प्राप्त होंगे।गुरु के प्रभाव से लीवर या पेट की समस्या रहेगी। महामृत्युंजय मंत्र का जाप या श्रवण करें। शुभ रंग पीला। शुभ अंक 3।

बृश्चिक भाई के लिए समय अनुकूल नही है।बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्बीर घर में रखें। आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है। प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5।

तुला भाग्य का राहु राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। गुरु की कृपा से शत्रु व रोग का नाश होगा। शनि माता के स्वास्थ्य के लिए ठीक नही है।चांदी के पात्र से गाय का कच्चा दूध नदी में बहाएं।अनुकूलता बनी रहेगी। शुभ रंग लाल। शुभ अंक 4।

मकर जिद्द छोड़ना होगा।बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने सेनुक्सान कम होगा।राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है।कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7।

कुम्भ सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी। गुस्सा पर नियंत्रण रखें।दुश्मन से सचेत जरूरी है। नजर बचना होगा।घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नही रहेगा। सफेद कपड़े में सिंधा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधे। शुभ रंग -हरा। शुभ अंक 9।

धनु धन का आगमन होगा। लेकिन सूर्यास्त के बाद दूध व दही का सेवन नही करें। आत्मभिमान से बचना होगा।अहंकार को हावी नही होने दे। हनुमान चालीसा का पाठ करें। शुभ अंक 6। शुभ रंग हरा।

मीन झूठ से नफरत होगी।झूठे लोगों से सामना होगा। लाभ होंगे लेकिन मन के अनुकूल नही।लेकिन मान सम्मान बढेगा। मंगल कार्य के लिए आगे बढ़े।आवश्यकता को कम करें। चोट चपेट से बचना होगा।हल्दी का गांठ अपने पर्स में रखें। ॐ नमो नारायणाय का जाप करें। शुभ रंग-गुलाबी। शुभ अंक 8।

बिहार की प्रसिद्ध मिठाई है लौंगलत्ता

गीता कौर

पत्रकार एवं समाजसेविका उत्तराखंड

बिहार में अनेक मिठाईयां अपनी मधुर स्वाद के लिए जानी जाती है इसी कड़ी में एक मिठाई है लौंगलत्ता

जिसके लजीज स्वाद के कारण अब यह उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल की भी सुप्रसिद्ध है। पश्चिम बंगाल में इसे लौंग लतिका के नाम से भी जाना जाता है। खाने में यह मिठाई बेहद स्वादिष्ट और बनाने में बहुत आसान होती है।

लौंगलत्ता बनाने की सामग्री

आटा लगाने के लिए सामग्रीः-

- 250 ग्राम मैदा
- 1/2 कप देसी घी (मोयन के लिये) या जरुरत के अनुसार

स्टफिंग के लिए सामग्रीः-

- 1 कप मावा
- 1 टेबल स्पून पिसी हुई चीनी
- 1 टेबल स्पून नारियल का बुरादा
- 10 बादाम
- 2 छोटी इलायची पाउडर
- 20 लौंग या आवश्यकता अनुसार
- चाशनी के लिए सामग्रीः-
- 250 ग्राम चीनी
- 2 छोटी इलायची पाउडर
- वेजिटेबल ऑयल (तलने के लिए)

लौंगलत्ता बनाने की विधि -

- स्टेप 1

लौंगलत्ता बनाने के लिए सबसे पहले हम आटा तैयार कर लेंगे।

- स्टेप 2

इसके लिए हम एक परात में मैदा लेंगे। इसमें देसी घी डालेंगे और दोनों हाथों से मसलते हुए खूब अच्छे से मिक्स करेंगे। अब थोड़ा-थोड़ा करते हुए पानी डालेंगे और हल्का सख्त आटा गूँथ कर तैयार कर लेंगे। आप चाहे तो मोयन के लिए देसी घी की जगह और कोई वेजिटेबल ऑयल भी इस्तेमाल कर सकते हैं, किंतु देसी घी का स्वाद मिठाइयों में बहुत ही बेहतरीन आता है। आटे को 10 मिनट के लिए ढककर रख देंगे।

- स्टेप 3

अब हम इसकी स्टफिंग तैयार करेंगे। एक कढ़ाई को गैस पर चढ़ाएंगे। इसमें मावा को हाथों से तोड़कर या कद्दूकस करके डालेंगे। गैस को मध्यम से कम रखते हुए लगातार चलाते हुए भूनेंगे। जब मावा का रंग थोड़ा सा चेंज हो जाएगा तब हम इसमें नारियल का बुरादा, इलायची पाउडर, बारीक कटा बादाम और पीसी हुई चीनी डाल कर अच्छे से मिलाएंगे। गैस बंद कर देंगे। हमारे स्टफिंग तैयार है। इसे ठंडा होने देंगे।

- स्टेप 4

अब हम इसकी चाशनी बनाएंगे। इसके लिए हम एक बड़े भगोने में चीनी और इतनी ही मात्रा में पानी डालकर गैस पर चढ़ाएंगे। चीनी के घुलने तक इसे पकाएंगे। इसके बाद हम इसे कुछ देर और पकाएंगे जब तक की चाशनी एक तार की ना हो जाए।

- स्टेप 5

चाशनी चेक करने के लिए एक प्लेट में हम एक दो बूँद चाशनी डालेंगे। इसे उंगली में लगाएंगे और अंगूठे से चिपका कर देखेंगे तार बन रहा है कि नहीं। यदि एक तार बन रहा होगा तो हमारी चाशनी तैयार है। गैस बंद कर देंगे और चाशनी को ढक देंगे जिससे यह ठंडी ना हो।

- स्टेप 6

अब हम आटे को एक बार अच्छे से मसाला लेंगे और इसकी छोटी-छोटी पूरी के जैसी लोई बना लेंगे। अब हम इसे बेल लेंगे। हमें पूरी को ना ज्यादा पतली बेलना है, ना ज्यादा मोटी जैसा हम पूरी के लिए बेलते हैं बिल्कुल वैसा ही बेलना है।

- स्टेप 7

अब हम इसके बीच में एक चम्मच स्टफिंग रखेंगे और इसके किनारे पर चारों तरफ पानी लगाएंगे और चित्र अनुसार इसे फोल्ड कर लेंगे। अब हम इसकी सेंटर में एक लौंग लगा देंगे। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। इसी प्रकार से हम सभी लौंगलत्ता बनाकर तैयार कर लेंगे।

- स्टेप 8

लौंगलत्ता को हम एक सूती कपड़े को पानी से भीगो कर और अच्छे से निचोड़ कर उस कपड़े के ऊपर रखेंगे और उसी प्रकार के कपडे से ढक देंगे जिससे कि लौंगलत्ता सूखे नहीं। ढक कर नहीं रखने से लौंगलत्ता के ऊपर पापड़ी सी जैम जाती है और तलते समय यह बिखरती है।

- स्टेप 9

अब हम एक कढ़ाई में वेजिटेबल ऑयल गर्म करेंगे। तेल जब मध्यम गरम हो जाए तब हम इसमें लौंगलत्ता डालेंगे। आँच को मध्यम से कम रखते हुए लौंगलत्ता को लाल होने तक तल लेंगे। इसी प्रकार से हम सभी लौंगलत्ता तल कर तैयार कर लेंगे।

- स्टेप 10

अब हम तली हुई लौंगलत्ता को हल्के गर्म चाशनी में डूबाएंगे और 1 से 2 मिनट के लिए इसमें रहने देंगे, जिससे कि चाशनी मिठाई के अंदर तक चली जाए। अब हम इसे किसी चलनी पर निकाल लेंगे जिससे कि इसके अतिरिक्त चाशनी निकल जाए।

- स्टेप 11

अब हम इसे किसी थाली में निकाल लेंगे और एक दो घंटा खुले में ही रहने देंगे जिससे यह सूख जाए। एक-दो घंटे बाद हम इसे किसी एयर टाइट कंटेनर में स्टोर कर लेंगे और जब भी मन करे इसके लाजवाब स्वाद का आनंद लेंगे। बाहर रखकर एक हफ्ते तक आप इसे इस्तेमाल में ला सकते हैं और फ्रिज में रख कर यह 15 से 20 दिन तक खाया जा सकता है।

- स्टेप 12

लौंगलत्ता बनाते समय हमें एक दो बातों का ध्यान रखना होता है जैसे कि हमें इसे बहुत अच्छे से चिपकाना होता है इसके लिए हम पानी का इस्तेमाल करते हैं।

- स्टेप 13

लौंगलत्ता बाहर से एकदम कुरकुरी और अंदर से रस भरी होती है। इसमें लौंग लगा होने से इसमें लौंग का सुवासित और चर चरा स्वाद इस मिठाई को बाकी मिठाइयों से अलग बनाता है। एक बार भी आप लौंगलत्ता बनाना ट्राई करे।

पूनम पांडे की फर्जी मौत को पब्लिसिटी स्टंट करार देते हुए बोलीं उर्वशी ढोलकिया, यह घिनौना है

उर्वशी ढोलकिया ने कंट्रोवर्शियल एक्ट्रेस पूनम पांडे की फर्जी मौत की घोषणा पर कड़ा विरोध जताया और इसे पब्लिसिटी स्टंट करार दिया है। उन्होंने कहा कि इंडस्ट्री में एडवरटाइजिंग और मार्केटिंग का यह सबसे निचला रूप है। शुक्रवार की सुबह, पांडे के ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर सर्वाइकल कैंसर से उनकी मौत की घोषणा करते हुए एक पोस्ट शेयर की गई थी। अब, शनिवार को पूनम ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया है, जिसमें कहा गया है कि उनकी मौत की खबर झूठी है। वह जिंदा हैं। ये सब उन्होंने सर्वाइकल कैंसर के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए किया था। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए, 'कसौटी जिंदगी की' फेम एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर कहा, "यह इंडस्ट्री में एडवरटाइजिंग और मार्केटिंग का सबसे निचला रूप है! हां, सर्वाइकल कैंसर पर बात करना और जागरुकता फैलाना महत्वपूर्ण है, लेकिन इस तरीके का पब्लिसिटी स्टंट बिल्कुल गलत था। घिनौना है!!" वर्कफ्रंट की बात करें तो, उर्वशी ने हाल ही में सेलिब्रिटी डांस रियलिटी शो 'झलक दिखला जा 11' में भाग लिया।

पूनम पांडे हो गईं परेशान, कहा- मुझे मार डालो, मुझे सूली पर चढ़ा दो...

सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरुक करने के लिए अपनी 'मौत' की फर्जी खबर फैलाने को लेकर आलोचना का शिकार हो रही मॉडल और एक्ट्रेस पूनम पांडे ने एक बार फिर इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया है और कहा मुझे मार डालो, मुझे सूली पर चढ़ा दो, मुझसे नफरत करो, लेकिन, जिसे तुम प्यार करते हो, उसे बचाओ। श्बांग नाम की मार्केटिंग एजेंसी, जो पांडे के साथ मिलकर इस अभियान को चला रही थी, ने भी माफी जारी करते हुए कहा, हां, हम हाउटरफ्लाई के साथ मिलकर सर्वाइकल कैंसर के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए पूनम पांडे की पहल में शामिल थे। शुरूआत करने के लिए हम दिल से माफी मांगना चाहेंगे। विशेष रूप से उन लोगों के प्रति जो किसी भी प्रकार के कैंसर की कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं या उनके प्रियजन कर रहे हैं।

हाउटरफ्लाई एक लाइफस्टाइल और एंटरटेनमेंट पोर्टल है, जो मिलेनियल विमेन को लक्षित करता है। नाटकीय घोषणा को समझाते हुए, जिसे कई लोगों ने सस्ते पीआर स्टंट के रूप में देखा, पांडे की एजेंसी द्वारा जारी बयान में कहा गया, हमारा एक्शन एकमात्र मिशन था कि सर्वाइकल कैंसर के बारे में जागरुकता बढ़ाना। साल 2022 में भारत में 1,23,907 सर्वाइकल कैंसर के केस और 77,348 मौतें दर्ज की गई।

ब्रेस्ट कैंसर के बाद सर्वाइकल कैंसर भारत में मध्यम आयु वर्ग की महिलाओं को प्रभावित करने वाली दूसरी सबसे ज्यादा घातक बीमारी है। आप में से बहुत से लोग अनजान हो सकते हैं, लेकिन, पूनम की अपनी मां ने कैंसर से बहादुरी से लड़ाई लड़ी है। इतने करीब से इसे देखने और पर्सनल लाइफ में इस तरह की बीमारी से लड़ने की चुनौतियों से गुजरने के बाद पूनम रोकथाम के महत्व और जागरुकता की गंभीरता को समझती हैं। खासकर जब वैक्सीन मौजूद हो। यह दावा करते हुए निष्कर्ष निकाला गया,इस देश के इतिहास में यह पहली बार है कि 'सर्वाइकल कैंसर' शब्द 1,000 से ज्यादा हेडलाइन में है। यह दोहराते हुए कि इस पहल के कारण जिन लोगों को ठेस पहुंची है, उनसे वह माफी मांगती है, एजेंसी ने कहा, "हम समझते हैं कि हमारे तरीकों ने अप्रोच के बारे में बहस छेड़ दी होगी। हमें किसी भी परेशानी के लिए खेद है, लेकिन अगर इस कदम के बाद बहुत जरूरी जागरुकता फैलती है और मौतों को रोका जा सकता है, तो ये इसका वास्तविक प्रभाव होगा।

TARIFF

प्रिय पाठकों,मित्रो

आप अपने संस्थान की सूचनाएं विज्ञापन अपने ईष्ट मित्रो के साथ बिहार सहित हिंदी भाषी राज्यों तक सस्ते दर पर पहुंचा सकते हैं उभरता बिहार टीम

विज्ञापन दर

1.	कवर पेज	पट्टी	:	10,000
2.	कवर इन साइड	कलर फूल पेज	:	25,000
	हाफ कलर पेज	कलर	:	13,000
	एक चौथाई	कलर पेज	:	7,000
3.	बैक कवर	फूल पेज कलर	:	30,000
	बैक कवर	कलर हाफ पेज	:	17,000
4.	बैक इन साइड	फूल पेज कलर	:	20,000
		हाफ पेज कलर	:	11,000
		एक चौथाई कलर	:	6,000
5.	श्याम श्वेत	फूल पेज	:	15,000
		हाफ पेज	:	8,000
		एक चौथाई	:	4,000
6.	मिडिल कलर फूल	2 पेज	:	40,000
	श्याम श्वेत	फूल 2 पेज मिडिल	:	30,000
7.	विजिटिंग/शुभकामना	कलर	:	2,500
		श्याम स्वेत	:	2000
8.	फोटो	स्टैंड एलोन	:	5000
9.		टिकट साईज	:	1,000

सुझाव

एक वर्ष हेतु विज्ञापन बुकिंग पर 25 %प्रतिशत की छूट,6 माह की बुकिंग पर 20% प्रतिशत एवम तीन माह की बुकिंग पर 15 %प्रतिशत की छूट ये सभी छूट अग्रिम रशि जमा करने पर ही दिया जा सकता है।

FORD HOSPITAL, PATNA

A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital

PATNA

A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar

उत्कृष्ठ एवं अपनत्व की अनुभूति

Dr. Santosh Kr.

Dr. B. B. Bharti

Dr. Arun Kumar

हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम

2nd Multi Speciality NABH Certified Hospital of Bihar

Best Promising Multi Speciality Hospital 2018 Bihar.

फोर्ड हॉस्पीटल में उपलब्ध सेवाएं

क्लीनिकल सर्विसेस

- कार्डियोलॉजी
- क्रिटीकल केयर
- न्यूरोलॉजी
- स्पाईन सर्जरी
- नेफ्रोलॉजी एवं डायलेसिस
- ऑर्थोपेडिक एवं ट्रॉमा
- ओब्स एवं गॉबनेकोलौजी
- पेडिएट्रिक्स
- पेडिएट्रिक सर्जरी
- साइचिरेट्री एवं साइकोलॉजी
- रेस्पिरेट्री मेडिसिन
- यूरोलॉजी
- सर्जिकल ऑन्कोलौजी

Empaneelled with CGHS, ECR, CISF, NTPS, Airport Authority, Power Grid & other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS

New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline ; 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org